BNHN301AET

आधुनिक हिन्दी की विधाएँ

एन ई पी - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

भारतीय भाषा हिन्दी (ILH-1)

बी.ए. / बी. कॉम.

(तृतीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

Course : Adhunik Hindi Ki Vidhaen
First Edition : August 2026
Copies : 1000
Price : 130/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE , MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE, MANUU

Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU

Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE, MANUU

Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU

Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU

Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education
Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU
Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश		कुलपति	5
संदेश		निदेशक	6
भूमिका		पाठ्यक्रम–समन्वयक	7
क्र. सं.	**इकाई**	**लेखक**	**पृ.सं.**
1	कहानी : विधागत स्वरूप	डॉ. चंदन कुमारी	9
2	पंच परमेश्वर (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण	डॉ. चंदन कुमारी	24
3	एकांकी : विधागत स्वरूप	डॉ. सुषमा देवी	40
4	भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर) : एक विश्लेषण	डॉ. सुषमा देवी	56
5	रेखाचित्र : विधागत स्वरूप	प्रो. गोपाल शर्मा	71
6	भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण	प्रो. गोपाल शर्मा	86
7	व्यंग्य : विधागत स्वरूप	डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया	101
8	सदाचार का ताबीज़ (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण	डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया	116
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		231

लेखक विविरण

डॉ. चंदन कुमारी, पूर्व प्राध्यापक, हिंदी विभाग, भवन्स श्री ए. के. दोषी महिला कॉलेज, जामनगर	Dr. Chandan Kumari, Former Lecturer, Dept. of Hindi, Bhavans Shree A. K. Doshi Mahila College, Jamnagar
डॉ. सुषमा देवी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी भाषा, साहित्य एवं मानविकी संकाय, नालंदा विश्वविद्यालय राजगीर, बिहार	Dr. Sushma Devi, Assistant Professor, School of Languages and Literature/Humanities, Nalanda University, Rajgir, Bihar
प्रो. गोपाल शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	Prof. Gopal Sharma, Former Professor and Head, Dept. of Linguistics, Araba Minch University, Ethiopia
डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया, प्राध्यापक (हिन्दी), महात्मा गांधी सरकारी कॉलेज, मायाबंदर (अंडमान निकोबार)	Dr. N. Lakshmipriya, Asst. Prof., Mahatma Gandhi Govt College, Maya Bandar (Adaman Nicobar)

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) : श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

'आधुनिक हिन्दी की विधाएँ' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बी.ए. (हिन्दी) तृतीय सत्र के भारतीय भाषा (एम आई एल) के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का उदय आश्चर्यजनक रूप से उस अवधि के साथ मेल खाता है, जब भारत में ब्रिटिश राज को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से गंभीर वैचारिक मंथन चल रहा था। गुलामी के कारणों का विश्लेषण करके उनका निराकरण करने के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए समर्पित पुनर्जागरण आंदोलन इसी मंथन का परिणाम था। इसी ने 1857 के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम की पीठिका तैयार की। यही समय देश में शैक्षणिक और वैज्ञानिक आधुनिक बोध के आगमन का समय था। इसे प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से विशेष गति मिली। मध्यकाल तक पुस्तकों की प्रतियाँ तैयार करना एक दुष्कर कार्य था। इसलिए मौखिक याद रखे जाने के उद्देश्य से साहित्य मुख्य रूप से पद्य अथवा कविता के रूप में ही रचा जाता था। अब पुस्तकों और पत्रिकाओं का सुगमतापूर्वक बड़ी संख्या में प्रकाशन और वितरण होने लगा, तो कविता के स्थान पर गद्य लेखन को अनुकूल वातावरण मिला। नवजागरण आंदोलन तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद तेज़ गति से नए भारत के निर्माण की चुनौतियों ने साहित्यकारों के समक्ष गद्य की अनेक अलग-अलग विधाओं में साहित्य सृजन के नित्य नए अवसर प्रस्तुत किए। परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में नाटक और निबंध जैसी प्रारंभिक गद्य विधाओं से आगे बढ़कर कहानी, उपन्यास, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, यात्रावृत्त, पत्र साहित्य और व्यंग्य जैसी अनेक नई विधाओं का उद्भव और विकास हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक में विशेष रूप में कहानी, एकांकी, रेखाचित्र और व्यंग्य इन चार आधुनिक गद्य विधाओं के विधागत स्वरूप का परिचय देते हुए इनकी एक-एक उत्कृष्ट रचना का तात्विक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इससे छात्रगण जहाँ एक ओर आधुनिक हिन्दी गद्य की बहुमुखी प्रगति से परिचित होंगे, वहीं इस साहित्य में निहित सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों, सामाजिक परिवर्तन की आहटों तथा आधुनिक युग के मूल्य बोध से भी अवगत हो सकेंगे। इस सामग्री के अध्ययन से उनके बौद्धिक और नैतिक स्तर का विकास भी होगा। प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री को छात्रों की सुविधा के लिए कुल 8 इकाइयों के रूप में सरल, सहज और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफताब आलम बेग
पाठ्यक्रम समन्वयक

आधुनिक हिन्दी की विधाएँ

इकाई 1 : कहानी : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देश्य

1.2 मूल पाठ : कहानी : विधागत स्वरूप

1.2.1 परिभाषा : पाश्चात्य दृष्टि

1.2.2 परिभाषा : भारतीय दृष्टि

1.2.3 कहानी कला के तत्व

1.2.4 कहानी : स्वरूप और प्रकार

1.3 पाठ सार

1.4 पाठ की उपलब्धियाँ

1.5 शब्द संपदा

1.6 परीक्षार्थ प्रश्न

1.7 पठनीय पुस्तकें

1.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! कहानी मानव जीवन का जीवंत दस्तावेज है। मानव की उत्पत्ति के साथ ही दुनिया में कहानी का भी जन्म हुआ होगा। जीवन का हर क्षण कुछ कहता है, जो वह कहता है, वह एक कहानी बन जाती है। कहानियों का स्वरूप अपने युग की प्रवृत्ति और उस युग में पलते मानव के संस्कारों से निश्चित होता है, या कहें उससे प्रभावित होता है। जिन प्राचीन कहानियों में तिलिस्म, जादू, इतिहास, उपदेश, स्वर्ग-नरक और दैवीय कल्पना इत्यादि तत्वों की प्रमुखता दिखाई देती है, उन कहानियों के लेखन काल का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उस युग के मानव की स्वाभाविक वृत्तियाँ ऐसी ही थीं। यथार्थ और कल्पना समन्वित, हमारे संस्कार ही लेखन में प्रस्फुटित होते हैं। लोक कथा और जातक कथा आरंभिक कहानियाँ हैं। आधुनिक काल में कहानियाँ वर्तमान के ठोस यथार्थ को आधार बनाकर लिखी जाने लगीं। प्रस्तुत इकाई में हम कहानी कला के विविध पक्षों पर चर्चा करेंगे।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- कहानी के अर्थ और परिभाषा को समझ सकेंगे।
- कहानी विधा की विशेषताओं को आत्मसात कर सकेंगे।
- कहानी कला के तत्वों का विवेचन कर सकेंगे।
- कहानी के स्वरूप के विभिन्न पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

1.2 मूल पाठ : कहानी : विधागत स्वरूप

'कहानी' हिंदी गद्य की केंद्रीय विधा है। यह कथा साहित्य के स्वरूप के विकास के साथ हिंदी भाषा के विकास की भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हिंदी में आधुनिक अर्थ में 'कहानी' के व्यवहार के संबंध में डॉ. गोपाल राय का यह मत विचारणीय है कि – "संस्कृत साहित्य में 'कहानी' का एक अतिप्राचीन पर्याय 'कथा' है, जिसके किंचित् अर्थान्तरों के साथ, 'आख्यान', 'उपाख्यान', 'आख्यायिका', 'वृत्त', 'इतिवृत्त', 'गाथा', 'इतिहास', 'पुराण', 'वार्ता', 'चरित' आदि रूप प्रचलित हैं। 'कथा' शब्द ही अपभ्रंश में 'कहा' का रूप ग्रहण कर अवधी, भोजपुरी आदि भाषाओं में 'कहनी', 'कहानी' आदि पदों में बदल गया है। 'हिन्दी' में यह शब्द वस्तुतः अवधी, भोजपुरी आदि से ही आया है।" (हिंदी कहानी का इतिहास, पृष्ठ 17)

साहित्य की हर विधा के मूल में एक कहानी रहती है। व्यापक स्तर पर कथा साहित्य के दो प्रकार दिखाई देते हैं - उपन्यास और कहानी। उपन्यास की तुलना में कहानी की कथावस्तु अत्यंत संक्षिप्त होती है। 'स्व' और 'पर' की अनुभूति को किसी एक दृष्टिकोण से सँजोकर, रचनाकार एक 'कहानी' बना लेता है। यह 'एकोन्मुखता और संक्षिप्तता' कहानी की विशेषता है। आकार के आधार पर कहानी और उपन्यास में जो अंतर दिखाई देता है, वह बाहरी अंतर है। व्यापक रूप में यह अंतर इन दोनों विधाओं की आत्मा के स्तर यानी इनकी मौलिक संरचना और अंतर्वस्तु का है। कहानी जीवन के एक अंश की प्रस्तुति है, पर वह अंश किसी भी कोण से अपूर्ण नहीं है, अपने आप में पूर्ण है। जीवन के किसी एक पक्ष को किसी एक दृष्टि से संपूर्णता में छूने की रचनाकार की कोशिश कहानी है। इस कोशिश की सफलता रचना से उत्पन्न होनेवाले प्रभाव में निहित रहती है। कहानी के प्रभावी या अप्रभावी होने में जिन तत्वों की अहम भूमिका होती है, वे हैं - कथावस्तु, पात्र, संवाद, वातावरण की सृष्टि, रचनाकार की भाषायी दक्षता तथा कहानी लेखन में प्रयुक्त शैली। जीवन के जिन पहलुओं को रचनाकार छूना चाहता है, उन्हें ही आधार बनाकर वह आगे बढ़ता है। उस कथानक के आसपास वह अन्य घटनाओं और पात्रों को सुनियोजित करके अनुकूल वातावरण में, कहानी का विकास करता है। रचनाकार का सृजन कर्म सोद्देश्य होता है। अपनी बात वह अपनी रचना के माध्यम से कहता है। अपनी बात कहने की

उसकी शैली संकेतात्मक होती है, जिसे पाठक अपनी चेतना के स्तर पर अनुभूत करते हुए, पाठ का मूल आशय निकालने को स्वतंत्र होता है। हर बार रचनाकार की चेतना और संवेदना उत्कृष्ट नहीं होती। हर बार कथावस्तु का चयन, विकास और निर्वाह उत्तम नहीं होता, ये स्थितियाँ किसी भी रचना की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता के लिए जिम्मेदार होती हैं। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने कहानी को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। उनकी परिभाषाएँ कहानी के स्वरूप को विस्तार से समझने में मददगार साबित होंगी।

बोध प्रश्न

- कहानी क्या है? इसकी मुख्य विशेषता क्या है?
- कहानी की सफलता और असफलता के उत्तरदायी तत्व क्या हैं?

1.2.1 परिभाषा : पाश्चात्य दृष्टि

i) कहानी रसोद्रेक करने वाली वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, और जो अपने आप में पूर्ण हो। - एडगर एलन पो

ii) कहानी किसी एकल चरित्र, एकल घटना, एकल भावना से या एकल परिस्थिति द्वारा उपयोग में लाई गई भावनाओं की शृंखला से संबंध रखती है। - ब्रांडर मैथ्यूज

iii) कहानी कहानी होनी चाहिए अर्थात उसमें घटित होने वाली घटनाओं-दुर्घटनाओं का लेखा-जोखा होना चाहिए और वह आकस्मिकता से पूर्ण हो। उसमें क्षिप्र गति के साथ अप्रत्याशित विकास हो जो कौतुहल द्वारा चरमबिन्दु और संतोषजनक अंत तक ले जाय। - सर ह्यू वालपोल

iv) कहानी जीवन की महत्वपूर्ण घटना एवं विषम परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण है। यह हमारे भीतर स्थित आधारभूत गुणों को प्रदर्शित करती है। - आर फ्रांसिस फोस्टर

v) कहानीकार हमेशा उस बिंदु को चुनने की प्रक्रिया में रहता है, जहाँ से वह मानव जीवन तक पहुँच सके। हर चुनाव के साथ या तो नया शिल्प प्राप्त हो सकता है या असफलता हाथ लग सकती है। - कोन्नोर

vi) उत्तमपुरुष (मैं) शैली अपनाकर लिखी गई कहानियाँ अचेतन रूप से पाठक पर लेखक की आत्मप्रशंसा का प्रभाव छोड़ती हैं जबकि लेखक का उद्देश्य आत्मप्रशंसा करना नहीं होता है। - एंटोनी ट्रोलोप

vii) कहानी वह है जो लाठी की मार की तरह हृदय पर चोट करे। - गोर्की

viii) आधुनिक कहानी के खिलाफ कथानकहीनता, शिथिल संरचना आदि के जो आरोप लगाए जाते हैं, उन्हें आधुनिक कहानी के शिल्पगत नवीन परिवर्तन से जोड़कर देखना चाहिए। - ए. एल. बाडर

ix) कथा मनोरंजन मात्र नहीं है, यह संवेदनशीलता को बढ़ाती है, और आलोचनात्मक भावना को जगाती है। सभ्यता का अस्तित्व बनाए रखने के लिए, मानवीय गुणों के नवीकरण और संरक्षण के लिए यह हमारी आवश्यकता है। - मारियो वार्गास ल्योसा

बोध प्रश्न

- एडगर एलन पो ने कहानी की क्या परिभाषा दी है?
- कहानी के प्रभाव के बारे में गोर्की ने क्या कहा है?
- आपके अनुसार कहानी का क्या अर्थ है?

1.2.2 परिभाषा : भारतीय दृष्टि

i) कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। - प्रेमचंद

ii) कहानी जीवन की प्रतिच्छाया और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है। एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती। - अज्ञेय

iii) कहानी स्वतः एक पूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करनेवाली शक्ति, केन्द्रीय घटना या घटनाओं के आवश्यक परंतु कुछ-कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान-पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतुहलपूर्ण वर्णन हो। - गुलाबराय

iv) कहानी जीवन को समय सापेक्ष चतुर्दिक अंकित न कर केवल एक क्षण में घनीभूत जीवन दृश्य दिखाने लगी है। - श्यामसुंदर दास

v) कहानीकार अनुभव संस्कारों का संयोजन कर, पात्रों द्वारा कथा को किसी चरम बिंदु तक पहुँचाने का लक्ष्य रखता है। - महादेवी वर्मा

vi) कहानी का प्रत्यक्ष कैनवास बहुत छोटा और साधारण हो सकता है, पर जिस परोक्ष की ओर उसका संकेत होता है, वह छोटा साधारण नहीं होता है। - मोहन राकेश

vii) कहानी तो एक जीवंत अस्तित्व है जो अपना जन्म आप ले लेती है। कहानियों में कोई एक बात पूरी ही नहीं पड़ती। कई-कई बातें मिलकर एक बात बनती है। कई घटनाएँ मिलकर एक घटना बनती है। कई शब्द मिलकर एक शब्द बनता है। इसलिए कहानी लिखना मुझे कठिन लगता है। - कमलेश्वर

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के अनुसार कहानी किसे कहा जाता है?
- गुलाबराय ने कहानी की क्या परिभाषा दी है?
- कमलेशवर के अनुसार कहानी क्या है?

1.2.4 कहानी कला के तत्व

कहानी कला के तत्व कहानी की समीक्षा के प्रतिमान हैं। इसके अंतर्गत कहानी में जिन तत्वों को परखा जाता है, वे तत्व हैं - कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, उद्देश्य और भाषा-शैली। इन्हीं तत्वों की कसौटी पर कहानी का मूल्यांकन किया जाता है।

भाव और विचार तत्व भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भाव और विचार कहानी के मौलिक ढाँचे में निहित होते हैं, इसलिए कहानी के तत्वों में इनका उल्लेख अलग से नहीं किया जाता है। 'विचार और भाव' कहानी के कथानक को जीवन देते हैं, उसकी उत्पत्ति का आधार यही हैं, इसलिए विचार और भाव के बिना कहानी संभाव ही नहीं है।

1. कथावस्तु

कहानी का विकास धीरे-धीरे होता है। इस विकास का एक क्रम होता है, जिसके चार पायदान हैं - आरंभ, आरोह, चरम स्थिति और अवरोह। अपने ही अंतर्जगत या बाह्यजगत से जिस कथावस्तु को कहानीकार बीज रूप में ग्रहण करता है, वही उसकी कहानी का आधार होता है। इसके विकास की गति और इसका समन्वित प्रभाव लेखकीय कल्पना और भाषागत कौशल के साथ घटनाओं के प्रयोग की दक्षता पर निर्भर करता है। इन घटनाओं का जुड़ाव केवल बाह्य स्थूल संसार से नहीं होता है। बाहर घटती हुई अप्रभावी दिखाई देनेवाली घटनाएँ भी किसी के मन को गहराई से छूने में सक्षम होती हैं। इस कोटि की रचनाएँ जिनमें मुख्य रूप से मानसिक अंतर्द्वंद्व का उद्घाटन हो, या जिनका केंद्रीय सत्य मनोजगत की तार्किकता की अपेक्षा रखता हो, वे रचनाएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई मानी जाती हैं। कथानक के रूप में मनोविश्लेषण से इतर विषय का भी चयन किया जाता है, जैसे - ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक,

राजनीतिक, सामाजिक, साहसिक, आंचलिक इत्यादि। कहानी में इन विषयों का सूक्ष्मता से निर्वाह किया जाता है। याद रखने वाली बात यह है कि संसार में 'घटित होनेवाली घटनाएँ, मनुष्य की बाह्य चेष्टा और उसकी मनःस्थिति' से कथानक का केंद्र निर्मित होता है।

छात्रो! अब हम कहानी कला के तत्व के रूप में कथावस्तु के विकास क्रम की अवस्थाओं का अध्ययन करेंगे।

- **आरंभ :** कथानक के विकास की पहली अवस्था है 'आरंभ'। इसके अंतर्गत कहानी के आरंभ में ही पात्र-परिचय के द्वारा कहानी के कथा सूत्र से पाठक को अवगत करा दिया जाता है। कहानी के आरंभ का मूल बिंदु है - 'कौतुहल या जिज्ञासा की उत्पत्ति'। कहानी की शुरूआत किसी वातावरण के चित्रण से, पात्रों के परिचय या उनके परस्पर संवाद से की जा सकती है, पर उस आरंभ करने की प्रक्रिया में कौतुहल को उत्पन्न करने की शक्ति होनी चाहिए ।
- **आरोह :** यह कहानी के विकास का दूसरा सोपान है। पात्र परिचय की आवश्यक औपचारिकता के बाद अब रचनाकार का सारा ध्यान उन पात्रों के मनोविकास और उनके अनुकूल घटनाक्रम के सहज संयोजन पर रहता है। पात्रों की मनोगति और अन्य तथ्यों और घटनाओं की तारतम्यता से कहानी के प्रभाव पर असर पड़ता है। यह पाठक की उत्सुकता को बढा भी सकता है या उसमें अरुचि भी जगा सकता है।
- **चरम स्थिति :** चरम यानी सबसे ऊपर। इस स्थिति में कहानी के भीतर जो कौतुहल कारक तत्व हैं वे अपनी सर्वोच्च ऊंचाई पर होते हैं। कहानी के अंतिम मोड़ के प्रति उत्सुकता का चरम जब कहानी में दिखाई दे तब माना जाता है कि कहानी की स्थिति अपने अंत की ओर अग्रसर है।
- **अवरोह :** यह कहानी का अंतिम चरण है। इस चरण में पाठक कहानी के अंत को पा लेता है। यहाँ से कहानी का प्रतिपाद्य निकलता है। उस प्रतिपाद्य का प्रभाव कहानी की उत्कृष्टता का अंतिम मापदंड होता है। जैसे कहानी का आरंभ कौतुहल वर्धक होना चाहिए वैसे ही उसका अंत निर्णायक होना चाहिए। यह प्रायः संक्षिप्त रहता है और किसी न किसी मर्म का उद्घाटन करनेवाला होता है।

2. चरित्र चित्रण

कहानी की कला का सौन्दर्य बरकरार रखने के लिए रचनाकार पात्रों और घटनाओं का समायोजन करता है। इस समायोजन से पात्रों के क्रियाकलापों का संकेत मिलता है, जो चरित्र चित्रण का एक आधार बनता है। वास्तविक जीवन में किसी मनुष्य के चरित्र का संकेत भी अन्य व्यक्तियों के साथ उसके व्यवहार एवं क्रियाकलाप से ही मिलता है। कहानी में भी चरित्र चित्रण

के मुख्य आधार के रूप में यही तत्व काम करते हैं। 'जिस पात्र का चरित्र चित्रण करना है, उसका संबंध कहानी के अन्य पात्रों के साथ कैसा है? कहानी में घट रही घटनाओं एवं उससे प्रभावित व्यक्तियों के प्रति उसका रुख कैसा है? उस पात्र के बाह्य जीवन एवं उसके भाव संसार का पारस्परिक संबंध कैसा है?' - इन घटकों की छानबीन करके किसी भी पात्र के चरित्र का आसानी से चित्रण किया जा सकता है। इसके सूत्र संकेत रूप में कहानी में ही छिपे रहते हैं।

3. कथोपकथन

कथोपकथन यानी संवाद। यह मौन भी हो सकता है। चित्रमयी भाषा प्रयोग द्वारा भी इसे दिखाया जा सकता है। कहानी के स्वाभाविक विकास के लिए कथोपकथन का निर्वाह पात्र, वातावरण और देशकाल के अनुरूप ही किया जाता है। पात्रों के मध्य संवाद योजना न अति संक्षिप्त होनी चाहिए और न ही बहुत विस्तृत। संवादों का स्वरूप कहानी की कथावस्तु के अनुसार तय किया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रयुक्त संवादों में प्रभाव उत्पन्न करने की पर्याप्त क्षमता हो।

4. वातावरण

कहानी में पात्र के इर्द-गिर्द निर्मित वातावरण दो तरह का होता है। एक, यह भौतिक जगत: और दूसरा, पात्र का मानसिक जगत। भौतिक वातावरण के अंतर्गत पात्रों से संबंधित स्थानों, घटनाओं और प्राकृतिक परिवेश का सजीव और स्पष्ट वर्णन किया जाता है। यह वर्णन कहानी के विषय, स्थान और समय के अनुकूल किया जाता है। पात्र की मानसिक अवस्था के चित्रण में कथानक का मर्म उभरता है। वातावरण और देशकाल की उपयुक्त सृष्टि से रस निष्पत्ति की संभावना बढ़ती है।

1. उद्देश्य

कहानियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं होता। इनकी केंद्रीय संवेदना कुछ मार्मिक सत्यों का उद्घाटन करके हमारे मन को उद्वेलित कर जाती है। किन्तु केवल यह मानसिक उद्वेलन कहानी का उद्देश्य नहीं है। बल्कि कहानी का परम उद्देश्य जीवन के सत्य से सांकेतिक साक्षात्कार कराना होता है।

6. भाषा-शैली

कहानी लिखने के लिए प्रयोग की गई विशेष पद्धति कहानी की शैली कहलाती है। शैली के दो प्रमुख तत्व हैं - भाषा पक्ष और शिल्प पक्ष। किसी शैली विशेष में कहानी लिखने के लिए जो खास टेकनीक अपनाई जाती है, वह कहानी का शिल्प है। कहानी लेखन की कई व्यवहृत

शैलियाँ हैं, जैसे - वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, नाटकीय, पूर्व दीप्ति शैली, काव्यात्मक, व्यंग्यात्मक इत्यादि। इसके अलावा शैली के स्तर पर रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी एवं पत्र जैसी अन्य गद्य विधाएँ भी कहानी के स्वरूप में घुली-मिली देखने को मिल जाती हैं।

- **वर्णनात्मक शैली :** कहानी का मूल भाव और पात्रों के चरित्र के गुण-अवगुण, इस शैली में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। इसके अंतर्गत पात्रों के बाह्य रूपों, विषम मनोभावों एवं क्रियाकलापों के विवरण के साथ घटनाओं का सरल संयोजन विवरण प्रधान होता है।
- **संवादात्मक शैली :** यह शैली कथानक का स्वरूप स्पष्ट करने में संवादों की उपयोगिता को रेखांकित करती है। प्रभावोत्पादक बातचीत से पात्रों का चरित्र, उनका परिवेश सामान्यतः उजागर हो जाता है। यह बातचीत कहानी के उद्देश्य से भी परिचित करा जाती है।
- **आत्मकथात्मक शैली :** आत्मकथा यानी 'अपनी कथा अपने आप किसी को सुनाना।' इसके कहानी में प्रयोग के कुछ तरीके हो सकते हैं, जैसे - (i) शुरू से अंत तक कहानी का मुख्य पात्र अपनी पूरी कहानी स्वयं कह दे। (ii) कहानी के सभी पात्र अपनी-अपनी कहानी कहें और उनकी कहानियों से कोई सार्थक विचार, दर्शन या संवेदना प्रकट हो। (iii) कहानीकार स्वयं कहानी में उपस्थित रहकर मैं-शैली में पूरी कहानी कहे।
- **व्यंग्यात्मक शैली :** इसमें साधारण शब्दों में निहित अर्थ गांभीर्य के द्वारा हँसी-मजाक का वातावरण भी रचा जाता है और गंभीर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक समस्याओं को भी प्रभावशाली तरीके से उद्घाटित किया जाता है।
- **काव्यात्मक शैली :** 'गद्य लिखते हुए कवित्व शक्ति का प्रयोग कर काव्यात्मक गद्य लिखना' काव्यात्मक शैली है। गद्य के कलात्मक सौंदर्य के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है।
- **पूर्व दीप्ति शैली :** इसका प्रयोग वर्णनात्मक शैली के प्रयोग से कथानक में उत्पन्न एकरसता को भंग करने के लिए किया जाता है। किसी घटना से प्रभावित होकर या किसी विशेष प्रसंग के संयोजन की आवश्यकता के अनुरूप पात्र अपने अतीत को याद करते हुए उसे अपने वर्तमान से जोड़कर देखने लगता है। कथानक में इस तरह के संयोजन को पूर्व दीप्ति शैली कहते हैं।
- **चित्रात्मक शैली :** बिंब, अलंकार और प्रतीक का प्रयोग करते हुए रचनाकार अपनी रचना में दृश्यों और पात्रों का शब्दचित्र खींचता है। उसकी प्रखर अभिव्यंजना शक्ति और कलात्मक कौशल से ये सब आँखों के सामने नाच उठते हैं।

शैली का प्रयोग कहानी के भाव पक्ष को उन्नत करता है। तो, कथानक की भाषा उसकी अभिव्यक्ति को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती है। सहज और सरल भाषा की रचनाएँ व्यापक प्रसार पाती हैं। कहानी की भाषा उसकी विषयवस्तु के अनुरूप होनी चाहिए। इस लक्ष्य को साधने के लिए कहानी के परिवेश, समय, उसमें संयोजित घटनाएँ, पात्रों के व्यक्तित्व एवं उनके क्रियाकलापों का पूर्ण अध्ययन आवश्यक है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया भाषा प्रयोग कहानी की सजीवता और स्वाभाविकता बनाए रखता है।

भाषा संदर्भगर्भित हो - यानी कि कहानी के बुने गए संदर्भ को यदि अन्य भाषाओं या अन्य विषयों के शब्द व्यंजित कर रहे हैं तो उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, पर इस प्रयोग में प्रवृत्ति हिंदी की ही हो, अन्यथा सम्प्रेषण में बाधा आ सकती है। इसी के तहत अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं के शब्द, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली - ये सभी हिंदी साहित्य की कहानी जैसी विधाओं में देखने को मिल जाते हैं।

भारत की सांस्कृतिक अस्मिता विविधता भरी है। इस अस्मिता को साहित्य में जिंदा रखने के उद्देश्य से लोकभाषा में प्रयुक्त लोक बोली का प्रयोग किया जाता है। संभव है कि रचनाकार द्वारा यह प्रयोग उसके सहज भावावेग में अनायास ही हो जाता हो। इसे संरक्षित करने का सायास प्रयत्न आवश्यक है। 'मुहावरे और लोकोक्तियाँ' भाषा प्रयोग को अधिक समर्थता प्रदान करते हैं। कहानी की अभिव्यंजना को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग से कम शब्दों में ही गंभीर अर्थ की व्यंजना हो जाती है।

बोध प्रश्न

- कहानी कला के तत्व क्या-क्या हैं?
- कथावस्तु के विकास की स्थितियों के नाम बताइए।
- कहानी में वातावरण का क्या महत्व है?
- कहानीकार के कहानी लिखने का परम उद्देश्य क्या होना चाहिए?
- कथोपकथन से क्या अभिप्राय है?
- शैली के किन्हीं 4 प्रकारों के नाम लिखिए।
- पूर्व दीप्ति शैली से क्या अभिप्राय है?
- आत्मकथात्मक के कहानी में प्रयोग के क्या तरीके हो सकते हैं?

1.2.4 कहानी : स्वरूप और प्रकार

साहित्य की विधा के रूप में विकसित होने से पहले कहानी का अस्तित्व मनुष्य की जिज्ञासा वृत्ति को संतुष्ट करने के लिए आपस में कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत से जुड़ा हुआ है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं से कहानी के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। उसका विश्लेषण करते हुए हम सकते हैं कि कहानी के प्रति अपने अलग-अलग दृष्टिकोण में विद्वानों ने यथार्थ, अनुभूति और मनोविश्लेषण को ही प्रमुखता दी है। यह स्पष्ट है कि कहानी कला के छह तत्वों के आधार पर ही कहानी के स्वरूप को देखा जाता है। हिंदी के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि, "प्रेमचन्द ने 1908 में प्रकाशित अपने कहानी संग्रह सोजे वतन की भूमिका में पहली बार 'शॉर्ट स्टोरी' पद के अर्थ में 'कहानी' पद का प्रयोग किया था, पर हिंदी में आने के बाद वे अपनी कहानियों को कभी 'कहानी', कभी 'आख्यायिका' और कभी 'गल्प' कहते रहे। उनकी यह दुविधा उनके जीवन भर बनी रही, जिसका प्रमाण 1936 में प्रकाशित 'मानसरोवर' की भूमिका है। पर शुक्ल जी की स्वीकृति की मुहर लगने के बाद चौथे दशक में 'शॉर्ट स्टोरी' के लिए 'छोटी कहानी' (संक्षेप में 'कहानी') पद आलोचकों और कहानीकारों, दोनो के बीच, लगभग मान्य हो गया।" (हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृष्ठ 18)

कहानी कला के तत्वों की प्रमुखता के आधार पर कहानी का स्वरूपगत वर्गीकरण चार रूपों में किया जाता है, वे हैं - कथानक या घटना प्रधान कहानी, चरित्र प्रधान कहानी, देशकाल या वातावरण प्रधान एवं भाव प्रधान कहानी। कथानक प्रधान कहानी के अंतर्गत घटना प्रधान और कार्य प्रधान कहानी आती है। ऐसी कहानी को कला की दृष्टि से साधारण कोटि का माना जाता है। इनमें घटनाओं का रुचिकर संयोजन किया जाता है। यह कौतुहल बढ़ानेवाला, चमत्कार दिखानेवाला और मनोरंजक होता है। यदि इनमें मनोविश्लेषण के लिए अवसर मौजूद रहता है और इनके केंद्र में कोई सूक्ष्म भाव या विचार पल रहा होता है, तब इन्हें श्रेष्ठ कहा जाता है। आदर्शवादी, जासूसी और तिलस्मी कहानियाँ इसी कोटि की हैं। चरित्र प्रधान कहानी में लेखक मनोवैज्ञानिक रीति से पात्रों के चरित्र निरूपण को प्रमुखता देता है। यहाँ घटनाएँ गौण हो जाती हैं और उनसे निकलने वाला प्रभाव जो पात्रों को मानसिक अंतर्द्वंद्व की स्थिति में पहुँचाता है, वही प्रधान रहता है। मनोविश्लेषण इस तरह की कहानियों की विशेषता है। वातावरण प्रधान कहानी में वातावरण और देशकाल की पुरजोर उपस्थिति रहती है। ऐतिहासिक कहानियाँ इसी कोटि में आती हैं। वर्तमान में कहानी के जरिए किसी भी युग और उसकी घटनाओं से परिचय किया जा सकता है। इन कहानियों को प्रभावी बनाने में वातावरण के साथ-साथ कहानी की संवाद योजना का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। भावप्रधान कहानी

में कथानक का विकास किसी केंद्रीय भाव के इर्द-गिर्द किया जाता है। इसके लिए प्रतीकात्मक चरित्रों और वातावरण की सृष्टि की जाती है। लघुकथा हिंदी कहानी साहित्य का सबसे नया रूप है। इसमें भाव और विचार की उपस्थिति प्राथमिक होती है। इसका कथानक अतिसंक्षिप्त होता है। इसकी रचना में चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है।

कहानी के वर्गीकरण के अन्य आधार भी हैं, जैसे - लेखन शैली, चयनित विषय, लेखन का लक्ष्य और विविध कालों में कहानी के स्वरूपगत विकास का रेखांकन। लेखन शैली का पूर्व परिचय दिया जा चुका है। विषय वस्तु के आधार पर कहानी को ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, मनोविश्लेषणात्मक, आंचलिक इत्यादि रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। रचना लक्ष्य के आधार पर इसके तीन पारंपरिक रूप संभव हैं - आदर्शवादी, यथार्थवादी, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में कहानी के प्रवृत्तिगत विकास को यदि कहानी के वर्गीकरण का आधार बनाया जाता है तो अपने रचनाकाल के आधार पर इन कहानियों का भी युगीन वर्गीकरण किया जा सकता है।

आजादी के बाद के दौर में परिवेश बदला और बदले हुए परिवेश में लोगों की मानसिकता बदली, इससे नई परिस्थितियों ने जन्म लिया। उन नई परिस्थितियों ने नए संघर्ष, नई चुनौतियाँ और नए अवसर को जन्म दिया। इस समय की कहानियों में नई प्रवृत्ति का समावेश स्वाभाविक था। इस समय कहानी की कथावस्तु और उसका केंद्रीय भाव मुख्य रहा और शिल्प पक्ष गौण। इसे 'नई कहानी' का नाम दिया गया।

बोध प्रश्न

- तत्वों की प्रधानता के आधार पर कहानी के 4 रूप क्या हैं?
- लक्ष्य के आधार पर कहानी के तीन रूपों के नाम लिखिए।

1.3 पाठ सार

कहानी कहना और सुनना मनुष्य मात्र की सहज वृत्ति है। इसका उपयोग भी काल के अनुसार बदलता रहा है। कभी कहानी को एक बैठक में पढ़ी जा सकने वाली रचना माना गया और कभी वह उपन्यास तक के रूप में विस्तृत भी दिखाई दी। हडसन ने केवल एक भाव पर आधारित लेखन को कहानी माना। एलेरी ने इसे घुड़दौड़ के रूपक के आधार पर समझाया। प्रेमचंद ने कहानी पर विचार करते हुए कहा है कि "कहानी एक ऐसी गद्य रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथाविन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।" इस आधार पर यह कहना उचित होगा कि कहानी 'कथातत्व प्रधान' ऐसा गद्य रूप है जिसमें जीवन के किसी अंश,

एक स्थिति या तथ्य का उत्कट संवेदना के साथ स्वतःपूर्ण और प्रभावशाली चित्रण किया जाता है। वैसे कहानी के छह विधागत तत्व माने गए हैं – 1. कथानक, 2. पात्र और चरित्र चित्रण, 3. संवाद, 4. वातावरण, 5. शैली और 6. उद्देश्य। कहानी विधा के शिल्प के मूल आधार हैं – कहन प्रक्रिया का समावेश, संप्रेषणीयता, एकाग्रता और उत्सुकता। कहानी के शीर्षक का चयन भी कहानीकार के संरचना कौशल का परिचायक होता है। कथानक की प्रस्तुति ऐसी होनी चाहिए की निरंतर उत्सुकता बनी रहे। अनेक कहानीकार इसके लिए फ़्लैशबैक या पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग करते हैं। इस शैली के अनुसार कहानी घटनाचक्र के मध्य से शुरू होती है और अंत की ओर अग्रसर होती है। उसका आरंभिक अंश आवश्यकता के अनुसार बीच में प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी व्यक्ति समाज और परिवेश से जुड़े विचारों और भोगे हुए यथार्थ की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। कहानी में आभासी दुनिया के लिए भी पर्याप्त जगह है। 'जो या जैसा होना चाहिए' यह आभास है। यह यथार्थ में नहीं है पर कहानी के पन्नों पर जीवित है। वर्तमान कहानी लेखन के शिल्प और शैली में बदलाव आया है। इसमें गद्य की अन्य विधाओं (पत्र, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण) का भी समावेश हुआ है। कहानी में भाषा के स्तर पर लचीलापन बढ़ा है। कथानक कहानी की आवश्यकता है, शिल्प उसमें निहित रहता है।

आलोचकों ने हिंदी कहानी के विशाल भंडार को वस्तु, विषय, शैली और आंदोलन के आधार पर वर्गीकृत किया है। प्रेमचंद काल के तत्काल बाद कहानी को चार वर्गों में बांटा गया – 1. कथानक या घटनाप्रधान कहानी, 2. चरित्रप्रधान कहानी, 3. वातावरणप्रधान कहानी और 4. भावप्रधान कहानी। लेकिन इस वर्गीकरण को पूर्ण नहीं माना जा सकता। इसलिए विषय की दृष्टि से कहानियों को वर्गीकृत किया गया जैसे – ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, साहसिक, रोमांचक एवं जासूसी आदि। इस वर्गीकरण को भी परिपूर्ण नहीं माना जाता। अतः शैली के आधार पर भी कहानी विधा का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे – विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक और डायरी शैली की कहानियाँ। इसी प्रकार आंदोलन के आधार पर भी हिंदी कहानी का वर्गीकरण किया गया है जैसे – नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी और जनवादी कहानी आदि।

1.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. कहानी का आधार मनुष्य समाज की अपने अनुभवों, भावनाओं, विचरों और कल्पनाओं को आपस में बांटने की प्रवृत्ति में निहित है।
2. आधुनिक गद्य विधा के रूप में यथार्थ, अनुभूति और विश्लेषण कहानी विधा के मूल आधार हैं।
3. कहानी का विकास व्यक्ति और परिस्थिति के घात-प्रतिघात से होता है। इसी के साथ विभिन्न तत्व रूप ग्रहण करते चलते हैं।
4. कहानी के कथासूत्र को आगे बढ़ाने में अंतर्द्वंद्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
5. कथानक, वातावरण और पात्रों के अनुरूप भाषा के प्रयोग से कहानी की विश्वसनीयता और रोचकता में वृद्धि होती है।

1.5 शब्द संपदा

1. अंतर्द्वंद्व	= मानसिक संघर्ष
2. आंचलिक	= किसी क्षेत्र (अंचल/प्रदेश या प्रांत का एक भाग) विशेष से संबंधित
3. ऐतिहासिक	= इतिहास से संबंधित
4. घात-प्रतिघात	= संघर्ष
5. सांस्कृतिक	= संस्कृति से संबंधित। संस्कृति के तत्व हैं, आहार-विहार, मानसिक विचारों से उत्पन्न भावनाएँ और सामाजिक व्यवहार। इन तत्वों से जुड़ी विशेषताएँ सांस्कृतिक कहलाती हैं।

1.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

1.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. डॉ. गोपाल राय के अनुसार 'कहानी' शब्द मूलतः किस भाषाई स्रोत से हिंदी में आया है?

A. अंग्रेजी (Short Story का अनुवाद) **B. अवधी और भोजपुरी** C. संस्कृत D. फारस

2. एडगर एलन पो ने कहानी की परिभाषा में किस तकनीकी पक्ष पर सर्वाधिक बल दिया है?

A. एक बैठक में पढ़ा जा सकना B. पात्रों की संख्या की अधिकता

C. ऐतिहासिक तथ्यों की शुद्धता D. बहु-उद्देशीय कथानक

3. कथानक (Plot) के विकास के चार चरणों में से वह कौन सा चरण है जहाँ जिज्ञासा (Curiosity) अपने सर्वोच्च स्तर पर होती है?

A. चरम स्थिति B. आरंभ C. अवरोह D. आरोह

4. कहानी लेखन की 'पूर्व दीप्ति' (Flashback) शैली का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

A. वर्णनात्मक एकरसता को भंग करना B. कहानी के अंत को पहले ही प्रकट कर देना

C. केवल पात्रों का शारीरिक हुलिया बताना D. भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाना

5. प्रेमचंद के अनुसार कहानी का मूल उद्देश्य क्या प्रदर्शित करना है?

A. केवल तिलिस्मी और जादुई दुनिया का वर्णन

B. जीवन का सर्वांगीण और विस्तृत इतिहास

C. जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव का चित्रण

D. समाज सुधार के लिए कड़े निर्देशों की सूची

6. तत्वों की प्रधानता के आधार पर 'ऐतिहासिक कहानियों' को मुख्य रूप से किस वर्ग में रखा जाता है?

A. कथानक प्रधान कहानी B. चरित्र प्रधान कहानी

C. वातावरण प्रधान कहानी D. भाव प्रधान कहानी

7. कहानी में 'कथोपकथन' (Dialogues) की योजना के संदर्भ में कौन सा कथन सही है?

A. मौन को संवाद की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता

B. संवादों का प्रयोग केवल मनोरंजन के लिए होना चाहिए

C. संवादों को अत्यंत विस्तृत और व्याख्यात्मक होना चाहिए

D. संवाद पात्र, वातावरण और देशकाल के अनुकूल होने चाहिए

8. आजादी के बाद विकसित 'नई कहानी' की प्रमुख प्रवृत्ति क्या रही है?

A. शिल्प और तकनीक को कथ्य से अधिक महत्व देना

B. राजा-रानी की काल्पनिक कथाओं का पुनरुद्धार

C. परिवेशगत बदलाव और नए मानवीय संघर्षों का चित्रण

D. केवल ग्रामीण अंचल की समस्याओं तक सीमित रहना

9. कहानी में 'चित्रात्मक शैली' का प्रयोग पाठक पर क्या प्रभाव डालता है?

A. इसका उपयोग केवल ऐतिहासिक कहानियों में ही संभव है

B. यह भाषा को कठिन और बोझिल बना देती है

C. यह पाठक को कहानी के दार्शनिक पहलुओं से दूर ले जाती है

D. यह बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से दृश्यों को सजीव बनाती है

10. रचना लक्ष्य के आधार पर कहानी के तीन पारंपरिक रूपों में से 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' का क्या अर्थ है?

A. वैज्ञानिक खोजों को कहानी का आधार बनाना

B. यथार्थ का चित्रण करते हुए उसे किसी आदर्श की ओर ले जाना

C. पूर्णतः काल्पनिक और स्वर्ग-नरक की कथाएँ सुनाना

D. केवल समाज की बुराइयों का नग्न चित्रण करना

खंड (ब)

1.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भारतीय दृष्टि से कहानी को परिभाषित कीजिए।
2. कहानी विधा में मिश्रित अन्य गद्य विधाएँ कौन-सी हैं? संक्षिप्त परिचय दें।
3. कहानी विधा के वर्तमान स्वरूप की भाषिक विशिष्टता क्या है? स्पष्ट कीजिए।
4. शैली किसे कहते हैं? कहानी लेखन के संदर्भ में व्यवहृत लेखन शैलियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

1.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी कला के मुख्य तत्वों के आधार पर कहानी के स्वरूप पर चर्चा कीजिए।
2. विषय वस्तु के आधार पर कहानी के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।
3. कथानक का महत्व बताते हुए उसके विकास की स्थितियों का परिचय दीजिए।
4. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

1.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ. सुरेन्द्र चौधरी.

2. हिंदी कहानियों की शिल्पविधि का विकास. लक्ष्मी नारायण लाल.

3. साहित्य के सामान्य पक्ष : संप्रत्ययात्मक व्याख्या, एम. बालकुमार।

इकाई 2 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 मूल पाठ : 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

2.2.1 कहानीकार प्रेमचंद का परिचय

2.2.2 'पंच परमेश्वर' का तात्विक विवेचन

2.2.2.1 कथावस्तु

2.2.2.2 चरित्र चित्रण

2.2.2.3 संवाद

2.2.2.4 वातावरण

2.2.2.5 उद्देश्य

2.2.2.6 भाषा शैली

2.3 पाठ सार

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

2.5 शब्द संपदा

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

2.7 पठनीय पुस्तकें

2.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद को हिंदी साहित्य में 'कथा सम्राट' के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने लेखन के द्वारा कथा साहित्य की दोनों विधाओं (कहानी और उपन्यास) को लेखन कला और लोकप्रियता के उच्च शिखर पर पहुँचाया। प्रस्तुत इकाई में हम उनकी प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का गहन अध्ययन करेंगे।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- कहानीकार प्रेमचंद के बारे में जान सकेंगे।

- कहानी 'पंच परमेश्वर' की कथावस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- 'पंच परमेश्वर' के ग्रामीण परिवेश से अवगत हो सकेंगे।
- इस कहानी में निहित सत्य, न्याय और आपसी संबंध की महत्ता से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'पंच परमेश्वर' का विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द की भाषा-शैली की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

2.2 मूल पाठ : 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

'पंच परमेश्वर' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इसके लेखक प्रेमचन्द हैं। वर्ष 1916 में यह कहानी प्रकाशित हुई। माना जाता है कि इस कहानी से कहानी विधा में एक परिवर्तनकारी मोड़ आया। कहानी में इस परिवर्तन का संबंध कथानक, भाषा और शैली से था। कहानी विधा के शिल्प का पुराना आख्यानात्मक ढर्रा टूटा। बीसवीं सदी के आरंभ में इस नई पहल को प्रेमचंद और उनके समकालीन लेखकों के द्वारा बल मिला।

2.2.1 कहानीकार प्रेमचंद का परिचय

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 ई. को वाराणसी से कुछ दूर लमही नामक गाँव में हुआ। कानपुर की साहित्यिक पत्रिका 'जमाना' सहित अन्य पत्रिकाओं से प्रेमचंद का गहरा जुड़ाव रहा। उनकी पहली उर्दू कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) है। यह कहानी नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुई। अंग्रेजों द्वारा उनके कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' (1908) को जब्त कर लिए जाने से पहले तक यह प्रेमचंद का साहित्यिक नाम था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित होनेवाली उनकी पहली उर्दू कहानी 'बड़े घर की बेटी' (1910) है तथा दिसंबर 1915 में सरस्वती में प्रकाशित हिंदी कहानी 'सौत' उनकी पहली हिंदी कहानी है। साहित्य जगत में उनके अवदान के लिए उन्हें 'कथा सम्राट' और 'कलम के सिपाही' के नाम से जाना जाता है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी है। 1936 में उनका देहावसान हो गया।

प्रेमचंद ने हिंदी कहानी की भाषा को आम आदमी की भाषा का मुहावरा प्रदान किया। वे भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा सुझाए गए मध्यमार्ग के पथिक थे। यह मध्यमार्ग है उच्च उर्दू और संस्कृत निष्ठ हिंदी के बीच का; अर्थात बोलचाल की हिंदी का मार्ग। कहना गलत न होगा कि महात्मा गांधी ने जिस भाषा रूप को 'हिंदुस्तानी' कहा था, प्रेमचंद ने अपने कथासाहित्य में उसे चरितार्थ करके दिखाया है। कथाभाषा के मर्मज्ञ विद्वान डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इस संबंध में यह माना है कि प्रेमचंद का रचनात्मक मूल्यांकन कई कारणों से समस्या उपस्थित करता है। वे पाठक के लिए जितने सरल और सहज हैं, आलोचक के लिए उतने ही मुश्किल। दरअसल उनकी कहानियों में घटनाओं और अनुभवों की बहुलता पाठक को तो पसंद आती है, लेकिन आलोचक

के लिए समस्या खड़ी कर देती है। "अनुभव-बहुलता के जिस विशिष्ट गुण के लिए पाठक के रूप में वह आभारी था, वही अनुभव-बहुलता आलोचक के रूप में उसके सामने एक सीमा बनाती है। प्रेमचंद अपनी रचना-प्रक्रिया में भाषा का संपूर्णतः दोहन कर लेते हैं, फलतः आलोचक के लिए ऐसी भाषा-छवियाँ, संकेत शेष नहीं बचते जिनके सहारे वह उस रचना में आगे अर्थ का संवर्धन कर सके। और यहाँ प्रेमचंद गांधी के सबसे निकट आते हैं। विचारधारा के स्तर पर वे गांधी से प्रभावित रहे या फिर उनसे उपराम होते गए, यह एक स्थूल जानकारी की बात है। रचना के क्षण में वे गांधी के सबसे नज़दीक होते हैं।" (हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, पृष्ठ 250)

बोध प्रश्न

- भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा सुझाया गया मध्य मार्ग क्या है?
- प्रेमचंद महात्मा गांधी के सबसे निकट क्यों हैं?

2.2.2 'पंच परमेश्वर' का तात्विक विवेचन

'पंच परमेश्वर' घटना प्रधान कहानी है। इसमें रोजमर्रा की जिंदगी से ली गई घटनाएँ है। कहानी के बीज तत्व के रूप में गाँव के जीवन से उठायी गई इन घटनाओं को लेखक ने अपनी कल्पना के अनुसार क्रमबद्ध किया। घटनाओं की यह क्रमबद्धता कहानी के सुरुचिकर और सजीव होने के लिए आवश्यक है। कल्पना और यथार्थ का सम्मिश्रण कहानी को प्रभावी बनाता है। इस कहानी की कथावस्तु सशक्त और कालजयी है। इसमें चित्रित किया गया समाज और उसकी समस्याएँ, कुछेक बदलते परिदृश्यों के साथ आज के समय में भी मौजूद हैं। इसमें जीवन की बाहरी घटनाओं का जितना जिक्र किया गया है, उतना ही पात्रों के मन के भीतर की उथल-पुथल को भी दिखाया गया है।

2.2.2.1 कथावस्तु

किसी कहानी की कथावस्तु के क्रमविन्यास में आरंभ, आरोह, चरमसीमा और अवरोह ये चार अनिवार्य स्थितियाँ आती हैं। इस कहानी में ये सभी स्थितियाँ सुगठित हैं। इसका कथानक (कथावस्तु) सामाजिक और मनोविश्लेष्णात्मक है, पर बीच-बीच में दार्शनिक स्वर भी उभरा है। कहानी का आरंभ कहानी कहने की रीति से हुआ है। लेखक कहानी कहते हुए मुख्य पात्रों का परिचय करा देता है। कहानी की प्रारंभिक पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक सौहार्द का अंकन किया गया है। जब सारी फिजा विषैली हो, वहाँ कहीं एक घट हो और घट के भीतर एक बूँद अमृत हो, तो उसे पाने की लालसा किसे न होगी। इस कहानी का आरंभ पाठक को उसके अंत के प्रति जिज्ञासु बनाता है। जुम्मन और अलगू की दोस्ती के परिचय से कहानी शुरू होती है। 'खाला' का कहानी में प्रवेश और अपनी जायदाद की रजिस्ट्री अपने भांजे जुम्मन के नाम कर देने की घटना कहानी का आरोह है। इस आरोह का विकास करने में खाला के प्रति जुम्मन की बेदिली और करीमन

का चरित्र सहयोगी रहा। 'हलवा-पूरी' से 'विश्वासघात और अपमान' का रस चखने के बाद पंचायत के लिए दौड़ लगाती वह बूढ़ी काया इस आरोह की गति की तीव्रता है। पंचायत में सरपंच के रूप में अलगू का स्पष्ट न्याय खाला के हक में जाता है। इससे जुम्मन अचंभित और हारा हुआ महसूस करता है। इसके साथ ही बदले की भावना उसके मन में घर कर जाती है। शीघ्र ही उसे अवसर भी मिल जाता है। यह कहानी का चरम बिन्दु है। कहानी को चरम तक पहुँचाने में घटनाओं का संयोजन और सूत्रों का विस्तार एकदम स्वाभाविक तरीके से किया गया है। ये घटनाएँ पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ते हुए उसे सोचने और निर्णय लेने की स्थिति में लाकर छोडती हैं। मुख्य घटनाओं के इर्द-गिर्द छोटी घटनाएँ रची गई हैं एवं वैचारिक उद्भावनाएँ दी गई हैं। ये कहानी की जीवन्तता और बौद्धिकता का परिचायक हैं।

अलगू का एक बैल मर जाता है। बचे हुए दूसरे बैल को वह समझू साहू को बेच देता है। बैल का दाम एक माह में चुकाने की बात तय होती है। समझू साहू की नासमझी और दरिंदगी से बैल मर जाता है, अब वह दाम देने से माना करता है। पंचायत की नौबत आती है। इस बार सरपंच जुम्मन है। अवसर था कि अलगू के प्रति अपने दुराग्रह का बदला वह ले सके पर उसने सब भूलकर केवल न्याय किया। अपने निर्णय से उसने महसूस किया कि पंच में परमेश्वर का वास होता है और उसकी ज़ुबान खुदा की ज़ुबान है। सारी शिकायतों का पुलिंदा फेंककर वह अपने मित्र अलगू से मिला। अपने मन की छिपी हुई बदले की भावना को अलगू के सामने खोलकर उसका मन हल्का हो गया। दोनों की आँखों से बहते हुए आँसू ने उनकी बेजान पड़ी हुई मित्रता को नया जीवन दिया। यह कहानी का अवरोह और अंत है। कुल मिलाकर, कहानी प्रेरणादायक है।

बोध प्रश्न

- इस कहानी में चरमबिंदु क्या है?
- इस कहानी से क्या प्रेरणा मिलती है?

2.2.2.2 चरित्र चित्रण

कथानक के गति निर्वाह के लिए पात्रों की सृष्टि की जाती है, जो घटनाओं को अपने अंजाम तक पहुँचाते हैं। मोटे तौर पर इन पात्रों को दो कोटियों में रखा जाता है - मुख्य पात्र और गौण पात्र। इस कहानी में मुख्य पात्र हैं - खाला, जुम्मन शेख, अलगू चौधरी, और समझू साहू। कहानी के गौण पात्र हैं - जुमराती शेख, अलगू के पिता, करीमन, चौधराइन, साहू आइन, नाई, रामधन मिश्र इत्यादि। रामधन मिश्र को कहानी में उन लोगों का प्रतिनिधि बनाकर पेश किया गया है जो किसी के किसी व्यवहार से स्वतः आहत हो जाते हैं, और उसे अपना अहित समझते हैं। अपना अहित करने वाले से अप्रत्यक्ष रूप से वैर रखते हुए, बदला लेने का अवसर ढूँढ़ते रहते हैं। जुमराती, जुम्मन के पिता हैं जिनका भरोसा छड़ी पर है। अलगू के पिता

भाग्यवादी हैं। विद्या प्राप्ति को वे गुरु सेवा से प्राप्त आशीर्वाद और भाग्य की देन मानते हैं। करीमन का चरित्र असहिष्णुता का प्रतीक है। वह खाला के प्रति निष्ठुर थी और जुम्मन (उसका पति) के अनैतिक कामों की सहयोगी। इस पात्र के रूप में एक साधारण ग्रामीण स्त्री पात्र की सृष्टि की गई है। इस स्त्री को अपनी आन की शान में झगड़े से भी परहेज नहीं है। बैल को विष देकर जुम्मन द्वारा मार दिए जाने की शंका चौधराइन द्वारा व्यक्त किए जाने पर वह उससे उलझ जाती है। पहला बैल कैसे मरा यह कहानी में स्पष्ट नहीं किया गया है।

जुम्मन ज्ञानी है, साथ में अवसरवादी और अहंकारी भी है। अहंकार उसे अपने ज्ञान का है, जिसके कारण लोग कागजी कामों में उसकी मदद लेते हैं और उसके प्रति अहसानमंद भी हैं। उसमें छल, वैर और स्वार्थ की प्रवृत्ति भी है। कहानी के अंत में उसका केवल एक रूप बचा! सच्चे मित्र का रूप! अटल विश्वासी का रूप! न्याय का पक्षधर! अलगू धनवान है। गुरुसेवा में उसकी रुचि है पर थोडा दब्बू भी है। वह खाला के पक्ष में खड़ा होने से डरता है क्योंकि उसे अपनी मित्रता बचानी है। खाला उसकी चेतना को झकझोर कर रख देती है। समझू साहू व्यापारी है, जो गाँव से गुड और घी मंडी ले जाता है, और मंडी से नमक तेल गाँव लाकर बेचता है। उसकी मानसिकता केवल व्यापारी वाली, हानि-लाभ की है। बहुत अधिक काम लेने और चारे का उचित प्रबंध न करने के कारण इक्का गाड़ी खींचते हुए ही बैल ने दम तोड़ दिया। मरे हुए बैल के प्रति साहू के व्यवहार का एक अंश कहानी से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, देखें - "साहू जी ने बहुत पीटा, टाँग पकड़कर खींचा, नथनों में लकड़ी ठूँस दी; पर कहीं मृतक भी उठ सकता है? .... अभागे। तुझे मरना ही था, तो घर पहुँचकर मरता! ससुरा बीच रास्ते ही में मर रहा। अब गाड़ी कौन खींचे?" यह निर्मम और निर्दय मानसिकता का चरम है। केवल अपना जीवन अपना है, दूसरे के जीवन का कोई मोल नहीं! उसकी नीयत में बेईमानी भी थी। तभी वह बैल का दाम अलगू को देने से कतराने लगा था। अपनी करनी से उसे नुकसान हुआ, पर अपने नुकसान की भरपाई करने के लिए दूसरे भलेमानुष का नुकसान करना, यह कैसा बेतुका तर्क है!

इस तरह स्त्री-पुरुष चरित्रों की वैविध्यपूर्ण सृष्टि वाली इस कहानी में 'खाला' का चरित्र एक निर्भीक, सशक्त और स्वतंत्र स्त्री के रूप में उभरा है। वह बूढ़ी है पर बेजान नहीं। ऐसे चरित्र की सृष्टि निराश, कुंठित और त्रस्त मनुष्यों की धमनियों में भी रक्त का संचार कर सकती है। कर्मठता और विपरीत परिस्थिति में हार नहीं मानने का संदेश देती खाला के दृढ़ व्यक्तित्व के भीतर ममता भी है, जो पंचायत में उनके इस वक्तव्य से झलकती है - "अगर मुझमें कोई ऐब देखो, तो मेरे मुँह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में कोई बुराई देखो, तो उसे समझाओ, क्यों एक बेकस की आह लेता है!" पंचों से जुम्मन के लिए उन्हें दंड नहीं चाहिए। यह उनका स्नेह ही तो है।

बोध प्रश्न

- खाला के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
- क्या इन पात्रों से कहानी को गति मिली है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

2.2.2.3 संवाद : संवाद कहानी को सजीव बनाते हैं। इनकी योजना पात्र, वातावरण, स्थान और समय के अनुकूल बनाकर की जाती है। संक्षिप्त पर अर्थयुक्त संवाद योजना वाली कहानी सफल मानी जाती है। इस कहानी में पंचायत के दौरान अपना पक्ष रखने के क्रम में लंबे संवाद भी प्रयुक्त हुए हैं, और ये रुचिकर तथा वातावरण के अनुकूल हैं। एक तरह का संवाद भी उपस्थित व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रभाव छोड़ता है। जैसा कि अलगू ने जब जिरह शुरू की, तब जुम्मन और रामधन के मन के भाव अलग थें, देखें - "उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़ी की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इस प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया।"

इस कहानी में एकतरफा संवाद करीमन और खाला का है जहाँ खाला केवल सुनती है और करीमन तिरस्कार के अंदाज में सुनाती रहती है। परस्पर संवाद लोगों के चरित्र को जानने का कारगर उपाय है। जुम्मन और खाला के मध्य, खाला और अलगू के मध्य तथा खाला और अन्य ग्रामीणों के मध्य जो संवाद हुए उनसे सभी का दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ। बहुत कम लोगों ने खाला के दुःख को साझा किया। झगड़ा या विवाद भी एक तरह का संवाद ही है जो पहले बैल के मरने के बाद करीमन और चौधराइन के बीच हुआ और दूसरे बैल के मरने के बाद साहू-साहूआइन तथा अलगू के बीच झड़प के रूप में हुआ। संवाद का व्यापक रूप पंचायत के दौरान देखने को मिलता है।

उदाहरण :

"खाला ने चिल्लाकर कहा – अरे अल्लाह के बंदे! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।

जुम्मन ने क्रोध से कहा – इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम्हारी बन पड़ी है जिसे चाहो, पंच बदो।

खालाजान जुम्मन के आक्षेप को समझ गईं, वह बोली – बेटा, खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। कैसी बात कहते हो! और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो; अलगू चौधरी को तो मानते हो, लो, मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।"

खाला के पंचायत बुलाने के आग्रह पर किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हाँ–हूँ करके टाल दिया, और किसी ने इस अन्याय पर ज़माने को गालियाँ दी! कहा, "कब्र में पाँव लटके हुए हैं, आज मरे कल दूसरा दिन; पर हवस नहीं मानती। अब तुम्हें क्या चाहिए? रोटी खाओ और अल्लाह का नाम लो। तुम्हें अब खेती–बारी से क्या काम है?" यह कथन गाँव के कुछ लोगों ने खाला से तब कहा जब वे पंचायत में आने के लिए लोगों से निवेदन कर रही थीं। स्पष्ट है की प्रेमचंद की संवाद योजना पात्रों के मन का आईना है, तथा कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक भी।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद की संवादयोजना की दो विशेषताएँ बताइए।

2.2.2.4 वातावरण : मनुष्य के स्थूल शरीर और सूक्ष्म मन की तरह कहानी में भी वातावरण के दो स्तर हैं – एक बाहरी दुनिया से जुड़ा हुआ और दूसरा बाहरी दुनिया से प्रभावित अंतर्मन जो भीतर ही उथल–पुथल मचाता हुआ, चेहरे पर भाव उकेरता रहता है। हर कहानी में इनकी उपस्थिति रहती है, इसमें भी है। इस कहानी में वातावरण (देशकाल) का निर्माण बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों के भारत के गाँव और वहाँ के लोगों को मिलाकर किया गया है। गाँव का बाह्य परिवेश तथा वहाँ रहनेवाले लोगों के मानसिक भावों का चित्रण करते हुए लेखक के भीतर भारतीयता वाला तत्व अदृश्य रूप से विद्यमान था। धर्म संप्रदाय से परे आपसी भाईचारा और परस्पर विश्वास का चित्रण तभी संभव है। जुम्मन और अलगू के संदर्भ में कहानी के आरंभ में ही यह दिखाया गया है। अलगू की गुरु सेवा का चित्रण दिखाता है कि वह युग सेवा, आस्था और निष्ठा का भी था। ये बातें आज के बदलते परिदृश्य में इस कहानी की उपयोगिता पुनः सिद्ध करती हैं। अन्याय और दुराचार तब भी था पर तब वह न्याय पर हावी हो जाने की क्षमता नहीं रखता था। खाला के साथ पंचायत में न्याय हुआ और जुम्मन ने उसे स्वीकार किया। अलगू के साथ भी न्याय हुआ और समझू ने उस न्याय को स्वीकार किया। व्यवस्थाएँ तब बिकी नहीं थीं। सच सबसे ऊपर था क्योंकि उसने खुद पर बिकाऊ होने का बिल्ला नहीं लगाया था। उसे खरीदने की हैसियत भी कोई नहीं रखना चाहता था, क्योंकि सच और खुदा में सबकी आस्था थी। माटी के पुतले से गलती न हो तो वही खुदा हो जाएगा। मनुष्य में कमजोरियाँ हैं, तभी दुराग्रह और हठ उसके साथी हैं। यह बाहरी परिवेश का भीतरी सामूहिक सच है।

बाहरी वातावरण में गाँव है। उसमें धर्म का भेद भूलकर आपसी प्रेम से रहनेवाले लोग हैं। गाँव में किसान का अभाव भरा जीवन जहाँ गुड़ और घी तो उनका अपना है, पर नमक और तेल केवल मंडी में मिलते हैं। मंडी गाँव से दूर है। समझू साहू अपनी इक्का गाड़ी से वहाँ जाता है और वहाँ से सामान लाकर गाँव में बेचता है। यह उसकी समाज सेवा नहीं, उसका व्यापार है। उसकी निर्दयता से उसकी इक्का-गाड़ी में जुटा हुआ पानीदार बैल दम तोड़ देता है। एक शर्मनाक और निर्मम हादसा। ऐसे या इससे बदतर हादसे मनुष्यों के साथ भी हो सकते हैं। जुम्मन के घर के भीतर के बदलते वातावरण का अंकन भी चेतना को झकझोरे बिना नहीं छोड़ता। मिलकियत जुम्मन के नाम जब तक नहीं हुई थी, तब तक उसके घर में खाला के लिए केवल सत्कार और अपनापन था। दानपत्र की रजिस्ट्री होते ही दुत्कार और सूखी रोटी तक बात पहुँच गई। बाह्य और मानसिक दोनों तरह के वातावरण का प्रभावी अंकन लेखक ने इस कहानी में किया है।

उदाहरण देखें : "पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन मानो रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज, तीखे सालन भी

देने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गये। अब बेचारी खालाजान को नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।

बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी। दो–तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते।"

घर के दायरे के बाहर जो वातावरण का वृहत्तर आयाम है, उसे अंकित करते हुए लेखक ने इंसानों का ही नहीं पशुओं के मनोभावों का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। पंचायत के दौरान आदमियों की भीड़ देखकर गाँव के कुत्ते भी वहाँ जमा हो रहे थे। उनके विचार में गाँव में भीड़ का आयोजन भोज के अवसर पर होता है। भोज की जूठी पत्तलों में उनकी दावत की सामग्री उन्हें भरपूर मिल जाती है।

अलगू के सरपंच बनने के बाद पंचायत में उपस्थित मुख्य लोगों की मनःस्थिति जिससे मानसिक वातावरण प्रत्यक्ष हो रहा है, देखने लायक है। यथा - "अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है?"

गाँव के सहज वातावरण में रचित इस कहानी में लेखक ने नाई का जिक्र पंचायत में चिलम भरने के संदर्भ में किया है। पंचायत के परिवेश में प्रकृति का चित्रण भी हुआ है। दरख्त की छाँव में हर बार न्याय हुआ। शुक मंडली और कौओं की पंचायत की लेखक की कल्पना से कहानी का वातावरण रोचक और हल्का हुआ। साथ ही विचार करने के लिए कुछ प्रश्न भी उभर कर सामने आए। लेखक के आत्मकथ्य से यह अर्थगांभीर्य और बढ़ा है।

बोध प्रश्न

- जुम्मन के परिवार का वातावरण कैसा था?

2.2.2.5 उद्देश्य

प्रेमचंद किसी विशेष वाद या विचारधारा से नहीं जुड़े थे। उनकी यह कहानी 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' को परिलक्षित करती है। इस कहानी में विविध घटनाओं के माध्यम से लेखक ने जीवन के प्रति मानव के स्वस्थ दृष्टिकोण को उभारा है। संवादों के द्वारा इन उद्देश्यों का प्रभावशाली अंकन हुआ है। 'विश्वास' जुम्मन और अलगू की मित्रता के पहले पक्ष में स्थापित किया गया, पर कहानी के आगे बढ़ने के क्रम में यह खंडित हुआ तथा अंत में पुनः यह प्रगाढ़ हुआ। जुम्मन और करीमन द्वारा खाला से किया गया विश्वासघात, समाज में बुजुर्गों की दयनीय स्थिति का एक संकेत है। संकेत इसलिए दिया गया ताकि उसे दूर करने की पहल आरंभ हो। इससे दूसरा संकेत मिल रहा है 'सचेत रहने का' ताकि दगा वाली फितरत के फेरे में पड़ने से बचे रहें। इंसान इतना कमजोर नहीं कि कोई भी छल कर चला जाय, फिर भी यदि वह छला जाता

है तो नियति मान कर खाली बैठने से बेहतर है न्याय पाने के लिए जुगत लगाना; जैसा कि बूढी खाला ने लगाया। समाज की व्यवस्था बनी रहे इसके लिए लोगों की आस्था न्याय व्यवस्था में होनी चाहिए। न्याय व्यवस्था को इस कहानी में चित्रित गाँव की पंचायत की तरह निष्पक्ष, ईमानदार और सत्य के प्रति आस्थावान होना चाहिए ताकि जब न्याय हो तो फैसले की जय-जयकार हो, न कि पीड़ित को ही और पीड़ा पहुंचाई जाए।

'पंच परमेश्वर' शीर्षक का औचित्य भी इसी में निहित है भी इसी में है। यह सामान्य कथन नहीं लोक की आस्था का सूचक है। आस्था का टूटना भी न्यायोचित नहीं। सोचिये अगर पंचायत का फैसला खाला के पक्ष में नहीं होता तो खाला जीवन की मार कैसे झेलत? लुभावने वादों के फेर में अपने आत्मसम्मान की हत्या को हर पल सहने को विवश ही होती! समस्या भले अपनी किसी कमजोरी की उपज हो, पर उसका निदान मुँह छिपाने से नहीं संभव है। समस्या का हल खोजना होगा। इसके लिए उद्यम करना होगा, जैसा खाला ने किया। वे ऐसा कर सकीं क्योंकि वे आत्मविश्वासी थीं और उनका पक्ष सत्य का पक्ष था। खाला के प्रति जुम्मन और करीमन के व्यवहार का संकेत संबंधों के बदलते समीकरण को भी दिखाता है। संबंध भी एक व्यापार की तरह हो गए हैं शायद, जहाँ अनुपयोगी की कोई दरकार नहीं।

बैल के प्रति समझू साहू की निर्दयता ने उस बैल की जान ले ली। कहानी में कुछ सभ्य व्यक्ति उसकी निर्दयता के लिए भी उसे दंडित करना चाहते हैं, पर अलगू ने पंचायत केवल उसका दाम पाने के लिए की था, बैल तो वह महीने भर पहले बेच चुका था। समझू साहू को केवल अलगू को बैल का दाम देना पड़ा। बैल की हत्या की थोड़ी सजा, उसे मंडी से गाँव आने के रास्ते में ही मिल चुकी थी; पर क्या इतने से उसकी क्रूर वृत्ति और स्वार्थी प्रवृत्ति पर अंकुश लग जाएगा? किसी क्रूर और आततायी व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कैसे किया जाए? शुक मण्डली की पंचायत के माध्यम से सोचने के लिए प्रेमचन्द ने एक और प्रश्न छोड़ा है, "बेमुरौव्वत कौन, इंसान या पशु?" करीमन और चौधराइन के बीच की गरम झड़प को दोनों के पतियों ने क्रमशः जिन विधियों (डांट डपट, तर्कपूर्ण सोटे) से शांत किया उससे समाज में स्त्री–पुरुष की स्थिति पर थोड़ा प्रकाश डालने की कोशिश लेखक ने की है। किसान जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करती हुई इस कहानी में जीवन सत्यों की सहज अभिव्यक्ति है।

बोध प्रश्न

- इस कहानी का उद्देश्य क्या है?
- किसी का हृदय परिवर्तन करने के लिए कौन सा मार्ग उपयुक्त है – दंड या प्रेम?

2.2.2.6 भाषा-शैली

कहानी की भाषा विषय के अनुसार बदलती रहती है जिससे न रस ग्रहण करने में कोई बाधा आती है और न ही एकरसता से ऊब आती है। डॉ. रामविलास शर्मा मानते हैं कि प्रेमचंद

की सफलता का रहस्य बड़ी हद तक उनकी भाषा में निहित है। उनकी यह बात 'पंच परमेश्वर' पर भी पूरी तरह लागू होती है कि प्रेमचंद को देहाती बोली और हिंदी के एकीकरण में इतनी सफलता मिली है कि गाँव का रहने वाला पाठक भी प्रेमचंद के किसानों की बात सुनकर उसे अस्वाभाविक नहीं कह सकता। "जो सुंदर मुहावरे, कहावतें, उपमाएँ और हास्य के पुट उनके गद्य में हमें मिलते हैं, उन्हें प्रेमचंद ने अपने गाँव की बोली से सीखा था। अपनी उपमाएँ उन्होंने बहुधा ग्रामीण जीवन से ली हैं। प्रेमचंद की भाषा के अलंकार उसके प्रवाह में सजह ही सज जाते हैं। सारी बात अनुभव और सच्चाई की है। प्रेमचंद जनता को जानते थे, उसकी भाषा को जानते थे, वहीं से उन्हें शक्ति मिली है।" (डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद, 1941: पृष्ठ 138)

कहानी में मुख्य रूप से वर्णनात्मक और संवादात्मक शैली अपनाई गई है। अलंकार, लोकोक्ति और प्रतीक के प्रयोग से कहानी की शैली में सौंदर्य बरक़रार रहता है। संवादों में हास्य और व्यंग्य का समावेश इस सौंदर्य की अभिवृद्धि करता है।

विवरणात्मक शैली : 'पंच परमेश्वर' में अनेक स्थलों पर विवरणात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। इसके अंतर्गत कहानी में प्रयोग किये जानेवाले तथ्यों यानी कथानक को संगठित कर उसे सुविकसित करके प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रक्रिया में पात्रों के बाहरी क्रियाकलापों के साथ-साथ सूक्ष्म मनोभावों का भी चित्रण किया जाता है। घटनाओं का सूक्ष्म और परिणामपरक निरीक्षण इस शैली की विशिष्टता है। लेखक का बल दृष्टिकोण पर होता है। व्यक्तिविशेष का दृष्टिकोण उसके चरित्र का सूचक होता है। जैसे - "अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और जोर से बोले - पंच-परमेश्वर की जय! इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई- 'पंच परमेश्वर' की जय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है? थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपट कर बोले - भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण-घातक शत्रु बन गया था; पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठ कर न कोई किसी का दोस्त है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की ज़बान से खुदा बोलता है। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया।"

संवादात्मक शैली : संवाद रचना की संप्रेषणीयता में सहायक होते हैं। संवादात्मक शैली के प्रयोग से रचना की संप्रेषणीयता बढती है। यह कहानी छोटी है पर संवाद प्रयोग का वैविध्य यहाँ दर्शनीय है। जैसे -

"अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपदा तो सबके सामने रो आयी। अब आने-न-आने का अख्तियार उनको है।

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी ख़ुशी। जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

खाला – बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे।"

स्वगत कथन : वे कथन जो कहानी में लेखक के मुख से निकलते हैं स्वगत कथन या आत्मकथ्य कहलाते हैं। उदाहरण : "पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आस-पास के गाँवों में ऐसा कौन था जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो; ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सकें? आसमान के फरिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे नहीं।"

भाषा का प्रयोग पात्र के स्वभाव और परिवेश के अनुरूप किया गया है। अलगू द्वारा अपने गुरु जुमराती की सेवा के प्रसंग की भाषा इस दृष्टि से देखने योग्य है, जैसे - "खूब रकाबियाँ माँजी, खूब प्याले धोये।" समझू और उसकी पत्नी ने बैल के लिए 'कुलच्छिनी' और 'सत्यानाशी' का प्रयोग किया। परिस्थिति सम हो या विषम व्यक्ति का शब्द प्रयोग और उसका व्यवहार उसके अपने चरित्र से अवगत कराता है। दानपत्र की रजिस्ट्री होने से पहले जुम्मन के घर में खाला के लिए 'हलवे-पुलाव की वर्षा' थी और अब पंचायत में लोग जुटाने की मशक्कत करने में उनकी 'कमर झुक कर कमान हो गई थी'। भाषा का प्रयोग संदर्भ के अनुकूल है। हास्य और व्यंग्य का पुट भी भाषा में देखने को मिलता है। हास्य का एक उदाहरण देखें - "झुकी हुई कमर, पोपला मुँह, सन के - से बाल इतनी सामग्री एकत्र हों, तब हँसी क्यों न आवे?" इसी प्रकार - "जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकारी हिरण को जाल की तरफ जाते देखकर मन-ही-मन हँसता है।"

कहानी में सरल सहज और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया गया है, जैसे - कसर निकालना, जड़ खोदना, दूध का दूध और पानी का पानी करना, मन लहराना, कन्नी काटना, लाले पड़ना, लहू सूखना इत्यादि।

अंततः प्रेमचंद की कथाभाषा के संबंध में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह कथन उल्लेखनीय है कि , "किफ़ायतसारी का आदर्श जैसा प्रेमचंद के यथार्थ-चित्रण में है उससे और गहरे धरातल पर उनके भाषिक विधान में है। भाषा का सत अपनी रचना में वे पूरी तरह से निचोड़ लेते हैं। यथार्थ के नियमन की तरह उनका यह गुण भी पाठक के लिए अत्यंत तोषप्रद है।"

बोध प्रश्न

- इस कहानी में कौन कौन सी शैलियाँ मिलती है?
- कहानी में प्रयुक्त पाँच मुहावरे खोज कर लिखिए।

2.3 पाठ सार

प्रेमचंद भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान लेखक हैं। उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 ई. को वाराणसी से कुछ दूर लमही नामक गाँव में हुआ। उनकी पहली उर्दू कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) है। यह कहानी नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुई। अंग्रेजों द्वारा उनके कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' (1908) को जब्त कर लिए जाने से पहले तक यह प्रेमचंद का साहित्यिक नाम था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित होनेवाली उनकी पहली उर्दू कहानी 'बड़े घर की बेटी' (1910) है तथा दिसंबर 1915 में सरस्वती में प्रकाशित हिंदी कहानी 'सौत' उनकी पहली हिंदी कहानी है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी है। उनका देहावसान 1936 में हुआ। साहित्य जगत में उनके अवदान के लिए उन्हें 'कथा सम्राट' और 'कलम के सिपाही' के नाम से जाना जाता है। सांस्कृतिक सौहार्द, सद्भाव और सहअस्तित्व की भावना उनके कथा साहित्य में दृढ़ता के साथ उपस्थित है। स्त्री, दलित और किसान के जीवन की समस्यायों को उन्होंने उजागर किया है।

'पंच परमेश्वर' कहानी ग्रामीण पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखी गई है। जुम्मन और अलगू की मित्रता इस कहानी का केंद्र बिंदु है। कहानी की कथावस्तु का विस्तार यहीं से होता है। दोनों मित्रों को एक-दूसरे पर बहुत भरोसा था। घर से बाहर जाने की स्थिति में वे एक-दूसरे को अपना घर सौंप कर जाते थे। जुम्मन की एक खाला थी जिनका उसके अलावा और कोई करीबी रिश्तेदार नहीं था। उसने खाला को समझा-बुझा कर उनकी जमीन अपने नाम रजिस्ट्री करवा ली। जब तक जमीन की रजिस्ट्री नहीं हुई थी जुम्मन और करीमन उनका खूब आदर करते थे; पर अपना काम हो जाने के बाद उनकी नीयत बदल गई। अब वे खाला की दैनिक जरूरतों का भी ध्यान रखना आवश्यक नहीं समझते थे। खाला अपने साथ हो रहे रोज के दुर्व्यवहार से तंग होकर जुम्मन से मासिक खर्च की मांग करती है। पर वह मना कर देता है। इस विषय पर पंचायत बैठती है। इस पंचायत में सरपंच अलगू को चुना गया था। फैसला खाला के हक में जाता है। सभी लोगों की यह आस्था दृढ़ होती है कि पंच में परमेश्वर का वास होता है। यह कहानी की चरम स्थिति में भी यथावत है। अलगू चौधरी और समझू साहू के बीच बैल की मृत्यु से उत्पन्न विवाद जिसमें समझू साहू बैल का दाम अलगू को नहीं देना चाहता था; इस विषय पर भी पंचों का फैसला सत्य के पक्ष में था, जबकि सरपंच जुम्मन था जो कि खाला के पंचायत के बाद से मन ही मन अलगू का शत्रु बन गया था। कहानी का अवरोह पुनः इन दोनों मित्रों की मित्रता के पुनर्जीवन के साथ होता है। कहानी के पात्रों के पारस्परिक बर्ताव के द्वारा लेखक ने उनके चरित्र को स्पष्ट किया है। ग्रामीण संस्कार में निहित भोलेपन और विश्वास के साथ चारित्रिक दुर्बलता (क्रोध, लोभ, छल) का भी चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है। चरित्र

चित्रण में संवाद भी बहुत उपयोगी बन पड़े हैं। वर्णनात्मक और संवादात्मक शैली के साथ लेखक की टिप्पणियाँ कहानी के वातावरण की प्रभावी सृष्टि करती हैं। यह कहानी इंसान को सत्य के प्रति आस्थावान बनाते हुए; अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार होना सिखाती है। इसका मूल संदेश है, "पंच में परमेश्वर का वास होता है"।

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

- प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'कलाम का सिपाही' के रूप में याद किया जाता।
- प्रेमचंद आरंभ में नवाबराय उपनाम से उर्दू में कहानियाँ लिखते थे।
- 'सोज़े वतन' के जब्त होने के बाद लेखक ने 'प्रेमचंद' नाम स्वीकार किया, और हिंदी में लिखने लगे।
- 'पंच परमेश्वर' प्रेमचंद द्वारा स्थापित आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की प्रतिनिधि कहानी है।
- विवेच्य कहानी में यथार्थ का बेबाक चित्रण है, लेकिन अंत में हृदयपरिवर्तन के माध्यम से आदर्श की स्थापना की गई है।
- यह कहानी ग्रामीण भारत का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करती है।

2.5 शब्द संपदा

1. उज्र	=	आपत्ति
2. ऊसर	=	बंजर जमीन
3. ता-हयात	=	जिंदगी भर
4. दूभर	=	मुश्किल
5. धृष्ट	=	ढीठ
6. बैनामा	=	ज़मीन या मकान का विक्रय पत्र
7. मिलकियत	=	जायदाद
8. मुहर्रिर	=	वकील का मुंशी, लिखने वाला
9. रकाबियाँ	=	प्लेटें
10. रहननामा	=	गिरवी रखने का शपथ पत्र
11. वैमनस्य	=	शत्रुता
12. हिब्बा करना	=	अपनी संपत्ति किसी को दे देना

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

2.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत किस नाम से की थी?

A. गुलाबराय B. धनपतराय **C. नवाबराय** D. कलम का सिपाही

2. किस घटना के बाद लेखक ने 'प्रेमचंद' नाम को स्वीकार किया और हिंदी में लिखना शुरू किया?

A. प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत **B. कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' का जब्त होना**

C. वाराणसी से कानपुर स्थानांतरण D. महात्मा गांधी के साथ मुलाकात

3. प्रेमचंद की कहानियों में प्रयुक्त 'हिंदुस्तानी' भाषा का क्या अर्थ है?

A. कठिन संस्कृत निष्ठ हिंदी B. फारसी और अरबी शब्दों से युक्त उच्च उर्दू

C. उर्दू और हिंदी के बीच की बोलचाल की भाषा D. ग्रामीण बोलियों का संकलन

4. कहानी के अनुसार, जुम्मन और अलगू की मित्रता में पहली दरार कब आई?

A. जब अलगू ने अपना बैल समझू साहू को बेच दिया

B. जब अलगू ने पंचायत में खाला के पक्ष में निर्णय दिया

C. जब करीमन ने खाला को सूखी रोटियाँ देना शुरू किया

D. जब जुम्मन ने खाला के साथ दुर्व्यवहार किया

5. 'पंच परमेश्वर' कहानी की साहित्यिक शैली को किस नाम से जाना जाता है?

A. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद B. कल्पना प्रधान रूमानीवाद

C. कठोर यथार्थवाद D.ऐतिहासिक शैली

6. समझू साहू का चरित्र कहानी में किस प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है?

A. निर्दय और स्वार्थी व्यापारी B. ग्रामीण न्याय व्यवस्था का समर्थक

C. अत्यधिक भावुक और मित्रवत D. धार्मिक और परोपकारी

7. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार, प्रेमचंद की भाषा की क्या विशेषता है?

A. प्राकृतिक दृश्यों का बोझिल वर्णन **B. भाषा का पूर्णतः दोहन और सहजता**

C. जटिल मुहावरों का प्रयोग D. केवल अंग्रेजी शब्दों का प्रभाव

8. कहानी के अंत में जुम्मन शेख का हृदय परिवर्तन किस कारण होता है?

A. गाँव वालों के सामाजिक बहिष्कार के डर से

B. पंच के पद पर बैठकर न्याय की जिम्मेदारी का एहसास

C. खाला द्वारा उसे माफ़ कर देने के कारण

D. अलगू चौधरी की आर्थिक स्थिति देखकर

9. खाला का चरित्र समाज की किस स्थिति की ओर संकेत करता है?

A. शिक्षित ग्रामीण महिलाओं का उदय

B. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की उच्च राजनीतिक स्थिति

C. संपत्ति के लालच में बुजुर्गों की उपेक्षा

D. गाँव में जमींदारी प्रथा का अंत

10. कहानी में रामधन मिश्र जैसे पात्रों का क्या महत्व है?

A. वे कहानी के मुख्य नायक हैं

B. वे जुम्मन और अलगू के सच्चे हितैषी हैं

C. वे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दूसरों के विवाद में अवसर ढूँढ़ते हैं

D. वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विशेषज्ञ हैं

खंड (ब)

2.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रेमचंद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. 'पंच परमेश्वर' कहानी से लेखक ने क्या संदेश देना चाहा है? स्पष्ट कीजिए।
3. 'पंच की जबान से खुदा बोलता है' – पठित कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

खंड (स)

2.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'पंच परमेश्वर' कहानी की समीक्षा कीजिए।
2. इस कहानी के आधार पर प्रेमचंद के लेखन में प्रयुक्त भाषा-शैली को सोदाहरण समझाइए ।
3. 'पंच परमेश्वर' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

4. यह कहानी किससे प्रेरित है – यथार्थ, आदर्श या इन दोनों से? अपने मत को तर्क सहित सिद्ध कीजिए।

2.7 पठनीय पुस्तकें

1. पंच परमेश्वर तथा अन्य कहानियाँ. प्रेमचंद.
2. प्रेमचंद और उनका युग. रामविलास शर्मा.

इकाई 3 : एकांकी : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 मूल पाठ : एकांकी : विधागत स्वरूप

3.2.1 एकांकी का अर्थ

3.2.2 एकांकी की परिभाषा

3.2.3 एकांकी के तत्व

3.2.4 एकांकी का ऐतिहासिक विकास-क्रम

3.3 पाठसार

3.4 पाठ की उपलब्धियां

3.5 शब्द संपदा

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

3.7 पठनीय पुस्तकें

3.0 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की विविध गद्य विधाओं का विकास भारतेंदुकाल में हुआ। इसी काल में विविध गद्य विधाओं के लघु रूप भी विकसित हुए, उनमें 'एकांकी' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबकि ऐतिहासिक दृष्टि से एकांकी का उद्भव उन्नीसवीं सदी के अंत में माना जाता है। एकांकी के संवादात्मक स्वरूप एवं नाट्य विधा के विकास की दृष्टि से विचार करें तो हम पाएंगे कि प्राचीन समय में भी एकांकी का अस्तित्व था। कभी कभी यह भ्रम होता है कि एकांकी पूर्ण आकार के नाटक का एक अंक होता है, लेकिन यह सही नहीं है। साहित्यिक विधा के रूप में एकांकी और नाटक दो अलग अलग विधाएँ हैं। नाटक में किसी भी पात्र या चरित्र का विकास क्रमिक रूप से होता है। इसके विपरीत एकांकी में वह तीव्रता से पूर्णता प्राप्त करता है। इसके अलावा नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार अधिक होता है। इसकी तुलना में एकांकी के कथानक में घनत्व या गहराई अधिक होती है। नाटक में आधिकारिक कथावस्तु के साथ प्रासंगिक या सहायक कथाएँ भी होती हैं, किंतु एकांकी में एक ही कथा का वर्णन होता है, उसमें प्रासंगिक कथाओं के लिए स्थान नहीं होता।

इस इकाई में आप हिंदी एकांकी के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- एकांकी के अर्थ तथा परिभाषा को समझ सकेंगे।
- एकांकी के तत्वों एवं विधागत स्वरूप को जान सकेंगे।
- एकांकी के ऐतिहासिक विकास से अवगत हो सकेंगे।
- प्रमुख एकांकीकारों से परिचित हो सकेंगे।

3.2 मूल पाठ : एकांकी : विधागत स्वरूप

विज्ञान के विकास के फलस्वरूप मानव के जीवन में उसके समय और शक्ति की बचत हुई है। इसके बाद भी उसका जीवन सरल, सुखमय होने के स्थान पर जीवन की आपा धापी बढ़ती गयी। ऐसे में उसके पास इतना समय भी नहीं बचा कि वह बड़े-बड़े नाटकों, उपन्यासों, महाकाव्यों आदि का पूर्णतः आनंद ले सके। फलतः गीत, कहानी, एकांकी आदि साहित्य के लघुरूपों का विकास हुआ।

3.2.1 एकांकी का अर्थ

'एकांकी' एक अंक वाला नाटक होता है। लेकिन जिस प्रकार उपन्यास का लघु रूप कहानी नहीं हो सकता है, ठीक उसी प्रकार नाटक का लघु रूप एकांकी नहीं होता। एकांकी एक ऐसा दृश्य काव्य है, जिसमें एक अंक में अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से कथानक गढ़ा जाता है। भरत मुनि द्वारा गिनाए गए रूपक के दस भेदों में से एकांकी को प्रहसन के अंतर्गत रखा गया है। एकांकी शब्द को 'साहित्यदर्पण' में 'एकांक' शब्द के रूप में प्रयुक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में, यह अंग्रेजी के 'वन एक्ट प्ले' का हिंदी रूपांतरण है। दूसरे शब्दों में आधुनिक हिंदी एकांकी विधा का विकास पश्चिम के 'वन एक्ट प्ले' के आधार पर हुआ है।

अपने आरंभिक रूप में एकांकी 'कर्टेन रेज़र' अथवा पटोन्नायक के रूप में रंगमंच पर दिखाया जाता था। यह मुख्य नाटक से पूर्व आम दर्शकों के लिए कोई विषय लेकर दो या तीन पात्रों द्वारा मंचित किया जाता था। धीरे-धीरे इसे दर्शकों तथा महान लेखकों जैसे - चेखव, गोर्की, आस्कर वाइल्ड, इलियट, मिलर आदि के द्वारा खूब प्रोत्साहन मिला। इस तरह यह एक अंक वाली विधा के रूप में विकसित होने लगा।

बोध प्रश्न

- एकांकी का अर्थ बताइए।

3.2.2 एकांकी की परिभाषा

एकांकी की परिभाषा देने से पहले, इस भ्रम का निवारण आवश्यक है कि एकांकी का प्रचालन मुख्य रूप से समय के आभाव के कारण हुआ। इस बारे में डॉ.भोलानाथ तिवारी का यह कथन विचारणीय है कि - "यह नहीं कहा जा सकता कि चूंकि हमारे पास बड़ी-बड़ी साहित्यिक रचनाओं को पढ़ने के लिए समय नहीं हैं, इसलिए हम गीत, कहानी, एकांकी आदि पढ़ते हैं। बात यह है कि हम जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और समस्याओं आदि को क्रमबद्ध एवं समग्र रूप से भी अभिव्यक्त देखना चाहते हैं और उन अभिव्यक्तियों का स्वागत करते हैं, मगर साथ ही साथ किसी एक महत्त्वपूर्ण भावना, किसी एक उद्दीप्त क्षण, किसी एक असाधारण एवं प्रभावशाली घटना या घटनांश की अभिव्यक्ति का भी स्वागत करते हैं। हम कभी अनगिन फूलों से सुसज्जित सलोनी वाटिका पसन्द करते हैं और कभी भीनी सुगन्ध देने वाली खिलने को तैयार नन्हीं सी कली। दोनों बातें हैं, दो रुचियाँ हैं, दो पृथक किन्तु समान रूप से महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण हैं, समय के अभाव या अधिकता की इसमें कोई बात नहीं।"

सेठ गोविन्ददास के अनुसार "एकांकी जीवन से सम्बंधित किसी एक ही मूल भाव या विचार की एकांत अभिव्यक्ति होती है।"

बोध प्रश्न

- किसके अनुसार एकांकी एक कली के समान है?
- डॉ. भोलानाथ तिवारी ने एकांकी की क्या विशेषताएँ बताई हैं?
- अपने शब्दों में एकांकी को पारिभाषित कीजिए।

3.2.3 एकांकी के तत्व

एकांकी के तत्व निम्नलिखित हैं -

1. कथानक : कथानक में जीवन की किसी एक घटना, भाव, समस्या का विन्यास किया जाता है। एकांकी की कथा में यथार्थ, आदर्श, धर्म, राजनीति, समाज, परिवार आदि सभी समाहित हो सकते हैं। इसमें स्थान, समय, कार्य - एकता की विशिष्ट भूमिका होती है। कथानक की पांच अवस्थाएं हैं - प्रारंभ, नाटकीय स्थल, द्वंद्व, चरम सीमा तथा परिणति।

2. पात्र तथा चरित्र-चित्रण : एकांकी में एक मुख्य पात्र के साथ कुछ सहायक पात्र होने चाहिए। ये यथार्थ जगत के सजीव पात्रों के माध्यम से कथानक को गतिशीलता प्रदान करने वाले होने

चाहिए।

3. द्वंद्व : एकांकी में द्वंद्व अथवा संघर्ष से सहज, सरल तीव्रता का समावेश किया जाता है। द्वंद्व के द्वारा वह जीवन यथार्थ का प्रतीक बन जाता है।

4. संवाद अथवा कथोपकथन : संवाद ही किसी कथानक को उद्देश्यपरक बनाने में सहायक होते हैं। देश, काल, वातावरण को समझने में सहायक छोटे-छोटे संवाद पात्रों के चरित्र को जीवंत बनाते हैं।

5. भाषा-शैली : एकांकी की भाषा पात्रानुकूल सहज, सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए, ताकि पाठकों को सरलता से समझ में आ जाय।

6. प्रभाव-ऐक्य : एकांकी के मूल भाव, विचार, पात्र, चरित्र तथा भाषा-शैली की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रभाव ऐक्य के माध्यम से ही संभव है। जिसे देखकर प्रेक्षक के मन-मस्तिष्क में समग्रता का भाव उत्पन्न होता है।

7. अभिनेयता : एकांकी का मंचीयता के गुणों के साथ लेखन किया जाता है। यही कारण है कि लेखक भाव-विचार, स्थिति के अनुसार रंग निर्देश दिया करते हैं।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, "कलेवर की दृष्टि से एकांकी एक अंक का नाटक है, किंतु दृश्य-विधान के अनुसार इसके दो भेद किए जा सकते हैं – पहला, एक दृश्य का एकांकी; दूसरा, अनेक दृश्यों का एकांकी। पहली श्रेणी के एकांकी में कथा किसी घटित घटना के मार्मिक स्थल से आरंभ होती है और भावी घटनाओं के अवरोध से जिज्ञासा तथा कुतूहल की वृद्धि करती हुई तीव्र गति से विस्मयपूर्ण संक्रमण-विंदु तक पहुँच जाती है। इसमें कथा का प्रवाह उस निर्झर के समान होता है, जो किसी पहाड़ी से अकस्मात फूटता है, कुछ दूर तक दिखाई पड़ता है और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो जाता है। इस प्रकार के नाटकों में एक ही स्थान पर, एक ही समय में कार्य संपन्न हो जाता है।" (हिंदी साहित्य कोश: भाग 1, पृष्ठ 145)

बोध प्रश्न

- एकांकी के कितने तत्व होते हैं?
- एकांकी में अभिव्यक्ति प्रभाव कैसे संभव होता है?
- कलेवर और दृश्य-विधान की दृष्टि से एकांकी कितने प्रकार के होते हैं?

3.2.4 एकांकी का ऐतिहासिक विकास-क्रम

ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से हिंदी-एकांकी को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जाता है :

1. भारतेन्दु-द्विवेदी युग (1875-1928)

2. प्रसाद-युग (1929-37)

3. प्रसादोत्तर-युग (1938-47)

4. स्वातंत्र्योत्तर-युग (1948 से अब तक)

3.2.4.1 भारतेन्दु-द्विवेदी युग

भारतेन्दु हरिश्चंद्र रचित 'प्रेमयोगिनी' (1875 ई.) से हिंदी एकांकी का प्रारम्भ माना जा सकता है। भारतेंदु युग में विषयगत दृष्टिकोण के आधार पर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों के साथ देश के विकास में बाधक रीति-रिवाजों, रूढ़ियों, सदियों से चली आ रही सड़ी-गली परम्पराओं को दूर करने का प्रयास सामाजिक समस्या-प्रधान एकांकियों में किया गया है। भारतेन्दुयुगीन एकांकीकारों ने सामाजिक कुरीतियों पर हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में एकांकियों का प्रणयन करते हुए समाज को प्रेरित एवं सजग बनाया। इन एकांकियों में पात्रों के संवादों द्वारा भारतीय सभ्य समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं व्याभिचार का पर्दाफाश किया गया है। कुछ उल्लेखनीय एकांकियों में भारतेन्दु कृत 'भारत-दुर्दशा', प्रतापनारायण मिश्र कृत 'कलि कौतुक रूपक', किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'चौपट चपेट', राधाचरण गोस्वामी कृत 'भारत में यवन लोक', 'बूढ़े मुँह मुँहासे' आदि हैं। इनमें धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर तीखे व्यंग्य किये गए हैं। देवकीनन्दन त्रिपाठी का 'कलियुगी जनेऊ', 'कलियुग विवाह', काशीनाथ खत्री का 'बाल विधवा', राधाकृष्णदास का 'दु:खिनी बाला' आदि में नारी के त्रासद वैवाहिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया हैं। जिसके परिणामस्वरूप पाठकों के मन में भारतीय जन मानस में व्याप्त रूढ़ियों एवं परम्पराओं के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर उठी, और वे उन्हें दूर करने हेतु कृतसंकल्प हो गए। एकांकीकारों ने विगत की आत्मगौरवपूर्ण स्मृतियों की नींव पर देश के सुंदर भविष्य का सपना बुनने का सार्थक प्रयास किया है। भारतेन्दु-कालीन एकांकियों में धार्मिक, पौराणिक कथानकों में भारतीय संस्कृति का आदर्श स्थापित करने का प्रयत्न देखा जा सकता है। यथा - भारतेन्दु कृत 'सत्य हरिश्चन्द्र' और 'धनंजय', बदरीनारायण प्रेमघन कृत 'प्रयाग राज-गमन', राधाचरण गोस्वामी कृत 'श्रीदामा' और 'सती चंद्रावली', बालकृष्ण भट्ट कृत 'दमयन्ती स्वयंवर', कार्तिक प्रसाद कृत 'गंगोत्री', 'ऊषाहरण', 'द्रौपदी चीर हरण' और 'निस्सहाय हिन्दू' आदि इस काल के उल्लेखनीय एकांकी हैं।

इस युग के एकांकीकारों ने संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, पारसी तथा लोक नाट्य परंपरा को एकांकी सृजन की शैली में प्रयुक्त किया। भारतेंदु-द्विवेदी युगीन एकांकियों का लक्ष्य समाज-सुधार तथा देश प्रेम की धारा को जन-जन में प्रवाहित करना था।

बोध प्रश्न

- एकांकीकारों ने समाज को प्रेरित करने के लिए कैसे एकांकी लिखे?
- भारतेन्दु युगीन एकांकियों का लक्ष्य क्या है?
- भारतेन्दु युगीन प्रमुख एकांकीकारों का नाम बताइए।

3.2.4.2 प्रसाद-युग

हिंदी एकांकी का द्वितीय युग नाटक सम्राट जयशंकर प्रसाद के नाम पर प्रसाद युग के नाम से जाना जाता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक एकांकी-साहित्य की प्रथम मौलिक कृति के रूप में 1929 में प्रकाशित प्रसाद कृत 'एक घूँट' को माना जाता है। इसका कारण यह है कि भारतेन्दु-द्विवेदी युगीन एकांकी शास्त्रीय दृष्टि से परिपूर्ण एकांकी नहीं थे। प्रसाद युग में एकांकी के शिल्प में कई परिवर्तन हुए, जैसे - एकांकियों में संगीत का प्रयोग, संस्कृत नाट्य प्रणाली में प्रयुक्त विदूषक की व्यवस्था, स्वगत कथन आदि। एकांकियों में प्रभाव ऐक्य को प्रतिष्ठित करते हुए प्राचीन परम्पराओं के साथ ही स्थल की एकता, पात्रों का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण, गतिशील कथानक आदि सभी विशेषताओं को 'एक घूंट' में देखा जा सकता है। इस प्रकार, भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रोपित एकांकी के पौधे को पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रसाद जी को ही दिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- हिंदी में नाटक सम्राट किसे कहा जाता है?

हिंदी एकांकी में आधुनिकता का प्रवेश द्वार प्रसाद युग में ही खुलता है। प्रसादयुगीन एकांकीकारों ने पाश्चात्य एकांकी विधा के आधार पर नूतन शैली में हिंदी एकांकी का प्रणयन आरम्भ किया। इस युग के एकांकी नाटकों पर पाश्चात्य नाटककारों हैनरिक, इब्सन, गाल्सवर्दी तथा बर्नार्ड शॉ आदि का प्रभाव दिखाई देता है। भारतेन्दु युग में हिंदी एकांकी संस्कृत नाटक - प्रहसन के आधार पर सृजित होता था, प्रसाद युग में वह नव्य रूप में विकसित हुआ। इस युग में ऐसे एकांकियों की रचना अधिक हुई जो मानव जीवन से सीधे जुड़े हुए थे। इससे पूर्व के एकांकियों का बनावटीपन छोडकर अब सामाजिक, पारिवारिक एवं दैनिक समस्याओं से जुड़कर लिखा जाने लगा, जिससे ये सामाजिक यथार्थ के निकटतर प्रतीत होने लगे। प्राचीन

एकांकियों की कृत्रिमता, काव्यमय कथोपकथन, रंगमंच एवं अस्वाभाविकता को पूर्णतः त्यागते हुए समकालीन समस्याओं, विचारधाराओं एवं शिष्ट गद्य के साथ परिमार्जित भाषा में एकांकियों की रचना प्रसाद युग के एकांकियों की विशेषता बन गई।

प्रसाद युग हिंदी गद्य की नाटक एकांकी विधा के लिए स्वर्णिम युग सिद्ध हुआ। अभिनेयता और संवादों में सजीवता, संक्षिप्तता एवं मार्मिकता की ओर विशेष ध्यान देते हुए प्रहसन, फैंटेसी, गीति-नाट्य, ओपेरा, रेडियो प्ले, झांकी तथा मोनोड्रामा आदि एकांकी के नवीन रूपों का विकास किया गया।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युग के एकांकी किस विषय से अधिक जुड़े हुए थे?
- प्रसाद युग हिंदी गद्य की नाटक एकांकी विधा के लिए स्वर्णिम युग क्यों हैं?

प्रसाद युग के अनेक एकांकीकारों ने सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न किया। समाज को दीमक की तरह खोखला बनाने वाली जर्जर परम्पराओं जैसे - बाल-विवाह, विधवा समस्या, जातीयता, अस्पृश्यता की समस्या, मद्यपान, जुआ आदि पर भारतेन्दुकालीन एकांकीकारों ने भी खूब कुठाराघात किया था, किन्तु किसी समस्या को कबीर की शैली में फटकारने से समाप्त नहीं किया जा सकता। इन समस्याओं के समूल विनाश का स्वप्न लिए प्रसाद युग के एकांकीकार पूर्णतः तत्पर थे। सदियों से चली आ रही इन सामाजिक समस्याओं को एक ही यत्न में तो नहीं हटाया जा सकता, किन्तु समस्याओं को कम अवश्य किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युग में लेखकों द्वारा किस समस्या को कम करने का यत्न किया गया?

तत्कालीन समाज की उघाड़ने वाले अनेक एकांकियों की रचना इस युग में की गयी। सुधारवादी दृष्टिकोण के आधार पर जीवानन्द शर्मा ने 'बाला का विवाह' एकांकी का प्रणयन किया। सुधारात्मक एकांकीकारों में प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण स्थान है, उन्होंने 'प्रेम की देवी में' अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित किये जाने पर विशेष बल दिया। अनमेल विवाह एवं दहेज समस्या को लेकर हरिकृष्ण शर्मा ने 'बुढ़ऊ का ब्याह' तथा डॉ सत्येन्द्र ने 'बलिदान' नामक एकांकी लिखा। इसी तरह वृद्धों की अनियंत्रित काम वासना जैसे विषय को लेकर जी. पी. श्रीवास्तव ने 'गड़बड़झाला' एकांकी में समाज का वीभत्स रूप चित्रित किया है। स्त्रियों को

पतिव्रत धर्म की शिक्षा देने हेतु रामसिंह वर्मा ने 'रेशमी रुमाल' का प्रणयन किया। आधुनिक शिक्षित वर्ग की रोमांस वृत्ति को लेकर बदरीनाथ भट्ट ने 'विवाह विज्ञापन' एकांकी में कटाक्ष किया है। विधवा विवाह का समर्थन करते हुए जी. पी. श्रीवास्तव ने 'भूलचूक' तथा 'अच्छा उर्फ अक्ल की मरम्मत' में शिक्षित पति एवं अशिक्षित पत्नी के बीच उत्पन्न कटुता को दिखाया है। अछूत समस्या पर इन्होंने 'अछूतोद्धार' तथा अन्य विषयों को लेकर 'बंटाधार', 'दुमदार आदमी', 'कुर्सीमैन', 'पत्र पत्रिका सम्मेलन', 'न घर का न घाट का', 'चोर के घर मोर' आदि की रचना की। 'विनाश लीला' एकांकी के माध्यम से चण्डीप्रसाद हृदयेश ने नारी के जन्म से मृत्यु तक की करुणकहानी कही है। सामाजिक अस्पृश्यता को हरिशंकर शर्मा ने 'बिरादरी विभ्राट', 'पाखण्ड प्रदर्शन', तथा 'स्वर्ग की सीधी सड़क' आदि एकांकियों की रचना की। 'जब आँखें खुलती हैं' एकांकी के माध्यम से सुदर्शन ने वेश्या के हृदय-परिवर्तन के फलस्वरूप उसे देश की आज़ादी में सक्रिय होते हुए चित्रित किया है। रामनरेश त्रिपाठी के 'सीजन डल है', 'समानाधिकार', ' 'स्त्रियों की काउन्सिल', पांडेय बेचन शर्मा उग्र के 'चार बेचारे', 'बेचारा सम्पादक', 'बेचारा सुधारक', रामदास के 'नाक में दम', 'लबड़ धौं धौं', 'जोरू का गुलाम', 'करेन्सी नोट', आदि को पाठक जगत में खूब सराहा गया।

बोध प्रश्न

- 'चार बेचारे' एकांकी के लेखक कौन हैं?
- 'बाला का विवाह' एकांकी के लेखक कौन हैं?

प्रसाद यूगीन एकांकियों में राष्ट्रीय विचारधारा को लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश एवं घृणा और स्वतंत्रता की भावना आदि को व्यक्त किया गया। यथा - सुदर्शन के 'प्रताप प्रतिज्ञा', 'राजपूत की हार', तथा 'जब आंखें खुलती हैं', मंगल प्रसाद विश्वकर्मा के 'शेरसिंह', ब्रजलाल शास्त्री के 'दुर्गावती', 'पन्ना धाय', बदरीनाथ भट्ट के 'बापू का स्वर्ग समारोह', वृन्दावन लाल वर्मा के 'दुरंगी', सेठ गोविन्द दास के 'अपरिग्रह की पराकाष्ठा' आदि एकांकियों में स्वतंत्रता संग्राम के विविध चित्रों की झलक मिल जाती है। भारतीय जनता में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति की भावधारा के उन्नयन के लिए इन एकांकीकारों देशप्रेम से ओतप्रोत एकांकियों की भी रचना की। इनके द्वारा प्रणीत एकांकियों में स्वाभाविकता एवं प्रभावोत्पादकता की प्रचुरता देखी जा सकती है।

प्रसाद-युगीन एकांकीकारों ने अपने ऐतिहासिक एकांकियों के माध्यम से भारतीय जनता की निराश वृत्ति में आत्म गौरव एवं स्वाभिमान की भावना को पल्लवित किया। अंग्रेज सरकार

की कड़ी दृष्टि के भय से अपनी भावनाओं को इतिहास, धर्म, पुराण के पात्रों के माध्यम से एकांकीकारों ने अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया। एकांकी द्वारा देश के लिए सर्वस्व त्याग एवं बलिदान की भावना जैसे उच्च आदर्शों की परिकल्पना को विविध एकांकियों में चित्रित किया गया है। यथा - आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव के 'नूरजहाँ', 'चाणक्य और चंद्रगुप्त', 'शिवाजी और भारत राजलक्ष्मी', ब्रजलाल शास्त्री के 'दुर्गावती', 'पन्ना', 'तारा', 'किरण देवी', सुदर्शन के 'राजपूत की हार', 'प्रताप प्रतिज्ञा', गोविन्द वल्लभ पंत के 'विषकन्या', 'भस्म रेखा' आदि उल्लेखनीय एकांकियों के माध्यम से भारत के स्वर्णिम गौरव की प्स्थापना का महान कार्य किया गया।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युगीन एकांकीकार किससे भयभीत थे?

प्रसाद-युगीन एकांकीकारों ने धार्मिक-पौराणिक एकांकी के माध्यम से जनता की अंधश्रद्धा पर चोट की। यथा - राधेश्याम कथावाचक के 'कृष्ण-सुदामा', 'शान्ति के दूत भगवान', जयदेव शर्मा के 'न्याय और अन्याय', चतुरसेन शास्त्री के 'सीताराम', 'राधा-कृष्ण', 'हरिश्चन्द्र शैव्या' आदि के माध्यम से ऐतिहासिक-पौराणिक पात्रों को नवीन रूप में चित्रित किया गया। एकांकीकारों ने विविध क्षेत्रों से जुड़े एकांकियों की मौलिक रचना के साथ-साथ अन्य भाषाओं की एकांकियों का हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

समग्रतः इस युग के एकांकीकारों ने भावी एकांकीकारों के लिए पुष्ट आधारभूमि तैयार की, जिसके आधार पर आधुनिक एकांकी साहित्य का पूर्ण विकास हुआ।

3.2.4.3 प्रसादोत्तर-युग

हिंदी एकांकी के विकास-क्रम का तीसरा पड़ाव प्रसादोत्तर युग है, जिसका पहला चरण 1938 ई. से 1940 ई. तक तथा दूसरा चरण 1941 ई. से 1947 ई. तक माना जाता है। प्रथम चरण में हिंदी एकांकी में विभिन्न समस्याओं एवं परिस्थितियों पर आधारित रचनाएँ की गईं। विलियम, आर्चर, बर्नार्ड शॉ, इब्सन आदि प्रसिद्ध पश्चिमी लेखकों का प्रभाव इस युग के हिंदी एकांकीकारों पर खूब पड़ा। फलतः एकांकियों का रुख आदर्शवाद के घेरे से निकल कर यथार्थवाद की ओर हुआ। द्वितीय चरण में वैश्विक युद्ध की विभीषिकाएं, बंगाल का अकाल, आजादी की हुंकार, विदेशी शासकों के अमानवीय अत्याचार आदि ने भारतीय चिन्तन एवं कला को अत्यधिक प्रभावित किया। ऐसे में एकांकियों में बनावटीपन के बजाय यथार्थ और सहज

जीवन को चित्रित किया जाने लगा। इस युग के एकांकियों में शिल्पगत दुरूहता, आडम्बर के स्थान पर सहजता, सरलता, स्वाभाविकता एवं यथार्थ के दर्शन होने लगे। एकांकियों में संकलन त्रय को प्रमुखता देते हुए रंगमंच की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाने लगा। 'हंस' तथा 'विश्वमित्र' आदि पत्रिकाओं में एकांकी अपनी शिल्पगत विशेषताओं के साथ 'एकांकी नाटक' के नाम से प्रकाशित होने प्रारम्भ हो गए, तथा इनकी प्रारंभिक भूमिकाओं में एकांकी के शिल्प आदि पर विचार प्रस्तुत किये जाने लगे। जिस प्रकार भारतेन्दु-युग और प्रसाद-युग में हिंदी एकांकी की विविध प्रवृत्तियाँ उभरी थीं, उसी प्रकार प्रसादोत्तर युग में भी हिंदी एकांकी की विविध प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। वास्तव में प्रसादोत्तर युग में भी पूर्वयुगीन प्रवृत्तियों को ही आधार बनाकर एकांकियों की रचना हुई, किन्तु उनको आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवादी आधारभूमि पर निर्मित किया गया।

बोध प्रश्न

- एकांकी प्रकाशित करने वाली दो पत्रिकाओं के नाम बताइये।
- प्रसादोत्तर युगीन एकांकी की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या हैं?

प्रसादोत्तर युग में सामाजिक एवं धार्मिक विषयों से जुड़े एकांकी अधिक लिखे गए। डॉ.रामकुमार वर्मा ने 'एक तोले अफीम की कीमत', 'अठारह जुलाई की शाम', 'दस मिनट', 'स्वर्ग का कमरा', 'जवानी की डिब्बी', 'आंखों का आकाश', 'रंगीन स्वप्न' आदि में विविध सामाजिक समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। उपेन्द्रनाथ ने 'चरवाहे', 'चिलमन', 'लक्ष्मी का स्वागत', 'अन्धी गली' आदि में समसामयिक सामाजिक रूढ़ियों, परम्पराओं, विद्रूपताओं एवं विकृतियों का सशक्त चित्रण किया है। भुवनेश्वर ने 'श्यामा - एक वैवाहिक विडम्बना', 'स्ट्राइक', 'एक साम्यहीन साम्यवादी' तथा 'प्रतिमा का विवाह' आदि में मानव जीवन के सामाजिक दिखावों, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, पिछड़ी सामाजिक मान्यताओं का चित्रण किया है। जगदीश चंद्र माथुर ने 'ओ मेरे सपने', 'मेरी बाँसुरी', 'खिड़की की राह', 'कबूतर खाना', 'भोर का तारा', 'खंडहर' आदि एकांकियों में समाज सापेक्ष समस्याओं को जीवंत प्रस्तुति दी है। इनकी एकांकियों में सामाजिक बन्धनों के विरुद्ध विद्रोही भावना प्रकट हुई है। शम्भुदयाल सक्सेना ने 'कन्यादान', 'नेहर के बाद', 'मुर्दो का व्यापार', 'नया समाज', 'सगाई', 'मृत्युदान' आदि एकांकियों में गाँधीवादी, मानवतावादी विचारधारा को अभिव्यक्त किया है। हरिकृष्ण

प्रेमी ने 'बादलों के पार', 'वाणी मन्दिर', 'सेवा मन्दिर', 'घर या होटल', 'निष्ठुर न्याय' आदि एकांकियों में वंचितों के पक्ष में आवाज़ उठाई है। भगवतीचरण वर्मा ने 'मैं और केवल मैं', 'चौपाल में' तथा 'बुझता दीपक' आदि में पीड़ित मानव की अन्तर्वेदना को अभिव्यक्त किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी के नया समाज, अमर ज्योति तथा गाँव का देवता, सद्गुरुशरण अवस्थी के हाँ में नहीं का रहस्य, खद्दर, वे दोनों, चंद्रगुप्त विद्यालंकार के प्यास तथा दीनू, एस.सी.खत्री के बन्दर की खोपड़ी, प्यारे सपने आदि एकांकियों में सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया गया है। धार्मिक विषयों से सम्बंधित एकांकियों में शम्भुदयाल सक्सेना के सीताहरण, शिला का उद्धार, उतराई, सोने की मूर्ति, विदा, वनपथ, तापसी, पंचवटी, प्रो. सद्गुरुशरण अवस्थी के कैकेयी, सुदामा, शम्बूक, त्रिशंकु, लक्ष्मीनारायण मिश्र के अशोक वन आदि उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- 'नया समाज' एकांकी के लेखक कौन हैं?
- 'भोर का तारा' किसकी एकांकी है?
- भगवतीचरण वर्मा द्वारा रचित एकांकियों के नामा बताइए।

1.2.4.4 स्वातंत्र्योत्तर युग

स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी एकांकी का कलेवर रेडियो नाटकों से अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस संदर्भ में डॉ. दशरथ ओझा का वक्तव्य उल्लेखनीय है - 'हिंदी के जितने-नाटक आज रेडियो स्टेशनों पर अभिनीत होते हैं उतने सिनेमा की प्रयोगशालाओं में भी नहीं होते होंगे। अतः नाट्यकला का भविष्य रेडियो-रूपक के रचयिताओं के हाथ में है।'

स्वातंत्रयोत्तर हिंदी एकांकी में परंपरागत शैली को न छोड़ते हुए राष्ट्रीय भावना प्रधान एकांकियों का लेखन हुआ। इसी समय में लेखकों का ध्यान ध्वनि नाट्य तथा गीति नाट्य की ओर भी गया। जिसमें प्रगतिशील विचारधाराओं के साथ सामाजिक, राजनीतिक, मानवतावादी तथा यथार्थवादी विचारधाराओं के एकांकियों की रचना की गई। पूँजीवाद का विरोध, वर्ग संघर्ष, पुरानी रूढ़ियों के प्रति अनास्था, मानव अन्तर्मन की सूक्ष्म भावनाओं का विश्लेषण, भ्रष्टाचार उन्मूलन, कृषक एवं मजदूर की दयनीय स्थितियों की सजीव प्रस्तुति इनकी विषय वस्तु है। यथा- विनोद रस्तोगी के 'बहू की विदा', कणाद ऋषि भटनागर के 'लांछन', 'नया रास्ता', 'अपना घर', विष्णु प्रभाकर के 'बन्धन मुक्त', 'पाप', 'साहस', 'प्रतिशोध', 'इंसान', 'वीर

पूजा', 'किरण और कुहासा', 'स्वतंत्रता का अर्थ', 'काम', सर्वोदय, 'समाज सेवा', 'नया काश्मीर', देवीलाल सागर के 'परित्यक्त' आदि उल्लेखनीय सामाजिक संवेदनाओं से परीपूर्ण एकांकी हैं।

बोध प्रश्न

- स्वातंत्र्योत्तर युग के एकांकियों का कलेवर किससे प्रभावित है?
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी एकांकी की विशेषताएँ बताइए।

3.3 पाठ सार

ऐतिहासिक दृष्टि से हिंदी एकांकी का उद्भव उन्नीसवीं सदी के अंत में माना जाता। एकांकी एक ऐसा दृश्य काव्य है, जिसमें एक अंक में अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से कथानक गढ़ा जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि एकांकी नाटक-साहित्य का वह नाट्य-प्रधान रूप है जिसके माध्यम से मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक पहलू, एक समस्या या एक भाव की ऐसी कलात्मक प्रस्तुति की जाती है कि ये एक अविकल भाव से अनेक की सहानुभूति और आत्मीयता प्राप्त कर लेते हैं। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार एकांकी में केवल आधिकारिक कथा होती है। इसमें प्रासंगिक कथाएँ नहीं होतीं। आधिकारिक कथा ही आरंभ से अंत की ओर तीव्र गति से विकास करती है। इसलिए एकांकी में जटिलता नहीं होती। "उसमें प्रायः एक मुख्य घटना अनेक लघु घटनाओं के सहारे आगे बढ़ती है और कौतूहल के नए नए स्थल उपस्थित करती जाती है। उसमें कम से कम पात्र होते हैं जो किसी न किसी प्रकार कथा से निकट का संबंध रखते हैं।" (हिंदी साहित्य कोश, भाग 1)।

एकांकी के कथानक की पाँच अवस्थाएँ हैं - प्रारंभ, नाटकीय स्थल, द्वंद्व, चरम सीमा तथा परिणति। एकांकी का आकार यथासंभव इतना ही होना चाहिए कि उसे 30 से 40 मिनट में पढ़ा जा सके। एकांकी में संकलनत्रय का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए। एकांकी का विषय कोई भी हो किन्तु घटना को बिजली की कौंध लिए हुए चित्रित किया जाना चाहिए। एकांकी में जीवन के जिस क्षण को भी उल्लेखित किया जा रहा हो, उसमें पात्र, कथोपकथन, वातावरण की एकता का पूर्णतः ध्यान रखा जाना चाहिए।

हिंदी एकांकी के ऐतिहासिक विकास क्रम को भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग के रूप में देखा जा सकता है। भारतेन्दु-कालीन एकांकियों में धार्मिक, पौराणिक कथानकों में भारतीय संस्कृति का आदर्श स्थापित करने का प्रयत्न देखा जा सकता है। जबकि प्रसादयुगीन एकांकीकारों ने पाश्चात्य एकांकी विधा के आधार पर नूतन शैली में हिंदी एकांकी का प्रणयन आरम्भ किया। हिंदी एकांकी के विकास क्रम का तीसरा पड़ाव प्रसादोत्तर

युग है, इसके प्रथम चरण में हिंदी एकांकी में विभिन्न समस्याओं एवं परिस्थितियों पर आधारित रचनाएँ की गयी है तथा द्वितीय चरण में वैश्विक युद्ध की विभीषिकाएं, बंगाल का अकाल, आजादी की हुंकार, विदेशी शासकों के अमानवीय अत्याचार आदि ने भारतीय चिन्तन एवं कला को अत्यधिक प्रभावित किया। स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी एकांकी का कलेवर रेडियो नाटकों से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

3.4 पाठ की उपलब्धियाँ

हिंदी एकांकी के विधागत स्वरूप पर केन्द्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलाभ हुए हैं -

1. एकांकी आधुनिक युग की नाट्य विधा है जो भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित प्रहसन के एक भेद के निकट है।
2. हिंदी एकांकी विधा अंग्रेज़ी के 'वन एक्ट प्ले' के अनुकरण पर विकसित हुई है।
3. भारतेन्दु-द्विवेदी युग में एकांकी लिखे जाने लगे थे लेकिन उनका स्वरूप प्राचीन नाटक विधा से प्रभावित था।
4. आधुनिक दृष्टि से युक्त एकांकी के प्रारम्भ का श्रेय जयशंकर प्रसाद के एकांकी 'एक घूंट' को जाता है।
5. आज़ादी के बाद आधुनिक संचार माध्यम और तकनीकी प्रयोगों के कारण एकांकी के रूप में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

3.5 शब्द संपदा

1. अस्तित्व = मौजूदगी
2. उद्दीप्त = उत्तेजित करना
3. उद्भव = जन्म, उद्गम
4. एकांकी = एक ही अंक में पूरा होने वाला दृश्य काव्य या नाटक
5. कटाक्ष = व्यंग्य
6. क्षोभ = पछतावा, व्याकुलता
7. रूपक = जिसका कोई आकार या रूप हो; नाटक
8. वितृष्णा = विरक्ति, अरुचि

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

3.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. साहित्यिक विधा के रूप में एकांकी और नाटक के बीच मुख्य अंतर क्या है?

A. नाटक में कथानक की गहराई एकांकी से अधिक होती है।

B. एकांकी पूर्ण आकार के नाटक का केवल एक संक्षिप्त अंश मात्र है।

C. एकांकी में नाटक की तुलना में आधिकारिक कथा के साथ अधिक प्रासंगिक कथाएँ होती हैं।

D. नाटक में पात्रों का विकास क्रमिक होता है, जबकि एकांकी में वह तीव्रता से पूर्णता प्राप्त करता है।

2. आधुनिक हिंदी एकांकी के विकास पर पश्चिमी रंगमंच की किस विधा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है?

A. मोनोड्रामा (Monodrama) B. कर्टेन रेज़र (Curtain Raiser)

C. वन एक्ट प्ले (One Act Play) D. ओपेरा (Opera)

3. डॉ. भोलानाथ तिवारी ने एकांकी की तुलना किस प्रतीक से की है?

A. एक विशाल वटवृक्ष से **B. खिलने को तैयार एक नन्हीं कली से**

C. एक सुसज्जित सलोनी वाटिका से D. आकाश में बिजली की कौंध से

4. एकांकी के कथानक की पाँच अवस्थाओं में से वह कौन सी अवस्था है जहाँ संघर्ष अपने चरम पर होता है?

A. चरम सीमा B. नाटकीय स्थल C. प्रारंभ D. परिणति

5. प्रसाद युग के एकांकियों में शिल्प की दृष्टि से क्या महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देते हैं?

A. पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण और गतिशील कथानक

B. संवादात्मकता के स्थान पर केवल स्वगत कथनों का प्रयोग

C. केवल शास्त्रीय संस्कृत नाट्य शैली का पूर्ण अनुपालन

D. हास्य-व्यंग्य शैली का त्याग और केवल धार्मिक चित्रण

6. प्रसादोत्तर युग (1938-1947) के एकांकियों की मुख्य वैचारिक प्रवृत्ति क्या थी?

A. आदर्शवाद की ओर झुकाव

B. संस्कृत की शास्त्रीय परंपरा का पुनरुत्थान

C. केवल पौराणिक कथाओं का पुनरुद्धार

D. यथार्थवाद और समसामयिक समस्याओं का चित्रण

7. स्वातंत्र्योत्तर काल में किस माध्यम के कारण एकांकी के स्वरूप में 'क्रांतिकारी परिवर्तन' आया?

A. छपाई मशीनों का विकास

B. सिनेमा और डबिंग तकनीक

C. नुक्कड़ नाटकों का विस्तार

D. रेडियो नाटक और ध्वनि तकनीक

8. प्रसादोत्तर युग के किस लेखक ने 'भोर का तारा' और 'कबूतर खाना' जैसे समाज सापेक्ष एकांकियों की रचना की है?

A. उपेन्द्रनाथ अश्क B. भुवनेश्वर C. डॉ. रामकुमार वर्मा **D. जगदीश चंद्र माथुर**

9. एकांकी के 'प्रभाव-ऐक्य' (Unity of Impression) तत्व से क्या तात्पर्य है?

A. एकांकी में पात्रों की संख्या अधिक होना

B. विभिन्न कथाओं का एक साथ समावेश

C. मंच पर सजावट और प्रकाश व्यवस्था की अधिकता

D. देखने वाले के मन में समग्रता और एकनिष्ठ प्रभाव उत्पन्न होना

10. भारतेन्दु युग के एकांकियों का मुख्य लक्ष्य क्या था?

A. शुद्ध मनोरंजन और हास्य प्रदान करना

B. समाज-सुधार और देश प्रेम की भावना का संचार करना

C. पाश्चात्य जीवन शैली का प्रचार करना

D. केवल ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेजीकरण

खंड (ब)

3.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1.एकांकी शब्द के उद्भव पर प्रकाश डालिए।

2.एकांकी की परिभाषा लिखिए।

3.भारतेन्दुकालीन एकांकियों की विशेषता बताइए।

4. प्रसादोत्तर एकांकियों की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए

5. स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी एकांकियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

3.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी का ऐतिहासिक विकास क्रम बताइए।
2. एकांकी के तत्वों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
3. एकांकी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रसाद युग के सामाजिक एकांकियों का उल्लेख कीजिए।

3.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी एकांकी. सत्येन्द्र.
2. आठ एकांकी नाटक. रामकुमार वर्मा.
3. हिंदी एकांकी : उद्भव और विकास. रामचरन महेंद्र.
4. एकांकी नाटक. अमरकांत गुप्त.

इकाई 4 : भोर का तारा (जगदीश चंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 मूल पाठ : भोर का तारा (जगदीश चंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

4.2.1 जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

4.2.2 'भोर का तारा' : तात्विक विवेचना

4.2.3 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र

4.2.4 'भोर का तारा' एकांकी का वैशिष्ट्य

4.3 पाठ सार

4.4 पाठ की उपलब्धियाँ

4.5 शब्द संपदा

4.6 परीक्षार्थ प्रश्न

4.7 पठनीय पुस्तकें

4.0 प्रस्तावना

एकांकी आधुनिक हिंदी गद्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकृत है। पश्चिम में एकांकी की रूपरेखा दसवीं सदी के 'मिरेकल्स' और 'मोरालिटीज़' जैसे नाटक-रूपों में मिलती है, जिनमें धर्म-प्रचार के लिए ईसाई संतों के चरित्र की किसी एक आकर्षक कहानी को चुना जाता था, या उनके धर्म-कार्य संबंधी नैतिक उपदेश प्रधान किसी एक विषय को ग्रहण किया जाता था। इसके पश्चात जनता के मनोरंजन के लिए लिखे गए 'विनोदपूर्ण इंटरल्यूड्स' में इसका विकसित रूप मिलता है, जिनमें अधिक से अधिक तीन पात्रों को द्वारा किसी एक भावना के प्रदर्शन की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इन्हीं से आगे चलकर लघुमंचीय आंदोलनों का विकास होने पर 'कर्टेन रेज़र' के रूप में एकांकी का प्रचलन हुआ। हिंदी में भारतेंदु युग में ही एकांकी की रचना आरंभ हुई। इस दृष्टि से भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' हिंदी का प्रथम एकांकी है। लेकिन उन्होंने एकांकी की नाटक से पृथक सत्ता स्वीकार नहीं की। आगे चलकर छायावाद युग में 1929 में जयशंकर प्रसाद के 'एक घूंट' के प्रकाशन से एकांकी के विकास की

दूसरी अवस्था आरंभ हुई। छायावादोत्तर काल में जिन साहित्यकारों ने एकांकी विधा का विकास किया उनमें जगदीश चंद्र माथुर का महत्वपूर्ण स्थान है। जगदीशचंद्र माथुर मुख्यतः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखने वाले एकांकीकार हैं। 'भोर का तारा' एकांकी के माध्यम से उन्होने ऐतिहासिक-मनोवैज्ञानिक विषयों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। 'भोर का तारा' एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसके माध्यम से लेखक ने देशप्रेम को व्यक्तिगत प्रेम से श्रेष्ट सिद्ध किया है। एकांकी के माध्यम से गुप्त साम्राज्य की रक्षा में रत शेखर जैसे महान राजकवि के उज्ज्वल गुणों को प्रस्तुत करते हुए लेखक ने पाठकों के समक्ष आदर्श की प्रतिष्ठा की है।

4.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो ! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- एकांकी नाटककार जगदीशचंद्र माथुर के जीवन और रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- 'भोर का तारा' एकांकी की विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' की विवेचना कर सकेंगे।
- विवेच्य एकांकी के मुख्य पात्रों के चरित्र का विवेचन कर सकेंगे।
- विवेच्य एकांकी में प्रस्तुत परिवेश से अवगत हो सकेंगे।
- 'भोर का तारा' एकांकी की उपादेयता को समझ करेंगे।

4.2 मूल पाठ : भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

हिंदी साहित्य में एकांकी विधा का विकास मुख्य रूप से जयशंकर प्रसाद के बाद के समय तीव्र गति से हुआ। इस अवधि में एकांकी रचना के विषयक्षेत्र में बहुआयामी विस्तार दिखाई देता है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न लेखन के इस काल में जगदीशचंद्र माथुर का योगदान अ विस्मरणीय है।

4.2.1 जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर का जन्म 16 जुलाई, 1917 ई. में उत्तर प्रदेश के जिला बुलंदशहर में खुर्जा नामक स्थान पर हुआ था। आरंभिक शिक्षा खुर्जा से प्राप्त करते हुए उच्च शिक्षा हेतु वे इलाहाबाद चले गए। 1941 में इंडियन सिविल सर्विस में नियुक्ति मिलने के पश्चात भारत सरकार के शिक्षा सचिव तथा आकाशवाणी के महासंचालक आदि पदों पर कार्य करने के बाद सन् 1963 - 64 ई. में हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में अतिथि

व्याख्याता के रूप में चले गए। सरकारी गतिविधियों में व्यस्त रहने के साथ ही उन्होंने भारतीय इतिहास और संस्कृति को वर्तमान संदर्भ में व्याख्यायित करने का सफल प्रयास किया।

जगदीशचंद्र माथुर ने अपने विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य सृजन आरंभ कर दिया था। नाट्य क्षेत्र में उनके विशेष लेखन का एक कारण यह भी है कि आरंभ से ही उनकी रुचि अभिनय में थी। अपने छात्र जीवन में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में अनेक नाटकों में भाग लिया। 1930 ई. में उन्होंने तीन छोटे नाटकों की रचना की। आरंभ से ही उनके नाटक प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'चाँद' और 'रूपाभ' जैसी उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे थे।

'भोर का तारा' नामक संग्रह की सारी रचनाएँ उन्होंने प्रयाग में ही लिखीं। यह नाम प्रतीक रूप में शिल्प और संवेदना दोनों ही दृष्टियों से उनके रचनात्मक व्यक्तित्व के भोर का तारा ही है। इसके बाद उनकी रचनाओं में समकालीनता और परंपरा दोनों का सुंदर निर्वाह बढ़ता गया। आईसीएस अधिकारी होने के कारण उन्हें देशभर में अनेक स्थानों पर जाने का अवसर मिला। इसने भी उनकी रचनाओं को व्यापक कथाभूमि प्रदान की।

उन्होंने आधुनिक समाज की विभिन्न विसंगतियों और बेमेल स्थितियों को अपने एकांकी नाटक के माध्यम से विडंबनात्मक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी बड़ी सीमा तक छायावादी सौंदर्यबोध से प्रभावित प्रतीत होते हैं। उनकी राष्ट्रिय और सांस्कृतिक चेतना भी अत्यंत पुष्ट है। उनका निधन 16 मई, 1979 ई. को हुआ।

जगदीश चंद्र माथुर ने अपने एकांकी नाटकों में जीवन की विविध विषमताओं, रूढ़ियों तथा पीढ़ियों के अंतराल को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। 'कोणार्क', 'भोर का तारा', 'ओ मेरे सपने', 'पहला राजा', 'शारदीया', 'जिन्होंने जीना जाना', 'रीढ़ की हड्डी', 'कलिंग विजय', 'मकड़ी का जाला' आदि एकांकियों के माध्यम से अतीत की प्रासंगिकता को अपनी सटीक शैली में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी साहित्य की एक विशेषता बताइए।

4.2.2 'भोर का तारा' : तात्विक विवेचना

'भोर का तारा' एकांकी में व्यक्तिगत प्रेम के स्थान पर देशप्रेम को प्रमुखता दी गई है। एकांकी के प्रमुख तत्वों को समाहित करते हुए लेखक ने इसकी रचना की है। पूरे एकांकी का कथानक कम से कम पात्रों के माध्यम से एकांकी के सभी गुणों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। आगे एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' एकांकी का समग्र विवेचन किया जा रहा है-

1. **शृंखलाबद्ध कथानक :** 'भोर का तारा' एकांकी के कथानक की सुघड़ शृंखलाबध्द्ता उसे सशक्त रूप प्रदान करती है। एकांकी में कोई भी क्रम, घटना, पात्र ऐसा नहीं जो उसे अस्त - व्यस्त बनाए। 'भोर का तारा' एकांकी सुसंबद्ध, सुगठित कथा विन्यास के गुणों से युक्त है।
2. **विकास क्रम :** 'भोर का तारा' एकांकी के कथा विन्यास को लेखक ने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से बुना है। आरंभ में माधव के प्रवेश के साथ ही शेखर के कवि होने की सूचना पाठकों को मिलती है। इसके बाद शेखर की प्रेयसी तथा भावी पत्नी छाया का प्रवेश होता है। कथा-विन्यास का अगला पड़ाव छाया तथा शेखर के प्रेम के प्रतीक स्वरूप 'भोर का तारा' काव्य के पूर्ण होने के उत्साह से संबन्धित है। इसके बाद कथानक में माधव के पुनः आगमन के पश्चात एकांकी 'चरम स्थिति' में पहुंचता है। फलस्वरूप शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य को गुप्त साम्राज्य पर हूणों के आक्रमण की सूचना मिलते ही अग्नि को समर्पित किया जाना, कथा के मार्मिक किन्तु उदात्त स्वरूप को व्यक्त करता है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत एकांकी में में किस प्रेम का महत्व दिखाया गया है?
- 'भोर का तारा' के कथानक की एक विशेषता बताइए।
- 'भोर का तारा' किसका प्रतीक है?
- प्रस्तुत एकांकी में गुप्त साम्राज्य पर किसने आक्रमण किया?

3. **संकलन त्रय :** संकलन त्रय तीन चीजों के संकलन को कहते हैं परन्तु साहित्य में यह विशेष अर्थ में प्रयोग होता है जिसमें देश यानी स्थान जैसे दिल्ली, कोलकाता आदि। दूसरा है काल जिसका अर्थ है समय; यानी कोई घटना किस समय की है जैसे विभाजन की त्रासदी का समय, स्वतन्त्रता के बाद का समय आदि। तीसरा है वातावरण यानि वहाँ पर कैसा वातावरण या परिवेश है, उस समय लोग कैसी भाषा बोलते हैं, कैसे वस्त्र पहनते हैं आदि। इन तीनों को मिला कर साहित्य में संकलन त्रय कहते हैं। संकलन त्रय नाटक और एकांकी के क्षेत्र में तीन नाट्य-अन्वितियों काल, स्थान तथा कार्य के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द है। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं संकलन त्रय - एकांकी नाटक के प्रमुख तत्त्व हैं। इनमें संकलन त्रय का निर्वाह एकांकी और नाटक के लिए अनिवार्य है।

एकांकी के मात्र दो दृश्यों में जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करने की चेष्टा की गई है। संकलन-त्रय की विशेषताओं के साथ सहज रूप में लेखक ने इसकी सर्जना की है। काल, स्थान तथा कार्य की एकता के कारण एकांकी में प्रवाह और प्रभाव दोनों का सहज समावेश हो गया है।

4. **रोचकता, जिज्ञासा एवं संक्षिप्तता :** 'भोर का तारा' एकांकी का कथानक अत्यंत ही रोचक शैली में बुना गया है, जो पात्रों के माध्यम से जिज्ञासा और कुतूहल बढ़ाता है। माधव का संक्षिप्त चरित्र चित्रण ही जिज्ञासा और कुतुहल की सर्जना करने के लिए पर्याप्त है। कथानक संक्षिप्त होने के साथ ही प्रभावी है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत एकांकी में कितने दृश्य हैं?
- 'भोर का तारा' एकांकी में 'चरम स्थिति' कब आती है?

4.2.3 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र

'भोर का तारा' एकांकी के प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण द्वारा एकांकी के कथानक को गति मिलती है। एकांकी के पात्रों का चरित्र चित्रण निमन्वत द्रष्टव्य है -

शेखर : 'भोर का तारा' एकांकी के नायक शेखर में कई ऐसे गुण हैं, जो उसे एक उदात्त नायक सिद्ध करते हैं। शेखर के चरित्र को हम इन बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं -

- **सहृदय व्यक्तित्व** : शेखर एक अत्यंत सहज और सहृदय व्यक्तित्व का स्वामी है। वह एक भावुक और संवेदनशील कवि है। वह प्रकृति के हर रूप में कविता का आस्वादन करता है। जब उसके द्वारा लिखे गए गीत को छाया राज दरबार में गाती है, तो सम्राट उस गीत को सुनकर इतने प्रभावित होते हैं कि उसे लिखने वाले कवि शेखर को राजकवि घोषित कर देते हैं। शेखर को राह पर चलती हुई वृदधा भिखारिन में भी कविता के और कला के दर्शन होते हैं।
- **आत्मिक प्रेमी :** शेखर के चरित्र का अगला पक्ष उसके छाया के प्रति आत्मिक प्रेम से व्यक्त होता है। वह एक अत्यंत निर्धन परिवार का प्रतिभाशाली कवि है। वह अपनी प्रेयसी के जीवन स्तर को जानता है। वह उसे प्रेम तो करता है किंतु उसे पाने की चाह नहीं रखता। वह अपनी सीमाओं का सदैव ध्यान रखता है। छाया के प्रति उसके प्रेम की पराकाष्ठा 'भोर का तारा' काव्य रचना के रूप में फलीभूत होती है।
- **संवेदनशील कवि :** शेखर एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है। वह भावनाओं में आकंठ डूबा रहता है, किंतु कर्तव्य से विमुख नहीं होता है। शेखर अपने मित्र

माधव के द्वारा छाया का नाम लिए जाने पर झेंप जाता है। वह प्रकृति के कण-कण के प्रति संवेदनशील है।

- **देशभक्त कवि :** जब सम्राट द्वारा शेखर को राजकवि नियुक्त किया जाता है, तो वह राजा को अपने कवि कर्म से प्रसन्न करते हुए उसके लिए कविताएँ रचता है। यहाँ तक कि वह अपने प्रेम के प्रतीक 'भोर का तारा' काव्य ग्रन्थ को भी राजा को भेंट करने का निश्चय करता है। किंतु जब उसे देश पर विदेशी हूणों के आक्रमण का पता चलता है, तो वह अपनी रचना 'भोर का तारा' को अग्नि को समर्पित करके देश के लिए भैरवी राग गाने चल पड़ता है।
- **कर्तव्य परायण एवं बलिदानी :** शेखर को अपने कर्तव्य का पूर्ण ज्ञान है। वह देश के प्रति अपने कर्तव्य को इतनी वरीयता देता है कि जब वह छाया को अपनी अनुपम कृति 'भोर का तारा' संभाल कर रखने का वचन दे रहा था, तो उसी समय माधव के मुख से देश पर आई विपत्ति को सुनकर वही कृति अग्नि को समर्पित करते हुए स्वयं की प्रेम भावनाओं की बलि दे देता है।

बोध प्रश्न

- शेखर के चरित्र की चार विशेषताएँ बताइए।

छाया : 'भोर का तारा' एकांकी के नायक शेखर की प्रेरणा का स्रोत उसकी प्रेयसी छाया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं उसे विशिष्ट बनाती है।

- **सुंदरता और उदात्तता की प्रतिमूर्ति** : लेखक ने छाया के चरित्र का निर्माण इस प्रकार किया है कि जहाँ एक ओर वह सुंदरता की प्रतिमूर्ति प्रतीत होती है, वहीं दूसरी ओर चित्त की उदारता उसे और भी आकर्षक बना देती है। वह भारतीय कुलीन नारी के श्रेष्ठ गुणों से युक्त है। चंचलता के साथ गंभीरता को धारण करने वाली एक सुघड़ स्त्री है।
- **प्रेममयी नारी :** छाया प्रेम की भावना में आकंठ डूबी भावुक स्त्री है। वह प्रकृति के हर रूप में प्रेम को देखती है। यही कारण है कि शेखर जैसा भावुक कवि उसके हृदय पर राज करने लगता है।
- **स्त्रीत्व का गौरव :** छाया स्त्रीत्व को प्रकृति की अनुपम कृति मानती है। वह स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे का पूरक तत्व मानते हुए स्त्रीत्व पर गौरव करती हुई स्त्री को पुरुष के लिए प्रेरणा का अवलंब मानती है।
- **सरल एवं बुद्धिमती :** छाया का स्वभाव अत्यंत सरल है। वह एक बुद्धिमान स्त्री है। शेखर के द्वारा एक कवि, गायिका और राजा की कहानी सुनकर सहज ही

पहचान लेती है कि राजा सम्राट स्कंदगुप्त है, कवि शेखर तथा गायिका स्वयं छाया है।

- **कुतूहलप्रिय भीरु स्वभाव :** छाया का सरल मन प्रकृति के प्रति कुतूहल से भरा हुआ है। किंतु स्त्री हृदय का सहज ही भयभीत होना उसके स्वभाव को भीरु बनाता है। शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य पूरा होने पर वह अत्यंत प्रसन्न होती है। किंतु उसी क्षण उस ग्रंथ की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठती है।
- **सहनशील उदारमना नारी :** छाया एक उदार हृदया नारी है। स्वयं राजकुल से जुड़ी होने पर भी एक साधारण कवि शेखर के प्रेम में डूबी हुई उसकी प्रेरणा बनी रहती है। जब हूणों के साथ युद्ध करते हुए देश की रक्षा के लिए छाया का भाई देवदत्त वीरगति को प्राप्त होता है तो वह अपने भाई को वीरांगना की तरह श्रद्धांजलि देती है। अपने प्रेमी शेखर द्वारा देश के सैनिकों को जगाने के लिए 'भोर का तारा' ग्रंथ जलाए जाने पर अंत में मौन धारण करते हुए इस दुख को सहन करती है।

बोध प्रश्न

- छाया के चरित्र की तीन विशेषताएँ बताइए।

4.2.4 'भोर का तारा' एकांकी का वैशिष्ट्य

'भोर का तारा' जगदीश चंद्र माथुर की अनुपम कृति है। इस एकांकी की रचना उन्होनें अपने प्रयाग प्रवास के दौरान की। इस एकांकी में लेखक की शिल्प एवं संवेदना की गहराई द्रष्टव्य है। देश की बदलती परिस्थिति तथा छात्र जीवन से ही नाटकों में भाग लेते रहने के कारण माथुर जी समकालीनता से गहरे जुड़े हुए थे। भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों तथा घटनाओं ने उनकी लेखनी को ओजस्विता प्रदान की। भारत के इतिहास पर गौरवपूर्ण दृष्टि एवं पकड़ होने के कारण उनकी रचनाओं में एक विशेष प्रकार की जीवंतता के दर्शन होते हैं। माथुर जी के लेखन में एक विशेष प्रकार का कौतूहल एवं प्रेम की भावाकुलता लक्षित की जा सकती है।

'भोर का तारा' एकांकी में कवि प्रकृति के परिवेश में ऐसा रचा बसा है कि इसमें निहित छायावादी संवेदना को पाठक सहज ही देख पाते हैं। लेखक का यथार्थ के प्रति अनुराग ही उसकी भावाकुलता को गति प्रदान करता है। जगदीशचंद्र माथुर कृत 'भोर का तारा' एकांकी एक राष्ट्रीय भावना युक्त एकांकी है। एकांकी में जब कथानायक शेखर कविता को ओजस्विता के साथ गाता है तो प्रेम भाव वाले कवि के मुख से भैरवी राग सुनकर दर्शक को शृंगार एवं वीर रस के चरम उत्कर्ष की अनुभूति होती है। लेखक ने कथानक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का निर्माण इस प्रकार किया है कि तत्कालीन परिस्थिति में साधारण जन को प्रेरित किया जा सके। शेखर उज्जयिनी प्रांत का भावना प्रधान प्रतिभाशाली कवि है। उसका मित्र माधव गुप्त साम्राज्य का

एक वरिष्ठ कर्मचारी है। लेखक ने इसी देशकाल के अनुरूप चरित्रों और घटनाओं का सृजन किया है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्यों चुनी?

एकांकी की प्रेरणा बिंदु छाया गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के मंत्री देवदत्त की बहन है। शेखर और छाया एक - दूसरे से अत्यंत प्रेम करते हैं। अतः देवदत्त अपनी बहन छाया का विवाह शेखर से कर देता है। शेखर अपनी पत्नी छाया की प्रेरणा से 'भोर का तारा' जैसे मधुर काव्य की रचना करता है। 'भोर का तारा' कृति को छाया अपने और शेखर के प्रेम का प्रतीक मानती है। देवदत्त तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र के विद्रोह को दबाने के लिए जाता है, तक्षशिला जाते समय वह छाया - शेखर को परिणय सूत्र में बांध जाता है। तक्षशिला से आकार माधव छाया और शेखर को बताता है कि देशद्रोही वीरभद्र के हूणों का साथ देने के कारण युद्ध में छाया का भाई देवदत्त वीरगति को प्राप्त हो गया है। देवदत्त ने अपने अंतिम क्षणों में माधव से यह कहा कि वह पूरे देश से हूणों के विरुद्ध सहायता की याचना करे। इसके लिए माधव शेखर और छाया से सहायता मांगता है। जिस समय माधव शेखर से यह प्रार्थना करने आता है, उसी समय शेखर अपने और छाया के प्रेम के प्रतीक 'भोर का तारा' काव्य के पूर्ण होने की सूचना छाया को देता है। शेखर और छाया की प्रसन्नता को माधव की इस बात से झटका लगता है कि शेखर गुप्त साम्राज्य का राजकवि है, अतः राष्ट्र पर आए संकट के बादल को हटाने के लिए उसे राष्ट्र की सोई हुई जनता को जगाने हेतु प्रेम काव्य के स्थान पर देशप्रेम से परिपूर्ण काव्य की रचना करनी चाहिए। माधव का मानना है कि जनता में ओजस्विता रूपी प्राण फूँकते ही हूण देश छोड़कर भाग जाएँगे।

बोध प्रश्न

- एकांकी में छाया कौन है?
- देवदत्त तक्षशिला क्यों जाता है?
- देवदत्त ने माधव से क्या कहा?
- माधव की क्या मान्यता है?

माधव की पुकार को सुनकर शेखर अपने शृंगार काव्य 'भोर का तारा' को अग्नि को भेंट करते हुए अपने भैरव घोष से राष्ट्र की आत्मा को जगाने के लिए चल पड़ता है। अब वह 'भोर का तारा' नहीं, प्रभात का सूर्य बनने हेतु निकल पड़ता है। एकांकी में छाया जब अपने भाई की वीरगति तथा शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य ग्रन्थ जलाए जाने पर विक्षिप्त सी हो जाती है, तो माधव छाया को ऐसी हालत में देखकर घर की खिड़की खोल देता है। एकांकी में इस दृश्य का नाट्य प्रस्तुतीकरण होता है। जहाँ माधव के खिड़की खोलने पर छाया को शेखर अपने भैरव

राग से जन मन को जगाने का यत्न करता हुआ दिखाई देता है।

बोध प्रश्न

- माधव की पुकार सुनकर शेखर क्या करता है?
- छाया विक्षिप्त सी क्यों हो जाती है?

जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी नाटक 'भोर का तारा' को अभिनेयता की दृष्टि से भी मील का पत्थर माना जाता है। । एकांकी में दो विपरीत रसों - शृंगार और वीर - की सर्जना की गई है जो विरूद्धों के सामांजस्य का सुंदर उदाहरण है। आलोचकों के अनुसार इस एकांकी की एक सीमा भी है। वह यह कि इसमें गुप्तकालीन देशकाल अधिक प्रभावशाली रूप में सामने नहीं आ सका है। यह इसके परिवेश चित्रण की कमज़ोरी मानी जा सकती है। संवाद की काव्यात्मकता पाठकों को खूब आकर्षित करती है। देशभक्ति जैसे उच्च आदर्श निश्चय ही प्रेरणार्थक बन पड़े हैं।

बोध प्रश्न

- एकांकी में दो मुख्य रस कौन से हैं?
- आलोचकों के अनुसार इस एकांकी की क्या सीमा है?

जगदीश चंद्र माथुर की यह कृति निश्चय ही एकांकी साहित्य की गरिमा में वृद्धि करने वाली है। एकांकी के पात्र शेखर, माधव और छाया की संवादात्मक भूमिका तथा गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त विक्रमादित्य एवं देवदत्त, वीरभद्र, तोरमाड हूण के चरित्र को शेखर अथवा माधव के संवादों माध्यम से बताया गया है। शेखर का उज्ज्वल चरित्र ही एकांकी का प्राण है। शेखर एक राष्ट्रीय चेतना युक्त कवि है। कवि राष्ट्रीयता की कसौटी पर शत-प्रतिशत खरा उतरता है। 'भोर का तारा' एकांकी के माध्यम से लेखक ने मानो अपनी समस्त भावनाएं उड़ेल कर रख दी है। लेखक द्वारा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर जिस तरह से राष्ट्रीय जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है, निश्चय ही तत्कालीन संदर्भ में प्रासंगिक एकांकी कही जा सकती है। मानव जीवन में शांति के क्षणों में प्रेम और शृंगार रस का पान करने वाला कवि शेखर जब देश पर विपत्ति आती है तो एक क्षण की भी देर नहीं किए बिना भैरवी राग छेड़ने को उद्यत हो जाता है।

बोध प्रश्न

- शेखर की राष्ट्रिय चेतना कैसे प्रकट होती है?

शीर्षक का औचित्य

प्रायः किसी भी कृति की रचना के पीछे रचनाकार की विशेष दृष्टि निहित होती है। लेखक की रचना का उद्देश्य मात्र मनोरंजन भी हो सकता है अथवा वह किसी विशेष आशय को लेकर लिखता है तो आरंभ में उसे स्पष्ट कर देता है। जगदीशचंद्र माथुर ने अपने आधुनिक समाज के यथार्थ को विशेष महत्व देते हुए सामान्य समस्याओं को लेकर कई एकांकियों की रचना की है। सामाजिक विषमता हो या जीवन यात्रा के विविध पड़ावों की विषमता, पारंपरिक रूढ़ियों तथा नए-पुराने मूल्यों के बीच टकराव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों को उन्होंने अपने एकांकी का विषय बनाया है। लेखक ने बहुत ही संजीदगी के साथ एकांकी इस का नाम 'भोर का तारा' रखा है, क्योंकि 'भोर का तारा' जीवन को नए ढंग से जीने की प्रेरणा देता है। स्कंदगुप्त जैसे महाप्रतापी राजा ने बहुत सोच-समझकर शेखर जैसे साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रतिभाशाली व्यक्ति को राजकवि के पद पर नियुक्त किया। जिस समय लेखक ने इस एकांकी की रचना की उस समय में भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतन्त्रता आंदोलन चल रहा था, और भारतीय जनता विदेशियों के खिलाफ कमर कसे खड़ी थी। यही स्थिति तोरमाड हूण के भारत पर आक्रमण के समय थी, उस समय भी जनता अपने सम्राट के साथ खड़ी हुई देखी गई। देश पर विपत्ति आने पर आम जन द्वारा किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सक्रिय सहयोग देश के सम्मान की रक्षा के काम आता है। 'भोर का तारा' एकांकी का राजनीतिज्ञ माधव लोक मन को राजनीति सिखाने के लिए शेखर से देश के लिए उसकी ओजस्वी वाणी माँगता है। कोमल हृदय कवि शेखर एक ओर अपनी प्रेयसी को रजनी बाला के प्रभात मिलन की कहानी सुना रहा होता है, तो उसी समय दूसरी ओर रजनी बाला के जाने के बाद उसकी एकटक राह देखने वाला अकेला भोर का तारा अपने प्रिय की राह देखता है। छाया भी एकांकी में शेखर के प्रयाण के बाद भोर का तारा बनी उसकी राह देखती रहती है।

बोध प्रश्न

- कथानायक शेखर की कहानी में भोर का तारा किसकी राह देखता है?

भावुकता बनाम यथार्थ

प्रस्तुत एकांकी में परिस्थित्यों के बदलाव के कारण भावुकता और यथार्थ का द्वंद्व अच्छी तरह उभरकर सामने आता है।

माधव को राजनीति से जुड़ने के बाद भी शेखर की संगति बहुत प्रिय लगती है। वह जब शेखर को उसकी कल्पना की दुनिया से यथार्थ की भाव भूमि पर लाता है तो कहता है, तुम्हारी परियों और तारों की दुनिया में मैं मनुष्य की दुनिया लेकर आ गया। शेखर को तो राजपथ पर बैठी भिखारिन में भी कविता झलकती है। जब माधव उसे भिखारिन को भीख देने की बात पर

दयालुता का उल्लेख करता है तो, शेखर भावुक होकर कहता है - "नहीं, यह तो ईश्वरीय कृति की एक अनुपम कला है।"

लेखक ने दर्शाया है कि राजा का मंत्री देवदत्त है तो, मंत्री की बहन राज्योत्सव की गायिका छाया है। छाया एक साधारण से कवि की भावना प्रधान हृदय की बंदिनी है और वह कवि अपने यथार्थ से पूर्णतया परिचित है कि छाया और वह नदी के दो किनारों की भाँति हैं, जो कभी नहीं मिल सकते। इतिहास गवाह है कि भारत को विदेशों से हानि जयचंद, वीरभद्र जैसे नागरिकों ने ही हमेशा पहुंचाई है। वीरभद्र के विद्रोह को दबाने के प्रयास में देवदत्त जैसे महान देशभक्तों की बलि चढ़ती रही है।

किस्सागोई का समावेश

विवेच्य एकांकी में कथा प्रवाह के बीच-बीच में एकांकीकार ने किस्सागोई का प्रयोग किया है। जैसे शेखर राजकवि बनने के बाद छाया को एक दिन राज दरबार की बातें कहानियों के माध्यम से सुनाता है। वह छाया से कहता है कि एक राजा के दरबार में एक कवि था, जो नित्य प्रतिदिन एक कविताएं सुनाकर राजा को प्रसन्न करता था किंतु एक बार राजा के द्वारा यह पूछे जाने पर कि वह केवल प्रातः ही कविताएं क्यों करता है? किसी और समय क्यों नहीं? तो कवि जवाब नहीं दे पाता है। राजा अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु वेश बदलकर उस कवि के घर के पास पहुंच जाता है। वह देखता है कि जैसे ही भोर होती है एक स्त्री की बहुत ही मधुर ध्वनि सुनकर कवि की लेखनी स्वतः चलने लगती है। राजा भी उस ध्वनि को सुनकर आत्मविभोर हो जाता है। इसके बाद राजा उस कवि से कोई प्रश्न नहीं करता है। इस प्रकार लेखक एकांकी में रोचकता का समावेश करते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो लेखक की दृष्टि से एकांकी को चिरकालिक कृति बनाने का हरसंभव प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कलात्मक संवाद एवं शृंगार रस का एक साथ ही परिपाक किया गया है। यह एकांकी को सर्वकालिक बनाने के लिए पर्याप्त है।

4.3 पाठ सार

'भोर का तारा' हिंदी एकांकी-साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित नाटककार जगदीश चंद्र माथुर की प्रसिद्ध रचना है। यह एक भावना प्रधान राष्ट्रीय एकांकी है, जिसकी रचना ऐतिहासिक वातावरण के फलक पर की गई है। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि वही साहित्य सार्थक है जिसमें राष्ट्रीय जीवन की आत्मा झलकती हो।

'भोर का तारा' एकांकी की कथावस्तु का चयन गुप्तकालीन ऐतिहासिक वातावरण से किया गया है। कथानायक शेखर उज्जयिनी का एक प्रतिभाशाली कवि है। गुप्त साम्राज्य का उच्च

पदासीन कर्मचारी माधव शेखर का अभिन्न मित्र है। छाया कथानायिका है तथा वह गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के मंत्री देवदत्त की प्रिय बहन तथा शेखर की प्रेयसी भी है। जब गुप्त साम्राज्य काल में तोरमाड हूण अपने सैनिकों के साथ चढ़ाई करता है तो देवदत्त उसको रोकने के लिए सेना की टुकड़ी लेकर जाता है। देवदत्त माधव के साथ जाने लगता है तो शेखर और छाया को परिणय सूत्र में बांधते हुए आगे बढ़ता हैं। तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र का ऐसे समय में विद्रोह देश की स्थिति को और भी नाजुक बना देता है, वह स्थिति को और अधिक बिगाड़ देता है। वीरभद्र न केवल गुप्त साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करता है अपितु विदेशी आक्रांता का साथ देकर स्थिति को हाथ से बाहर कर देता है। देवदत्त अपने सैनिकों के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देता है।

एकांकी में एक पक्ष प्रेम का है तो, दूसरा पक्ष युद्ध का है। प्रेम का पक्ष भी कुछ ऐसा कि दोनों ओर प्रेम पलता है। छाया प्रेयसी से पत्नी बनकर शेखर की कवि प्रतिभा का प्रेरणास्रोत बनती है। उसकी प्रेरणा से शेखर 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ की रचना करता है। शेखर छाया की प्रेरणा है और भावना भी है। वह शेखर की कविता को कुंदन की भांति बनाने की प्रेरणा देती है और उसकी सुषुप्त शक्तियों को जगाते हुए अद्‌भुत कृति लिखवा लेती है। शेखर अपने समस्त प्रेममयी उद्‌गार को उड़ेल कर 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ छाया से छुपाकर पूरी करता है और जिस दिन उसका 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ पूरा होता है, उसी दिन उसका विपरीत अंत भी घटित होता है। क्योंकि जिस समय शेखर काव्य ग्रंथ के पूरा होने की खुशी छाया से बांट रहा था, उसी समय शेखर के मित्र माधव का प्रवेश होता है। वह तक्षशिला में हूणों की बर्बरता देख कर आया था। वह देश की रक्षा के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट गया था। वह राष्ट्र की सोई हुई शक्तियों को जगाने के लिए शेखर से प्रार्थना करता है। शेखर अपने मित्र माधव की प्रेरणा से इस नए कर्तव्य की ओर प्रेरित होता है। वह वर्षों से प्रेम पूर्ण यत्नों से लिखे अपने काव्य को बेझिझक अग्नि में समर्पित कर देता है। इसके पश्चात बड़ी ही स्वाभाविक गति से बाहर निकलता है और जनता जनार्दन को जगाने के लिए भैरवी राग छेड़ देता है। व्यक्तिगत प्रेम के समक्ष देशप्रेम के इस तरह के उदाहरण को प्रस्तुत करने में लेखक की कोई उपमा नहीं दी जा सकती है। निश्चय ही यह एकांकी एक ऐतिहासिक एवं मानवीय धरोहर के रूप में प्रासंगिक है।

4.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. जगदीशचंद्र माथुर छायावादी सौंदर्यबोध से प्रभावित एकांकीकार हैं।
2. 'भोर का तारा' में सुंदर और उद्‌दात का मोहक संयोग दिखाई देता है।
3. इस एकांकी में शृंगार और वीररस का समावेश विरूद्धों के सामंजस्य का सुंदर उदाहरण है।

4. जगदीशचंद्र माथुर ने काल, स्थान और कार्य रूपी संकलनत्रय का सफल निर्वाह किया है।

5. 'भोर का तारा' यों तो गुप्त काल की पृष्ठभूमि में स्थित है, लेकिन ब्रिटिश राज के विरुद्ध स्वतन्त्रता आंदोलन भी इसमें अभिव्यंजित है।

4.5 शब्द सम्पदा

1. आकंठ	=	भरपूर, पूरी तरह से
2. आसक्ति	=	प्रेम, अनुराग
3. उदात्त	=	ऊँचा, महान
4. कुतुहल	=	उत्सुकता, आश्चर्य
5. चेष्टा	=	कोशिश, प्रयत्न
6. तत्कालीन	=	उस युग का
7. तत्पर	=	तैयार, उद्यत
8. दायित्व	=	जिम्मेदारी
9. पराकाष्ठा	=	सीमांत, चरम सीमा
10. प्रेयसी	=	प्रेमिका
11. भीरु	=	कायर, डरा हुआ
12. लक्षित	=	निशाना, उद्देश्य
13. वरिष्ठ	=	श्रेष्ठ, महान
14. विन्यास	=	जमाकर रखना, संवारना
15. विमुख	=	विरत, प्रतिकूल
16. शृंखलाबद्ध	=	व्यवस्थित, कतार से
17. संवेदनशील	=	भावुक, सहृदय
18. सर्जना	=	रचना, निर्माण
19. सुघड़	=	क्षमता, पात्रता
20. प्रभंजन	=	प्रचंड वायु

4.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

4.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. हिन्दी साहित्य में प्रथम एकांकी होने का गौरव किस रचना को प्राप्त है?

A. भोर का तारा B. अंधेर नगरी **C. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति** D. एक घूँट

2. जगदीशचंद्र माथुर का जन्म उत्तर प्रदेश के किस स्थान पर हुआ था?

A. वाराणसी B. इलाहाबाद C. प्रयाग **D. खुर्जा**

3. एकांकी के पात्र शेखर को राजकवि के रूप में किसके द्वारा नियुक्त किया गया था?

A. मंत्री देवदत्त B. माधव **C. सम्राट स्कंदगुप्त** D. क्षत्रप वीरभद्र

4. 'भोर का तारा' एकांकी में किस द्वंद्व को प्रमुखता से उभारा गया है?

A. अमीर बनाम गरीब **B. वैयक्तिक प्रेम बनाम राष्ट्रप्रेम**

C. राजसी सुख बनाम वैराग्य D. परंपरा बनाम आधुनिकता

5. एकांकी के अंत में शेखर किस प्रतीकात्मक रूप में उभरता है?

A. रजनी का नायक B. अग्नि का रक्षक **C. प्रभात का सूर्य** D. विक्षिप्त प्रेमी

6. साहित्य में 'संकलन त्रय' का अर्थ किन तीन तत्वों का मेल है?

A. कवि, गायिका और राजा B. प्रेम, विरह और बलिदान

C. पात्र, परिवेश और भाषा **D. काल, स्थान और कार्य**

7. तक्षशिला में हूणों के आक्रमण के दौरान किस पात्र ने देशद्रोही की भूमिका निभाई?

A. वीरभद्र B. देवदत्त C. तोरमाड D. माधव

8. आलोचकों के अनुसार 'भोर का तारा' एकांकी की सीमा या कमजोरी क्या है?

A. पात्रों की संख्या बहुत अधिक होना

B. गुप्तकालीन परिवेश का प्रभावशाली चित्रण न होना

C. संवादों में काव्यात्मकता का अभाव

D. देशभक्ति के संदेश की कमी

9. शेखर ने जब अपनी प्रेम-रचना 'भोर का तारा' जला दी, तो उसने जनता को जगाने के लिए कौन सा राग चुना?

A. शांति राग **B. भैरवी राग** C. मेघ मल्हार D. दीपक राग

10. छाया के चरित्र के बारे में कौन सा कथन सही है?

A. वह शेखर की प्रेरणा का स्रोत और सहनशील नारी है

B. वह केवल राजसी वैभव की आकांक्षी है

C. वह हूणों के आक्रमण का समर्थन करती है

D. वह युद्ध में सक्रिय रूप से भाग लेती है

खंड (ब)

4.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी के पात्र शेखर का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. छाया के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
3. 'भोर का तारा' के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।
4. 'भोर का तारा' एकांकी की कथावस्तु को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।
5. 'भोर का तारा' एकांकी की ऐतिहासिकता का विवेचन कीजिए।

खंड (स)

4.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' एकांकी की विवेचना कीजिए।
2. 'भोर का तारा' के आधार पर जगदीशचंद्र माथुर की एकांकी दृष्टि पर प्रकाश डालिए।
3. 'भोर का तारा' एकांकी के महत्वपूर्ण पात्रों का विश्लेषणात्मक परिचय दीजिए।
4. 'भोर का तारा' के आधार पर वैयक्तिक प्रेम पर राष्ट्रप्रेम की सर्वोच्चता को सिद्ध कीजिए।

4.7 पठनीय पुस्तकें

1. जगदीशचंद्र माथुर रचनावली. खंड 2. (सं) अवस्थी सुरेश.
2. हिंदी साहित्य कोष. भाग 2. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.
3. हिंदी भाषा एवं साहित्य. सुरेन्द्र शर्मा.

इकाई 5 : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.2 मूल पाठ : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

5.2.1 रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा

5.2.2 रेखाचित्र पर महादेवी वर्मा का चिंतन

5.2.3 रेखाचित्र की विधागत विशेषताएँ

5.2.4 रेखाचित्र और कहानी में अंतर

5.2.5 रेखाचित्र, जीवनी और संस्मरण में अंतर

5.2.6 रेखाचित्र और व्यंग्य चित्र में अंतर

5.2.7 रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण

5.2.8 कुछ प्रमुख रेखाचित्र लेखक

5.3 पाठ सार

5.4 पाठ की उपलब्धियाँ

5.5 शब्द संपदा

5.6 परीक्षार्थ प्रश्न

5.7 पठनीय पुस्तकें

5.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप रेखाचित्र के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे। वास्तव में विधा (फ्रेंच - जीनर / अँग्रेजी - Genre) का सामान्य अर्थ प्रकार, किस्म, वर्ग या श्रेणी है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग विविध प्रकार की रचनाओं को वर्ग या श्रेणी में बांधने के लिए किया जाता है। यह भी आप जानते हैं कि विधाओं की उपविधाएं भी होती हैं। गद्य और पद्य दो प्रमुख साहित्यिक विधाएँ हैं और निबंध आदि गद्य की विविध विधाएँ हैं। यह भी जान लेना होगा कि विधाएँ अस्पष्ट श्रेणियाँ हैं । इनकी कोई निश्चित सीमा-रेखा नहीं होती। रेखाचित्र भी एक विधा है। प्रायः रेखाचित्र गद्य में लिखे जाते रहे हैं। रेखाचित्र जैसी ही एक दूसरी विधा संस्मरण भी है। किन्तु रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर भी है और समानता भी। रेखाचित्र

आधुनिक युग की अकाल्पनिक विधा है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति पर ही नहीं, वस्तु और पशु-पक्षी आदि पर भी लिखे जा सकते हैं। जीवन के यथार्थ अनुभवों का सहारा लेकर बनाए गए शब्द चित्र विधा के रूप में रेखाचित्र कहे जाते हैं। रेखाचित्र में यथार्थ की अनेक अंतरंगताओं को रेखांकित किया जाता है। इस इकाई में आप रेखाचित्र के विषय में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- रेखाचित्र के अर्थ और परिभाषा से अवगत हो सकेंगे।
- रेखाचित्र का विधागत स्वरूप जान सकेंगे।
- रेखाचित्र के विविध तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रेखाचित्र का विश्लेषण करने के आधारों से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के प्रमुख रेखाचित्र-लेखकों और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- रेखाचित्र और कहानी के अंतर और समानता को पहचान सकेंगे ।
- रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर और समानता के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे ।
- रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताओं का अंकन करते हुए उसके विधागत स्वरूप का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

5.2 मूल पाठ : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

रेखाचित्र गद्य की एक नवीन विधा है। अपनी व्यापक संवेदनशीलता और सुंदर कलात्मक शैली के कारण यह एक लोकप्रिय विधा बन गई है। आगे हम इसके अर्थ, पर्याय, परिभाषा, अवधारणा आदि की चर्चा करेंगे। साथ ही यह भी देखेंगे कि हिंदी साहित्य में इस विधा का उद्भव कब और कैसे हुआ तथा किन साहित्यकारों ने इस विधा का आगे विकास किया।

5.2.1 रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा

रेखाचित्र शब्द 'रेखा' और 'चित्र' के मेल से बना है । इसका अर्थ है - रेखाओं से बना हुआ चित्र। 'रेखाचित्र' के अतिरिक्त हिंदी में 'शब्दचित्र' का प्रयोग भी मिलता है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'शब्दचित्र' और महादेवी वर्मा ने 'स्मृतिचित्र' शब्द का प्रयोग किया है। फिर भी 'रेखाचित्र' शब्द ही अधिक प्रचलित और मान्य है। यह शब्द ही अधिक पारदर्शी प्रतीत होता है क्योंकि रेखाचित्र के समान ही इन शब्द चित्रों में विशेषता दृष्टिगोचर होती है। इसलिए इस विधा के लिए

'रेखाचित्र' नामकरण ही सर्वाधिक प्रचलित और स्वकृत है।

हिंदी साहित्यकोश के अनुसार - "रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।"

हिंदी में रेखाचित्र शब्द अँग्रेजी के 'स्केच' शब्द की नाप-तोल पर गढ़ा गया है। 'स्केच' चित्रकला का अंग है। इसमें चित्रकार कुछ इनी-गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को अंकित कर देता है। स्केच रेखाओं की बहुलता और रंगों की विविधता में अंकित कोई चित्र नहीं है, न वह एक फ़ोटो ही है, जिसमें नन्हीं से नन्हीं और साधारण से साधारण वस्तु भी खिंच आती है। साहित्य में जिसे रेखाचित्र कहते हैं, उसमें भी कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है। इसमें साधन शब्द हैं, रेखाएँ नहीं। इसीलिए इसे 'शब्दचित्र' भी कहते हैं। कहीं-कहीं इसका अंग्रेज़ी नाम 'स्केच' भी व्यवहृत होता है। विद्वानों के अनुसार रेखाचित्र की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

रेखाचित्र किसी एक व्यक्ति, स्थान, घटना, दृश्य या उपादान का ऐसा वस्तुगत वर्णन होता है, जो संक्षेप में उसकी बाह्य विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। बाह्य विशेषताओं के भीतर ही उसकी आंतरिक विशेषताओं का समाहार होता है। - डॉ. हरबंश लाल

रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएँ हों, पर मूर्त रूप अर्थात् उतार-चढ़ाव दूसरे शब्दों में, कथानक का उतार-चढ़ाव आदि न हो, तथ्य का उद्घाटन मात्र हो। - डॉ. नगेन्द्र

रेखाचित्र चित्रकला और साहित्य के सुन्दर सुहाग से उद्‌भूत एक अभिनव कला रूप है। रेखाचित्रकार साहित्यकार के साथ ही साथ चित्रकार भी होता है। रेखाचित्रकार मनः पटल परव विशृंखल रूप में बिखरी हुई शत-शत स्मृति रेखाओं में अपनी अंकित कला की तूलिका से सहानुभूति के रंग में रंजित कर जीते जागते शब्दचित्र में परिणत कर देता है। - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

संपर्क में आए किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा संवेदना को जगानेवाली सामान्य विशेषताओं से युक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप को, देखी-सुनी या संकलित घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस प्रकार उभारकर रखना कि उसका हमारे हृदय में एक निश्चित प्रभाव अंकित हो जाए रेखाचित्र या शब्दचित्र कहलाता है। - डॉ. भगीरथ मिश्र

इन परिभाषाओं का अवलोकन करने से इन में निम्नलिखित बिन्दु समान रूप से मिलते हैं-

1. रेखाचित्र का विषय या केंद्र कोई व्यक्ति, वस्तु, संदर्भ, पशु-पक्षी, घटना या भाव हो सकता है।
2. रेखाचित्र में चित्रात्मकता के माध्यम से व्यक्ति के बाह्य तथा आंतरिक व्यक्तित्व को उभरा जाता है।
3. तटस्थता के अभाव में रेखाचित्र की स्पष्ट छवि नहीं बनती।
4. रेखाचित्र में शब्द प्रयोग में सावधानी बरती जाती है, कम शब्दों में अधिक लिखा जाता है।
5. भाषा की जीवंतता और मुहावरेदानी रेखाचित्र के लिए अनिवार्य है।

रेखाचित्र में उपर्युक्त लक्षण भी निर्धारित किए जा सकते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक रेखाचित्र-लेखक इन सबका प्रयोग करे।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र की एक परिभाषा लिखिए।
- रेखाचित्र के दूसरे नाम क्या है? रेखाचित्र के चार प्रमुख लक्षण गिनाइए।

5.2.2 'रेखाचित्र' पर महादेवी वर्मा का चिंतन

प्रख्यात छायावादी कवयित्री और रेखाचित्र लेखिका महादेवी वर्मा ने 'रेखाचित्र' पुस्तक की भूमिका में रेखाचित्र को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है -

"रेखाचित्र शब्द चित्रकला से साहित्य में आया है, परंतु अब वह शब्दचित्र के स्थान में रूढ़ हो गया है। चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगहीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसकी विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब हम उसे रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं। साहित्य में साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके, परंतु दोनों में अंतर है। चित्रकार चाक्षुष प्रत्यक्ष के आलोक में बैठे हुए व्यक्ति का रेखाचित्र आंक सकता है, कभी कहीं देखे हुए व्यक्ति का रेखाचित्र नहीं अंकित हो पाता और दीर्घकाल के उपरांत अनुमान से भी ऐसे चित्र नहीं आँके जाते। इसके विपरीत साहित्यकार अपना शब्दचित्र दीर्घकाल के अंतराल के उपरांत भी अंकित कर सकता है। उसने जिसे कभी नहीं देखा हो उसकी आकृति मुखमुद्रा आदि को शब्दों में बांध देना कठिन नहीं होता। शब्द के लिए जो सहज है, वह रेखाओं के लिए कठिन है। 'रेखाचित्र' वस्तुतः अँग्रेजी के 'पोर्टरेट पेंटिंग' के समान है। पर साहित्य में आकर इस शब्द ने बिम्ब और संस्मरण दोनों का कार्य सरल कर दिया है।"

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के 'रेखाचित्र' संबंधी उपर्युक्त विचारों का सार अपने शब्दों में लिखिए।
- चित्रकार और साहित्यकार के रेखाचित्र में क्या अंतर होता है?

5.2.3 रेखाचित्र की विधागत विशेषताएँ

रेखाचित्र की सर्वप्रथम विशेषता है कि इसके लेखन में 'विस्तार' के स्थान पर 'संक्षेप' होता है। रेखाचित्र के लिए विषय का बंधन नहीं रहता, सब प्रकार के विषयों का इसमें समावेश हो सकता है। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं, बल्कि 'तीव्रता' में होती है। रेखाचित्र पूर्ण चित्र नहीं है केवल रूपरेखा है। वह व्यक्ति, वस्तु, घटना, आदि का एक निश्चित दृष्टिबिन्दु में प्रस्तुत किया गया प्रतिबिम्ब है, जिसमें विवरण की न्यूनता के साथ-साथ तीव्र संवेदनशीलता वर्तमान रहती हैं।

रेखाचित्र के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव भी बहुत महत्वपूर्ण है - इसकी विषय वस्तु ऐसी होती है, जिसे विस्तृत वर्णन और रंगों की अपेक्षा न हो और जो कुछ ही रेखाओं के प्रयोग से चमक उठे। चाँदनी रात में ताजमहल की शोभा को रेखाचित्र में बांधा जा सकता है। पर शाहजहाँ और मुमताज़ महल की प्रेमकथा को सीमा में बांध सकना कठिन काम है।

रेखाचित्र की स्मृति में पीड़ा का बोध होता है। इस पीड़ा में बिछुड़ने की संवेदना होती है। रेखाचित्रकार जिसका वर्णन कर रहा होता है उससे अलग होने की पीड़ा और दर्द ही उसे लेखन के रूप में इस विधा को अपनाने के लिये प्रेरित करता है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर रेखाचित्र की चार विशेषताएँ बताइए।

5.2.4 रेखाचित्र और कहानी में अंतर

प्रिय छात्रो! अब तक की चर्चा से आप की समझ में यह आ गया होगा कि रेखाचित्र एक ऐसी विधा है जो अपने स्वरूप में कई दूसरी गद्य विधाओं के गुणों को समेटे हुए है। रेखाचित्र में विभिन्न विधाओं के जो गुण मिलते हैं वे इस प्रकार है -

1. कहानी के कथानक की संवेदनशीलता
2. चित्रकला के रंग और रेखाओं की सूक्ष्मता और सांकेतिकता
3. संस्मरण का स्मृति तत्व।

इन सब के मिश्रण से रेखाचित्र का स्वरूप निर्मित होता है। इसीलिए कई बार ऐसा भी प्रतीत होता है कि रेखाचित्र कहानी से मिलता-जुलता साहित्य रूप है। कहानी से इसका बहुत अधिक साम्य है। जैसे -

- दोनों में क्षण, घटना या भाव विशेष पर ध्यान रहता है
- दोनों की रूपरेखा संक्षिप्त रहती है।
- दोनों में कथाकार के विवरण और पात्रों के संवादों का प्रसंगानुसार उपयोग किया जाता है।

रेखाचित्र और कहानी के साम्य के कारण अनेक कहानियों को भी रेखाचित्र कह दिया जाता है। इसके ठीक विपरीत अनेक रेखाचित्रों को कहानी भी कह देते हैं। अभिप्राय यह है कि कहानी और रेखाचित्र में अंतर करना सरल नहीं है। इसलिए शिप्ले नामक पाश्चात्य विद्वान ने विश्व साहित्य कोश में कहा है कि -

"रेखाचित्र में कहानी की गहराई का अभाव रहता है। यही नहीं कहानी में किसी न किसी मात्रा में कथात्मकता अपेक्षित रहती है, पर रेखाचित्र में नहीं।" (शिप्ले)

रेखाचित्र में कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में भाव पूर्ण एवं सजीव अंकन है। कहानी से रेखाचित्र की निकटता है। महादेवी वर्मा ने रामा, घीसा आदि पर जो रेखाचित्र लिखे हैं उन्हें कहानी भी समझ लिया जाता है। किन्तु रेखाचित्र में कहानी जैसी गहराई नहीं होती। महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के संग्रह का नाम ही 'अतीत के चलचित्र' रखा है। इसमें अतीत के प्रति मोह झलकता है। वास्तव में महादेवी वर्मा द्वारा लिखित अनेक रेखाचित्रों को पढ़कर ही हिंदी पाठक समाज और विद्वानों का ध्यान इस विधा की ओर गया। समाज के दमित और दलित लोगों के प्रति महादेवी की करुणा और सहानुभूति इन रेखाचित्रों को सदा के लिए अमर बना देती है। इन अभावग्रस्त प्राणियों के प्रति हमारी सहानुभूति बनी रहती है।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र और कहानी का अंतर बताइए।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र की दो विशेषताएँ बताइए ।

5.2.5 रेखाचित्र, जीवनी और संस्मरण में अंतर

रेखाचित्र और जीवनी का संबंध इसलिए है क्योंकि एक प्रकार से रेखाचित्र जीवन-चरित्र का आंशिक रूप है। ये दोनों व्यक्तिकेन्द्रित और यथार्थ पर आधारित विधाएँ हैं। व्यक्तियों के जीवन पर आधारित रेखाचित्र लिखे जाते हैं, पर रेखाचित्र जीवन चरित्र नहीं है। जीवन चरित्र के लिए यथातथ्यता एवं वस्तुनिष्ठता अनिवार्य हैं। लेकिन इस दृष्टि से ये दोनों विधाएँ समान प्रतीत होती हैं कि दोनों में ही कल्पना के लिए स्थान नहीं रहता। रेखाचित्र में लेखक अपनी भावना एवं स्मृति के आधार पर विभिन्न चित्र अंकित करता है। जीवन चरित्र में समग्रता का भी

आग्रह रहता है, इसमें सामान्य और महत्वपूर्ण सब प्रकार की घटनाओं के चित्रण का प्रयत्न रहता है। लेकिन रेखाचित्रकार गिनी-चुनी रेखाओं, गिनी-चुनी महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उपयोग करता है। इन बातों से यह भी स्पष्ट है कि रेखाचित्र आत्मकथा और संस्मरण से भी भिन्न अस्तित्व रखता है।

रेखाचित्र और संस्मरण को कभी कभी अलग करके देखना कठिन हो जाता है। किन्तु रेखाचित्र में व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास देखा जा सकता है। इसमें रेखाचित्र के बहाने बाह्य के साथ आंतरिक भावों की प्रस्तुति होती चलती है। रेखाचित्रकार को तिथिक्रम या घटनाओं की क्रमबद्धता पर ध्यान नहीं देना पड़ता। प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, नामी-अनाम, धनी-निर्धन, पंडित-अज्ञानी, किसी भी वर्ग के व्यक्ति को केंद्र में रखकर रेखाचित्र लिखे जाते रहे हैं। संस्मरण में चित्रात्मकता की आवश्यकता नहीं, किन्तु रेखाचित्र की तो यह जान है। संस्मरण में विवरण की प्रधानता होती है, विवरणात्मकता का रेखाचित्र के लिए कोई खास महत्व नहीं है। जहाँ संस्मरण विवरणात्मक होते हैं, वहीं रेखाचित्र रेखात्मक। इसीलिए कहा जाता है कि प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी।

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपने ग्रंथ 'हिंदी गद्य : विन्यास और विकास' में इन विधाओं के अंतरसंबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है - "जीवनी-आत्मकथा से जुड़े, यद्यपि कि अपने में स्वतंत्र, माध्यम संस्मरण-रेखाचित्र के हैं। संस्मरण वर्णित चरित्र का गत्यात्मक चित्रण करता है देश तथा काल दोनों में, जबकि रेखाचित्र अपेक्षाकृत स्थिर अंकन है। चित्रकला में जैसा अंतर 'स्टिल लाइफ' और सामान्य दृश्यालेख में होता है कुछ वैसा अंतर रेखाचित्र और संस्मरण के बीच समझा जा सकता है। इसी के अनुरूप एक फ़र्क यह भी होगा कि रेखाचित्र अधिकतर सामान्य या कम प्रसिद्ध व्यक्तियों के बनते हैं - महादेवी की रचनासृष्टि में तो पशु-पक्षी तक सम्मिलित हैं (मेरा परिवार) - संस्मरणों के नायक प्रायः ख्यात व्यक्ति होंगे।"

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र जीवनचरित्र नहीं हैं। कैसे?
- रेखाचित्र और संस्मरण में क्या समानता-असमानता है।
- रेखाचित्र के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी का कथन स्पष्ट करें।

5.2.6 रेखाचित्र और व्यंग्य चित्र में अंतर

किसी विशेष दृष्टिबिन्दु (फोकस) से प्रस्तुत किया प्रतिबिंब रेखाचित्र का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। इस प्रतिबिंब में विवरण बहुत कम होता है लेकिन न्यूनता संवेदनशीलता बहुत तीव्र रहती है। इसीलिए रेखाचित्र लेखन में दृष्टिबिन्दु का निर्धारण सबसे अधिक महत्व रखता है। यह वह बिन्दु होता है जहाँ से लेखक अपने वर्ण्य-विषय का अवलोकन कर उसका अंकन करता है। इस दृष्टि से रेखाचित्र लिखने की कला काफी हद तक व्यंग्य चित्र अंकित करने के समान है। दोनों में दृष्टि की सूक्ष्मता तथा कम से कम स्थान में अधिक से अधिक विषय को अभिव्यक्त करने की तत्परता दिखाई देती है। रेखाचित्र के लिए संकेत सामर्थ्य भी बहुत अवश्य है। रेखाचित्रकार शब्दों और वाक्यों से परे भी बहुत कुछ कहने की क्षमता रखता है।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण क्या है?

5.2.7 रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण

रेखाचित्र के छह तत्व होते हैं -

1. व्यक्ति चित्रण, 2. संवेदनशीलता, 3. संतुलन एवं तटस्थता, 4. सूक्ष्म निरीक्षण, 5. यथार्थ की अनुभूति और 6. उद्देश्य ।

मूल चेतना के आधार पर रेखाचित्रों को अनेक वर्गों या प्रकारों में रखा जा सकता है। जैसे -

1. मनोवैज्ञानिक रेखाचित्र,
2. ऐतिहासिक रेखाचित्र,
3. तथ्य एवं घटना प्रधान रेखाचित्र,
4. वातावरण प्रधान रेखाचित्र,
5. प्रभाववादी रेखाचित्र,
6. व्यंग्य प्रधान रेखाचित्र,
7. व्यक्ति प्रधान रेखाचित्र और
8. आत्मपरक रेखाचित्र।

अब तक की चर्चा से यह स्पष्ट हो चुका है कि गद्य की नई विधा के रूप में स्थापित होने के साथ ही रेखाचित्र अन्य अनेक विधाओं से संबंध भी है और अलग अस्तित्व भी। रेखाचित्र को अलग पहचान देने में उसकी निम्नलिखित प्रवृत्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है -

1. चित्रात्मकता

रेखाचित्रकार रेखाचित्र के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु के व्यक्तित्व के एक अंश का चित्र भाषा के द्वारा प्रस्तुत करता है। भाषा के द्वारा ही लेखक अपनी रचनात्मक क्षमता के शीर्ष तक जा पहुंचता है। बाह्य चित्रण के समान ही यह व्यक्ति का आंतरिक चित्र प्रस्तुत करने में भी समर्थ है।

2. गतिशीलता

सामान्यतः चित्र द्विआयामी होता है किन्तु रेखाचित्र बहुआयामी होता है। इस कारण रेखाचित्र गतिशील प्रतीत होता है। रेखाचित्रों में इस कारण 'लंबाई', 'चौड़ाई' के साथ ही 'गहराई' की प्रतीति भी होती है। यही बहुमुखी प्रवृत्ति है। इसके द्वारा चित्र अधिक जीवंत हो जाता है और पाठक के मन पर उसका प्रभाव स्थिर हो जाता है। एक सफल रेखाचित्र में यह प्रवृत्ति आरोपित नहीं होती बल्कि यह एक सहज भाव है।

3. तटस्थता

रचनाकार में तटस्थता का भाव आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। रेखाचित्र में व्यक्ति और उसका जीवन और उसकी पीड़ा आदि का चित्रण करते समय लेखक को अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखना होगा। यह तटस्थता केवल लेखकीय दृष्टि में ही व्यंजित नहीं होती बल्कि शब्द प्रयोग में भी होती है। चित्रित व्यक्तियों के साथ लेखक का निकट संबंध होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व के अच्छे-बुरे सभी पहलुओं का तटस्थ भाव से चित्रण करना अभिप्रेत होता है जिससे वे चित्रित व्यक्तियों के स्पष्ट और सहज चित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

4. व्यक्तिकेंद्रिकता

रेखाचित्र सामान्यतः व्यक्तिकेंद्रित होते हैं। उस व्यक्ति के जीवन और चरित्र के किसी एक पक्ष पर उसकी जीवन-रेखा के किसी संदर्भ को विस्तार से प्रस्तुत करते समय व्यक्तिकेन्द्रित प्रवृत्ति से मुक्त होकर या उससे अलग होकर रेखाचित्रकार उसके जीवन का विवरण प्रस्तुत करता है। दूसरे शब्दों में रेखाचित्रों में व्यक्ति प्रायः एक व्यक्ति-विशेष का सूचक होते हुए भी जीवन के एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य का भी सूचक है।

5. यथार्थता

यह भी स्पष्ट है कि रेखाचित्र यथार्थ पर आधारित एक अकाल्पनिक गद्य विधा है। काल्पनिक पात्रों को लेकर रेखाचित्र प्रस्तुत नहीं किए जाते। कहानी और उपन्यास आदि के पात्र काल्पनिक होते हैं। वे रचनाकार की कल्पना से जन्म लेते हैं, रेखाचित्र के पात्र हाड़-मांस के लोग होते हैं। रेखाचित्र में न पात्र और न घटनाएँ काल्पनिक होती हैं।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र के तत्वों के नाम लिखो ।
- रेखाचित्र को प्रायः किन वर्गों में रखा जा सकता है?
- रेखाचित्र की किसी एक प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए ।
- चित्रात्मकता से आप क्या समझते हैं?
- व्यक्तिकेन्द्रितता का क्या अर्थ है?
- रेखाचित्र और यथार्थ का क्या संबंध है?

5.2.8 कुछ प्रमुख रेखाचित्र लेखक

हिंदी में रेखाचित्र विधा के इतिहास को दो युगों में बाँटा जाता है – 1. आरंभिक युग और 2. उत्कर्ष युग। उल्लेखनीय है कि रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने का गौरव सर्वप्रथम पद्म सिंह शर्मा द्वारा रचित 'पद्मपराग' (1929) को प्राप्त है। इस पुस्तक में लेखक ने अपने समकालीन महत्वपूर्ण लोगों को विषय बनाया है। इनसे प्रभावित होकर श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा और बनारसीदास चतुर्वेदी ने रेखाचित्र लिखने शुरू किए। बनारसीदास चतुर्वेदी ने रेखाचित्र के स्वरूप पर भी महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। वे मानते थे कि, "जिस प्रकार एक अच्छा चित्र खींचने के लिए कैमरे का लेंस अच्छा होना चाहिए और फिल्म भी काफी कोमल या सेंसिटिव, उसी प्रकार साफ चित्रण के लिए रेखाचित्रकार में विश्लेषणात्मक बुद्धि तथा भावुकतापूर्ण हृदय दोनों का सामंजस्य होना चाहिए। पर-दुख-कातरता, संवेदनशीलता, विवेक और संतुलन इन सब गुणों की आवश्यकता है।"

उत्कर्ष युग के रेखाचित्रकारों में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम सबसे पहले आता है। इनके रेखाचित्रों में सरल भाषाशैली में सिद्धहस्त कलाकारी देखी जा सकती है। इन्होंने समाज के उपेक्षित पात्रों को अपने रेखाचित्रों द्वारा नायक का दर्जा प्रदान किया। भावना प्रधान भाषा के कारण रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र गद्य काव्य जैसा आनंद देते हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी के बाद रेखाचित्र को उत्कर्ष पर पहुंचाने वालों में महादेवी वर्मा का नाम अविस्मरणीय है। उन्होंने संस्मरणात्मक रेखाचित्र अधिक रचे, जिनमें साहित्य और सामाजिक क्षेत्र की विभूतियाँ तो शामिल हैं ही, समाज के शोषित और उपेक्षित पात्र तथा मानवेतर प्राणी भी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, प्रकाशचन्द्र गुप्त और विष्णु प्रभाकर का भी रेखाचित्र विधा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रमुख रेखाचित्र संग्रह

हिंदी के कुछ प्रमुख रेखाचित्रकार और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं - बनारसी दास चतुर्वेदी (रेखाचित्र), महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार), श्रीराम शर्मा (बोलती प्रतिमा), विनयमोहन शर्मा (रेखा और रंग), रामवृक्ष बेनीपुरी (माटी की मूरतें, तथा गेहूँ और गुलाब), प्रकाश चंद्र गुप्त (पुरानी स्मृतियाँ, और नए स्केच तथा रेखाचित्र), कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (भूले हुए चेहरे), विष्णु प्रभाकर (जाने अनजाने), रामविलास शर्मा (पंचरत्न), देवेंद्र सत्यार्थी (रेखाएँ बोल उठीं), नगेंद्र (चेतना के बिम्ब), अजित कुमार (दूर वन में, निकट मन में)।

बोध प्रश्न

- हिंदी के चार प्रमुख रेखाचित्रकारों और उनकी एक एक प्रमुख रचना का नाम बताइए।

5.3 पाठ सार

आधुनिक काल में जब छापाखाने की सुविधा प्राप्त हुई, तो हिंदी में कविता से आगे बढ़कर गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। ये विधाएँ मुख्यतः दो प्रकार की हैं। एक तो वे जिनमें लेखक कल्पना से निर्मित कथासूत्र का विकास करता है। इस वर्ग की विधाओं के अंतर्गत नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी और लघुकथा आते हैं। इन्हें 'काल्पनिक गद्यविधा' कहा गया है। दूसरा वर्ग 'अकाल्पनिक गद्यविधा' का है। इसमें लेखक को काल्पनिक विषय के प्रतिपादन की छूट नहीं होती। इसके अंतर्गत एक ओर तो निबंध और ललित निबंध आते हैं तथा दूसरी ओर वे नई विधाएँ आती हैं, जो किसी न किसी रूप में 'स्मृति' पर आधारित हैं। इन स्मृति-आधारित अकाल्पनिक गद्य विधाओं में मुख्यरूप से शामिल हैं– आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्त, डायरी और साक्षात्कार। इनमें रेखाचित्र का महत्व इसलिए अधिक है कि किसी पात्र, स्थान, घटना अथवा प्रतिक्रिया का शाब्दिक चित्र प्रस्तुत करने के रूप में यह विधा दूसरी तमाम विधाओं के अंग के समान भी शामिल हैं। हिंदी में महादेवी वर्मा ने इसे स्वतंत्र आधुनिक गद्य विधा के रूप में स्थापित किया।

रेखाचित्र मूलतः चित्रकला का शब्द है। हिंदी में यह शब्द अंग्रेज़ी 'स्केच' के समानार्थी के रूप में स्वीकृत है। चित्रकला में 'स्केच' का अर्थ है- ऐसा चित्र जो रेखाओं से निर्मित हो। चित्रकला की इसी अवधारणा को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना अथवा मनोभाव का साक्षात्कार कराने के लिए जब लेखक बहुत थोड़े से शब्दों

द्वारा उसका चित्र अंकित करता है, तो ऐसी रचना को रेखाचित्र कहा जाता है। अर्थात, जिस विधा में क्रमबद्धता का ध्यान न रखकर किसी वास्तविक पात्र की आकृति, चालढाल या स्वभाव की विशेषताओं का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया जाता है, उसे रेखाचित्र कहते हैं। जिस प्रकार कोई चित्रकार केवल कुछ रेखाओं से सजीव चित्र बनाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है, उसी प्रकार थोड़े से शब्दों में किसी वस्तु अथवा घटना का चित्रण करना रेखाचित्र कहा जाता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "रेखाचित्र शब्द चित्रकला से साहित्य में आया है, परंतु अब वह शब्दचित्र के स्थान में रूढ़ हो गया है। चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसके विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं। साहित्य में भी साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके।" रेखाचित्रकार का प्रमुख उद्देश्य अपनी शब्द-रेखाओं के द्वारा पाठक में संवेदना जागृत करना होता है। इसमें अनुभूत जीवन का सत्य व्यक्त होता है। रेखाचित्र में एक ही वस्तु, घटना या चरित्र प्रधान होता है, जिससे संबन्धित प्रमुख विशेषताओं को उभारा जाता है। रेखाचित्र और गद्य की अन्य विधाओं में संबंध है और संस्मरण से तो इसका सीधा संबंध है ही। किन्तु जहाँ रेखाचित्र वस्तुनिष्ठ है, वहीं संस्मरण व्यक्तिनिष्ठ। यथार्थ अनुभूति, संवेदनशील दृष्टि, तटस्थता तथा सूक्ष्म निरीक्षण रेखाचित्रकार के प्रमुख गुण हैं। हिंदी में 1929 में प्रकाशित पंडित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को पहला रेखाचित्र माना जाता है। महादेवी वर्मा को रेखाचित्रकार और संस्मरण लेखिका दोनों माना जाता है, छायावाद की प्रमुख कवयित्री तो वे हैं ही।

5.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध होते हैं -

1. आधुनिक काल में गद्य का विकास होने पर कहानी और उपन्यास जैसी काल्पनिक गद्य विधाओं के साथ कई सारी अकाल्पनिक गद्य विधाओं का भी विकास हुआ।
2. इन अकाल्पनिक गद्य विधाओं में स्मृति पर आधारित विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।
3. स्मृति पर आधारित गद्य विधाओं में आत्मकथा और संस्मरण के अलावा रेखाचित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।
4. हिंदी में 1929 में प्रकाशित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को प्रथम रेखाचित्र होने का गौरव प्राप्त है।

5. महादेवी वर्मा ने साधारण व्यक्तियों और पालतू पशु पक्षियों के रेखाचित्र लिखकर इस विधा को नया आयाम प्रदान किया।

5.5 शब्द संपदा

1. अपेक्षित	=	जिसकी चाह या आशा हो
2. प्रतिबिंब	=	परछाईं, छाया, अक्स
3. बहुआयामी	=	अनेक आयामों वाला
4. मर्मस्पर्शी	=	मन (दिल) को छूने वाली
5. यथातथ्यता	=	वास्तविकता, जैसा है वैसा ही
6. वस्तुनिष्ठता	=	किसी से भी प्रभावित न होकर किसी तथ्य या घटना का उसके वास्तविक रूप में ही विश्लेषण करना
7. विधा	=	रीति, ढंग, प्रकार, किस्म, वर्ग, श्रेणी
8. व्यंग्य	=	गूढ़ार्थ
9. संवेदना	=	अनुभूति
10. समावेश	=	शामिल होना, व्याप्त होना

5.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

5.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'रेखाचित्र' के लिए किस वैकल्पिक शब्द का प्रयोग किया है?

A. स्मृतिचित्र B. चलचित्र **C. शब्दचित्र** D. रेखांकन

2. महादेवी वर्मा के अनुसार, एक साहित्यकार और चित्रकार के रेखाचित्र निर्माण में मुख्य अंतर क्या है?

A. साहित्यकार को रंगों की आवश्यकता होती है

B. चित्रकार अधिक मर्मस्पर्शी अंकन करता है

C. साहित्यकार केवल कल्पित पात्रों का चित्रण करता है

D. साहित्यकार दीर्घकाल के अंतराल के बाद भी चित्र अंकित कर सकता है

3. रेखाचित्र की कौन-सी विशेषता उसे 'कहानी' से अलग करती है?

A. कथानक का अभाव या कम गहराई B. पात्रों की संख्या

C. भाषा की जीवंतता D. संवादों का प्रयोग

4. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को समझाने के लिए चित्रकला के किन दो रूपों का उदाहरण दिया है?

A. पोर्ट्रेट और लैंडस्केप B. स्केच और छायाचित्र

C. ऑयल पेंटिंग और वाटर कलर **D. स्टिल लाइफ और सामान्य दृश्यालेख**

5. हिंदी में प्रथम स्वतंत्र रेखाचित्र संग्रह होने का गौरव किस कृति को प्राप्त है?

A. माटी की मूरतें B. बोलती प्रतिमा C. अतीत के चलचित्र **D. पद्मपराग**

6. रेखाचित्र में 'तटस्थता' का क्या अर्थ है?

A. लेखक का अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए चित्रण करना

B. पात्र से दूरी बनाए रखना और मिलना नहीं

C. केवल सकारात्मक गुणों का वर्णन करना

D. केवल बाह्य रूप का वर्णन करना

7. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की एक विशिष्टता क्या है जो उन्हें अन्य लेखकों से अलग करती है?

A. उनके चित्र केवल हास्य और व्यंग्य पर आधारित होते हैं

B. उनके रेखाचित्रों में कल्पना की प्रधानता है

C. वे शोषित पात्रों और मानवेतर प्राणियों (पशु-पक्षियों) को भी विषय बनाती हैं

D. वे केवल ऐतिहासिक पुरुषों पर लिखती हैं

8. रेखाचित्र और जीवनी में समानता का प्रमुख आधार क्या है?

A. दोनों में कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता

B. दोनों में जीवन की समग्रता का आग्रह होता है

C. दोनों में घटनाओं का तिथिबद्ध विवरण अनिवार्य है

D.दोनों केवल प्रसिद्ध व्यक्तियों पर लिखे जाते हैं

9. बनारसीदास चतुर्वेदी के अनुसार, एक सफल रेखाचित्रकार में किन दो गुणों का सामंजस्य होना चाहिए?

A. तार्किकता और कठोरता B. कल्पनाशीलता और दार्शनिकता

C. विश्लेषणात्मक बुद्धि और भावुकतापूर्ण हृदय D.चित्रकला का ज्ञान और राजनीतिक चेतना

10. रेखाचित्र को 'बहुआयामी' क्यों कहा जाता है?

A. क्योंकि यह लंबाई और चौड़ाई के साथ 'गहराई' की प्रतीति भी कराता है

B. क्योंकि यह केवल भविष्य की घटनाओं पर केंद्रित होता है

C. क्योंकि इसमें कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होता है

D. क्योंकि इसमें कई लेखकों का सहयोग होता है

खंड (ब)

5.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र और कहानी में समानता और अंतर स्पष्ट कीजिए

2. साहित्यिक विधा के रूप में रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए ।

3. महादेवी वर्मा के 'रेखाचित्र' विषयक विचारों पर टिप्पणी लेखिए।

खंड (स)

5.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र की एक परिभाषा लेकर उसका विश्लेषण कीजिए ।

2. 'रेखाचित्र' के विधागत स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. रेखाचित्र और संस्मरण के बीच विभाजक रेखा खीचना कठिन है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'रेखाचित्र' विधा का प्रवृत्तिगत विश्लेषण कीजिए ।

5.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य कोश. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.
2. रेखाचित्र. महादेवी वर्मा.

इकाई 6 : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 मूल पाठ : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

6.2.1 महादेवी वर्मा : जीवन और रचनाएं

6.2.2 'भाभी' : एक परिचय

6.2.3 'भाभी' : तात्विक विवेचन

6.3 पाठ सार

6.4 पाठ की उपलब्धियां

6.5 शब्द संपदा

6.6 परीक्षार्थ प्रश्न

6.7 पठनीय पुस्तकें

6.0 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि छायावाद की प्रमुख कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा है। रहस्यवादी कवि, यथार्थवादी गद्यकार तथा समन्वयवादी आलोचक होने के साथ साथ वे अद्वितीय रेखाचित्रकार, संस्मरण-लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबंधकार, उच्चकोटि की चित्रकार, और अग्रणी प्रबुद्ध समाज तथा राष्ट्र-सेविका भी हैं। उन्होंने एक ओर काव्य रचना की तो दूसरी ओर सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए गद्य का सहारा लिया। उन्होंने अपने रेखाचित्रों, संस्मरणों, निबंधों और आलोचनाओं के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्ग विशेषतः स्त्रियों के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इस कारण आधुनिक युग की मीरा, वेदना और पीड़ा की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का गद्यलेखन भी बहुत प्रशंसित रहा है। गद्य में उनके सामाजिक सरोकार भी अधिक स्पष्ट हुए हैं। उन्होंने संस्मरण और रेखाचित्र जैसी आधुनिक गद्य विधाओं को अत्यंत मार्मिक लेखन द्वारा समृद्ध किया। इस इकाई में आप उनके एक प्रसिद्ध रेखाचित्र 'भाभी' का अध्ययन करेंगे। 'स्मृति की सुरक्षित सीमा' से बाहर आकर भाभी का यह रेखाचित्र पढ़कर आप सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि ऐसी एक स्त्री को आपने भी कभी और कहीं देखा है।

6.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इसके अध्ययन से आप -

- महादेवी वर्मा के जीवन और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के गद्य लेखन के बारे में जान सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' की विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र लेखन की विशेषताओं को समझ सकेंगे ।
- राष्ट्रीय चेतना और स्त्री-सशक्तीकरण और उनकी दशा में सुधार के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा की रचनाओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'भाभी' का विश्लेषण कर सकेंगे।

6.2 मूल पाठ : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

अपने रेखाचित्रों में महादेवी वर्मा ने मातृत्व की ममता, बहन का स्नेह, और नारीत्व की विविध अनुभूतियों की सुंदर अभिव्यक्ति की है। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', और 'पथ के साथी' महादेवी वर्मा के प्रमुख संस्मरण और रेखाचित्र संग्रह हैं। 'अतीत के चलचित्र' में अनेक सामाजिक विसंगतियों की मार झेल रही स्त्रियों की करुण कथाएँ भी है। ये स्त्रियाँ महादेवी वर्मा की 'अक्षय ममता के पात्र' हैं। इन रेखाचित्रों के चरित्रों में उनके माध्यम से स्वयं महादेवी का जीवन भी आ गया है। इन अधूरी रेखाओं और धुंधले रत्नों की समष्टि में से एक रत्न 'भाभी' भी है। यह भी उल्लेखनीय है कि यह रेखाचित्र 11 अक्टूबर, 1933 को लिखा गया था, फिर भी इसकी ताजगी आज तक बरकरार है।

सूर्य प्रसाद दीक्षित ने 'अतीत के चलचित्र' की विषयवस्तु पर टिप्पणी करते हुए लिखा है - "इन चलचित्रों में समाज के सर्वहारा वर्ग की झांकी है। उनके दुख दैन्य की कहानी है, कुँजड़ा, काछी, कुम्हार, आदि पात्रों के उपेक्षित जीवन की गाथा है, अभागी, वेश्या, विधवा और विकलांग नारियों के जीवन की विडम्बना का स्वर है, पतित जारज वर्ण संकर, तथाकथित नीच नराधम संतानों का लेखा जोखा है और दरिद्रनारायण की कथा है।"

प्रिय छात्रो, आइए, महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' पर विस्तृत चर्चा करने से पहले उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जान लें।

6.2.1 महादेवी वर्मा : जीवन और रचनाएँ

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 और निधन 11 सितंबर, 1987 को हुआ। उन्हें हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। वे महात्मा गांधी से प्रभावित थीं और उन्हीं के कहने पर उन्होंने स्वयं को स्त्रियों की शिक्षा और सशक्तीकरण के लिए समर्पित कर दिया।

महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली हिंदी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने खड़ी बोली हिंदी में अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर सम्मिलित किया। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं।

उन्हें हिंदी साहित्य के अनेक महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 1982 में 'दीपशिखा' नामक गीतसंग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रमुख कविता संग्रह

नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (अनूदित-1959), प्रथम आयाम (1974), अग्निरेखा (1990)।

प्रमुख गद्य साहित्य

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रेखाएं (1943) और मेरा परिवार (1972)।
संस्मरण : पथ के साथी (1956) और संस्मरण (1983)।
चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)।
निबंध : शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)।
ललित निबंध : क्षणदा (1956)

बोध प्रश्न

- महादेवी का संबंध आधुनिक युग के किस काल खंड से है?
- महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा क्यों कहा जाता है?
- महादेवी वर्मा की भाषा की क्या विशेषता है?
- महादेवी वर्मा की प्रमुख गद्य रचनाएँ कौनसी हैं?

महादेवी वर्मा को जितनी प्रसिद्धि उनके छायावादी गीतों के लिए मिली, उतनी ही प्रतिष्ठा उन्होंने अपने विशिष्ट प्रकार के गद्य लेखन द्वारा भी अर्जित की। उनके चिंतन पूर्ण गद्य लेखन में 'शृंखला की कड़ियाँ' का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसे आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की गीता के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा महादेवी ने अपने रेखाचित्रों और संस्मरणों के द्वारा हिंदी के स्मृति-आधारित लेखन को एकदम नई दिशा प्रदान की। उन्होंने अपने घर-परिवार और परिवेश से ऐसे व्यक्तियों और प्राणियों को चुनकर रेखाचित्र और संस्मरण रचे, जो प्रथम दृष्टि में इतने साधारण और छोटे लगते हैं कि वे साहित्य रचना का आधार भी नहीं बन सकते। गिलहरी और हिरणी से लेकर घरेलू नौकर और नौकरानी तक पर रचित अपने रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी ने 'साधारण' को 'असाधारण' बना दिया। उन्होंने जीवन के हाशिये पर स्थित उपेक्षित पात्रों का चित्रण इतनी गहरी आत्मीयता और संवेदनशीलता के साथ किया है कि उन पात्रों को साहित्य में कालजयी 'नायकत्व' प्राप्त हो गया है।

बोध प्रश्न

- 'शृंखला की कड़ियाँ' का क्या महत्व है?
- महादेवी के रेखाचित्रों की मुख्य विशेषता क्या है?

6.2.2 'भाभी' : एक परिचय

महादेवी वर्मा ने इस रेखाचित्र में एक बाल विधवा का चित्र प्रस्तुत किया है, जिन्हें वे भाभी कहती थी। लेखिका ने उसके बारे में बताया है कि छोटे गोल मुख की तुलना में कुछ अधिक चौड़ा लगने वाला पर दो काली रूखी लटों से सीमित ललाट, बचपन और प्रौढ़ता को एक साथ अपने भीतर बंद कर लेने का प्रयास-सा करती हुई, लंबी बरौनियोंवाली भारी पलकें और उनकी छाया में डबडबाती हुई-सी आँखें, उस छोटे मुख के लिए भी कुछ छोटी सीधी-सी नाक और मानो अपने ऊपर छपी हुई हँसी से विस्मित होकर कुछ खुले रहने वाले ओठ, समय के प्रवाह से फीके भर हो सकते हैं, धुल नहीं सकते।

बोध प्रश्न

- इस अनुच्छेद में वर्णित 'करुण कोमल मुख' किसका है?
- 'भाभी' की आँखें और नाक कैसी थीं?

'भाभी' का रूप वर्णन करते हुए लेखिका ने आगे लिखा है - घर के सब उजले-मैले, सहज-कठिन कामों के कारण, मलिन रेखा जाल से गुथी और अपनी शेष लाली को कहीं छिपा

रखने का प्रयत्न-सा करती हुई कहीं कोमल, कहीं कठोर हथेलियाँ, काली रेखाओं में जड़े कांतिहीन नखों से कुछ भारी जान पड़ने वाली पतली उँगलियाँ, हाथों का बोझ संभालने में भी असमर्थ दुर्बल, रूखी पर गौर बाहें और मारवाड़ी लहंगे के भारी घेर से थकित से, एक सहज सुकुमारता का आभास देते हुए, कुछ लंबी उँगलियों वाले दो छोटे छोटे पैर, जिनकी एड़ियों में आँगन की मिट्टी की रेखा मटमैले महावर सी लगती थी, भुलाए भी कैसे जा सकते हैं !

लेखिका याद करती है कि उन हाथों ने न जाने बचपन में कितनी बार, मेरे उलझे बाल सुलझाकर बड़ी कोमलता से बांध दिये थे। वे पैर न जाने कितनी बार, अपनी सीखी हुई गंभीरता भूलकर मेरे लिए द्वार खोलने आँगन में एक ओर से दूसरी ओर दौड़े थे। किस तरह मेरी अबोध अष्टवर्षीय बुद्धि ने उससे भाभी का संबंध जोड़ लिया था, अब यह बताना कठिन है।

लेखिका ने यह भी बताया है कि अपनी सहेलियों की भाभियों को देखकर उन्होंने इस मारवाड़ी विधवा वधू को भाभी कहना शुरू किया था।

बोध प्रश्न

- मारवाड़ी विधवा बहू से लेखिका के संबंध का आधार क्या रहा?
- 'भाभी' के पैरों का वर्णन लेखिका ने किस प्रकार किया है?

महादेवी वर्मा बताती है कि 'भाभी' अनाथ थी। यह उसका दुर्भाग्य था कि बूढ़े सेठ सब के मना करते-करते भी इसे अपने इकलौते लड़के से ब्याह लाए और उसी साल लड़का बिना बीमारी के ही मर गया। अब सेठ जी का इसकी चंचलता के मारे नाक में दम है। न इसे कहीं जाने देते हैं न किसी को अपने घर आने। केवल अमावस, पूनो एक ब्राह्नी आती है जिसे वे अपने आप सीध दिलवाकर विदा कर देते हैं। वे बेचारे तो जाति बिरादरी में भी इसके लिए बुरे बन गए हैं और इसकी निर्लज्जता देखो - ससुर दूकान गए नहीं कि यह पर्दे से लगी नहीं। घर में कोई देखनेवाला है ही नहीं। एक ननद है जो शहर में ससुराल होने के कारण जब-तब आ जाती है और तब इसकी खूब ठुकाई होती है। इत्यादि इत्यादि सूचनाएँ कल्लू की माँ की विशेष शब्दावली और विचित्र भाव भंगिमाओं के साथ मुझे स्कूल तक मिलती रहती थी। परंतु उस समय वे सूचनाएँ मेरे निकट उतना ही महत्व रखती थीं, जितना नानी से सुनी हुई बेला रानी की कहानी।

'भाभी' से पहली मुलाकात के बारे में लेखिका ने बताया है कि एक दिन स्कूल से लौटते हुए गीली सड़क पर उनका पैर भाभी के घर के सामने फिसल गया तो भाभी ने उन्हें अपने घर में पनाह दी। उस दिन से वह घर, जिसमें न एक भी झरोखा था न रौशनदान, न एक भी नौकर

दिखाई देता था, न अतिथि और न एक भी पशु रहता था न पक्षी, लेखिका के लिए एक आकर्षण बन गया।

बोध प्रश्न

- भाभी का क्या दुर्भाग्य था?
- लेखिका से भाभी कि मुलाकात कैसे हुई?

महादेवी वर्मा ने इस बाल विधवा(भाभी) की दिनचर्या के बारे में तथा उनके स्वभाव के बारे में भी बताया है - उस अभागी का दिन द्रौपदी के चीर से होड़ लेता था। सवेरे स्नान, तुलसी पूजा आदि में कुछ समय बिताकर ही वह अंधेरे रसोईघर में पहुँचती थी। परंतु दस बजते बजते ससुर को खिला पिलाकर, उसी टाट के पर्दे से मुझे शाम को आने का निमंत्रण देने के लिए स्वतंत्र हो जाती थी। उसके बाद चौका बर्तन, कूटना-पीसना भी समाप्त हो जाता, परंतु तब भी दिन का अधिक नहीं तो एक प्रहर शेष रह ही जाता था। दूकान की ओर जाने का निषेध होने के कारण वह अवकाश का समय उसी टाट के पर्दे के पास बिता देती थी, जहाँ से कुछ मकानों के पिछवाड़े और एक दो आते-जाते व्यक्ति ही दिख सकते थे, परंतु इतना ही उसकी चंचलता हा ढिंढोरा पीटने के लिए पर्याप्त था।

बोध प्रश्न

- भाभी की दिनचर्या क्या थी?

अनेक वर्षों बाद अपने बचपन की उन घटनाओं को लेखिका ने इस प्रकार याद किया है - उस 19 वर्ष की युवती की दयनीयता आज समझ पाती हूँ जिसके जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरौंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गए, वरन उसे इतना एकाकी छोड़ गए कि उन स्वप्नों की कथा कहना भी संभव न हो सका। ऐसी दशा में उसने आठ वर्ष की बालिका (लेखिका) को ही अपने संगीहीन हृदय की सारी ममता सोंप दी; परंतु वह बालिका तो उस संसार में प्रवेश करने में असमर्थ थी, इसीसे उसने उसी के गुड़ियोंवाले संसार को अपनाया। भाभी के लिए कला अक्षर भैंस बराबर था। उस पर मेरी विद्वत्ता की धाक भी सहज ही जम गई थी। वृद्ध भी अपनी बहू के लिए ऐसा निर्दोष साथी पाकर इतने प्रसन्न हुए कि स्वयं ही बड़े आदर यत्न से मुझे बुलाने-पहुँचाने लगे।

बोध प्रश्न

- अभागी भाभी और अबोध बालिका के संबंध का आधार क्या था?

- बालिका महादेवी ने अपनी विद्वत्ता की धाक भाभी पर कैसे जमाई?

महादेवी आगे बताती हैं कि उन्हीं दिनों स्कूल में कशीदा काढ़ना सीखकर मैंने अपनी धानी रंग की साड़ी में बड़े-बड़े नीले फूल काढ़े। भाभी को रंगीन कपड़े बहुत भाते थे इसीसे उसे देखकर वह ऐसी विस्मय विमुग्ध रह गई मानो कोई सुंदर चित्र देख रही हो। मैंने क्यों माँ से हठ करके वैसा ही कपड़ा मंगवाया और क्यों किसी को बिना बताए हुए छिपा- छिपाकर उस ओढ़नी पर नीले फूल काढ़ना आरंभ किया, यह आज तक समझ नहीं आता। उस दिन की बात तो मेरी स्मृति में गर्म लोहे से लिखी जान पड़ती है, जब उस ओढ़नी को छुपाकर मैं भाभी को आश्चर्य में डालने गई। उसके उपरांत जो हुआ वह तो स्मृति के लिए भी अधिक करुण है। क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। उस एक घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा। आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक-भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत वर्तमान होने लगता है। आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत फिर वर्तमान होने लगता है। कोई किस प्रकार समझे कि रंगीन कपड़ों में जो मुख धीरे धीरे स्पष्ट होने लगता है वह कितना मुरझाया हुआ है। कभी कभी तो वह मुख मेरे सामने आने वाले सभी करुण क्लांत मुखों में प्रतिबिम्बित होकर मुझे उनके साथ एक अटूट बंधन में बांध देता है।

बोध प्रश्न

- भाभी के लिए रंगीन वस्त्र अभिशाप क्यों थे?
- बालिका(लेखिका) पर इस प्रसंग का क्या असर पड़ा?

लेखिका ने बाल विधवा भाभी पर ससुर और ननद के अत्याचार का दिल हिला देने वाला वर्णन किया है। वे लिखती हैं - क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। बचाने का कोई उपाय न देखकर कदाचित मैंने ज़ोर-ज़ोर से रोना आरंभ किया, परंतु बच तो वह तब न सकी, जब मन से ही नहीं, शरीर से भी बेसुध हो गई। परंतु बहुत दिनों के बाद जब मैंने फिर उसे देखा, तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे होठ, जिन पर किसी दिन हँसी छिपी सी जान पड़ती थी, ऐसे काँपते थे, मानो भीतर का क्रंदन रोकने के प्रयास से थक गए हो। उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा।

बोध प्रश्न

- भाभी के प्रति अत्याचार की घटना का बालिका पर क्या प्रभाव पड़ा?
- भाभी के प्रति अत्याचार की घटना का भाभी पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्रिय छात्रो! महादेवी वर्मा आमतौर पर सफ़ेद सूती धोती पहनती थीं। उन्हें रंगीन कपड़े पहनना पसंद नहीं था। इसका कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है - आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक-भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत फिर वर्तमान होने लगता है। कोई किस प्रकार समझे कि रंगीन कपड़ों में जो मुख धीरे धीरे स्पष्ट होने लगता है वह कितना करुण और मुर्झाया हुआ है। कभी कभी तो यह मुख मेरे सामने आने वाले सभी करुण क्लांत मुखों में प्रतिबिम्बित होकर मुझे उनके साथ एक अटूट बंधन में बांध देता है। प्रायः सोचती हूँ - जब वृद्ध ने कभी न खोलने के लिए आंखे मूँद ली होंगी तब वह, जिसे उन्होंने संसार की ओर देखने का अधिकार ही नहीं दिया था, कहाँ गई होगी!

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा को रंगीन कपड़े पसंद क्यों नहीं थे?

6.2.3 'भाभी' : तात्विक विवेचन

1. परिचित विषयवस्तु

महादेवी वर्मा के 'भाभी' रेखाचित्र को संस्मरणात्मक-रेखाचित्र भी कहा जा सकता है। इस रेखाचित्र का विषय 'भाभी' नाम से पुकारी गई एक विधवा युवा स्त्री है जो उनसे तब मिली थी जब महादेवी बालिका थीं। वर्षों बाद वे अपनी स्मृति के आधार पर उसके जीवन का विवरण प्रस्तुत करती हैं- "उन हाथों ने बचपन में न जाने कितनी बार मेरे उलझे बाल सुलझा कर बड़ी कोमलता से बाँध दिये थे । वे पैर न जाने कितनी बार, अपनी सीखी हुई गंभीरता भूल कर मेरे लिये द्वार खोलने, आँगन में एक ओर से दूसरी ओर दौड़े थे । किस तरह मेरी अबोध अष्टवर्षीय बुद्धि ने उससे भाभी का संबंध जोड़ लिया था, यह अब बताना कठिन है । मेरी अनेक सहपाठिनियों के बहुत अच्छी भाभियाँ थीं; कदाचित् उन्हीं की चर्चा सुन-सुनकर मेरे मन ने, जिसने अपनी तो क्या दूर के संबंध की भी कोई भाभी ने देखी थी, एक ऐसे अभाव की सृष्टि कर ली, जिसको वह मारवाड़ी विधवा वधू दूर कर सकी।"

2. चित्रात्मकता

स्मृति पर आधारित होने के बावजूद महादेवी वर्मा ने इस रेखाचित्र में भाभी के शरीर-सौष्ठव व व्यक्तित्व का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए - "छोटे गोल मुख की तुलना में कुछ अधिक चौड़ा लगने वाला पर दो काली रूखी लटों से सीमित ललाट, बचपन और प्रौढ़ता को एक साथ अपने भीतर बंद कर लेने का प्रयास-सा करती हुई, लंबी बरौनियोंवाली भारी पलकें और उनकी छाया में डबडबाती हुई-सी आँखें।" भाभी के इस रूप

वर्णन से महादेवी वर्मा के चित्रकार होने का बोध भी सहज ही हो जाता है। इससे पता चलता है कि लेखिका की किसी व्यक्ति को देखने की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म है। इसे पढ़ते हुए पाठक की आँखों के समक्ष भाभी का छोटा गोल चेहरा उभर आता है। उस बालिका का चेहरे की तुलना में चौड़ा मस्तक तथा शृंगारहीन काली रूखी लटें देर तक पाठक को याद रहती हैं। लेखिका ने इस आरंभिक रूप परिचय में ही भाभी की लटों के रूखेपन का उल्लेख इसलिए भी किया है कि आगे चलकर इन लटों को सँवारने के कारण ही उसके जीवन में एक बड़ा तूफान आने वाला है। इससे एक रेखाचित्रकार के रूप में लेखिका की पैनी नज़र का पता चलता है।

3. तटस्थता

यूं तो 'भाभी' परिचिता हैं किन्तु महादेवी जी का ध्येय यहाँ भी शोषित दीन-हीन नारियों का संवेदनात्मक चित्रण करना है। उन्हें महिमा-मंडित करने के स्थान पर उनकी दशा का लेखिका ने यथातथ्य वर्णन किया है। संवेदनात्मक चित्रण में कवित्वपूर्ण शैली अनायास ही आ गई है। तटस्थता का उदाहरण देखें - "प्रायः सोचती हूँ - जब वृद्ध ने कभी न खोलने के लिए आंखे मूँद ली होंगी तब वह, जिसे उन्होंने संसार की ओर देखने का अधिकार ही नहीं दिया था, कहाँ गई होगी!"

4. भाषा की जीवंतता

व्यंग्य-विनोद से पुष्ट मुहावरेदार भाषा में लिखित इस रेखाचित्र में चित्रात्मकता का गुण भाषा के जीवंत प्रयोग से आया है। भाभी की हथेलियों के वर्णन का उदाहरण देखें - "घर के सब उजले- मैले, सहज-कठिन कामों के कारण, मलिन रेखा जाल से गुथी और अपनी शेष लाली को कहीं छिपा रखने का प्रयत्न-सा करती हुई कहीं कोमल, कहीं कठोर हथेलियाँ, काली रेखाओं में जड़े कान्तिहीन नखों से कुछ भारी जान पड़ने वाली पतली उँगलियाँ, हाथों का बोझ संभालने में भी असमर्थ-सी दुर्बल, रूखी पर गौर बाँहें और मारवाड़ी लहँगे के भारी घेर से थकित-से, एक सहज सुकुमारता का आभास देते हुए-कुछ लंबी उँगलियों वाले दो छोटे-छोटे पैर, जिनकी एड़ियों में आँगन की मिट्टी की रेखा मटमैले महावर-सी लगती थी, भुलाए भी कैसे जा सकते हैं!"

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' को क्या कहा जा सकता है?
- 'भाभी' रेखाचित्र में महादेवी वर्मा का ध्येय क्या था?

6 .3 पाठ सार

भारतीय समाज में सदा से नारी की स्थिति शोचनीय रही है। स्त्री युगों से सामाजिक शृंखलाओं में जकड़ी रही है। महादेवी वर्मा ने बड़ी संवेदनशीलता से स्त्री के जीवन और उसकी विडम्बना का चित्रण किया है। नारी के इन विविध रेखाचित्रों में हमें दरिद्रता की चक्की में पिसती, रात दिन घर-गृहस्थी के कार्यों में खटती, पुरस्कार में पुरुषों से दंडित होती और अन्य स्त्रियों द्वारा अपमानित होती नारी की असहाय अवस्था के करुण चित्र मिलते हैं। नारी की इस दीन दशा के लिए एक ओर तो स्वार्थी, दंभी और क्रूर पुरुषवर्ग उत्तरदायी है दूसरी ओर हमारे समाज में न जाने कब से चली आ रहीं परम्पराएँ और कुरीतियाँ भी बेशक इसके लिए जिम्मेदार हैं। बाल-विवाह, अनमेल विवाह, स्त्री के लिए पुनर्विवाह का निषेध, पुरुष का बहुपत्नी रखने का का अधिकार ये सब मिलकर समाज में स्त्री की स्थिति को बदतर बनाते हैं। महादेवी वर्मा ने अपने जीवन में भी पुरुष के दंभ को भोगा था और समाज को सदा से स्त्री को डराते-धमकाते पाया था। पुरुष ने नारी को सदा से पराधीन बना रखा है और वह इसे स्वीकार भी नहीं करता। हमारे देश में नारी के सम्मान के लिए बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं और उन्हें 'देवी का स्थान दिया जाता है किन्तु वास्तविकता यह है कि वह स्त्री को कोई सुविधा देना ही नहीं चाहता। नारी को मनोवैज्ञानिक रूप से तोड़ कर रखा जाता है, उसके हँसने को बेशर्मी समझा जाता है। महादेवी ने नारी की गंभीर से गंभीर समस्याओं को अपनी लेखनी के प्रभाव से और रेखाचित्रों तथा संस्मरणों के माध्यम से समाज के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत किया। साहित्य का एक उद्देश्य 'शिक्षा' भी है और महादेवी शिक्षा देने के लिए भी रेखाचित्र का प्रयोग करती हैं।

अनेक भारतीय समाज सुधारकों - स्वामी दयानंद, राजा राम मोहन राय, महात्मा गांधी आदि ने अनेक वर्षों तक हिन्दू स्त्री की दीन दशा को सुधारने के लिए सामाजिक आंदोलन किए और समाज को नई दिशा दिखाई। विधवा विवाह के पक्ष में बोले और बाल विवाह का विरोध किया। कन्या को बोझ तो माना ही जाता है, उसके विवाह करने की जल्दी भी रहती है। उसे पराया धन कहा जाता है और यदि बाल-विवाह के पश्चात उसके पति की दुर्योग से मृत्यु हो जाती है तो न तो उसके पुनर्विवाह की सोची जाती और न उसके कल्याण की कोई बात की जाती है। उसे वयोवृद्ध के पल्ले बांध दिया जाता है। रूढ़िवादी समाज में बाल-विधवा और बालिका-वधू से यह आशा की जाती है कि वह अपनी सारी चंचलता और कोमल भावनाओं को भूलकर दासी के समान घर के काम करे और पूजा पाठ में दिन बिताए। पति के चले जाने पर उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता और बालिका वधू होने के कारण उसे पग पग पर प्रताड़णा और पति का कोप भाजन बनना पड़ता है।

भारतीय समाज में वैधव्य एक अभिशाप से कम नहीं । धर्म और शास्त्रों में भी उनके लिए संयम और कठोर जीवन ही लिखा है। किन्तु कम आयु की बालिकाओं के लिए संयम की साधना

कठिन होती है। महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से विधवा जीवन की समस्याओं को भी उजागर किया है। उन्होंने हिन्दू परिवारों की विधवाओं की दुर्दशा, उनके साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार और प्रताड़ना का हृदयविदारक चित्र प्रस्तुत किया है। 'अतीत के चलचित्र' नामक पुस्तक में अनेक रेखाचित्र हैं जिनमें स्त्री पर होने वाले अत्याचार का चित्रण किया गया है। 'भाभी' एक ऐसा ही प्रमुख रेखाचित्र है। वह मारवाड़ी सेठ की बहू है जिसे बूढ़े सेठ सब के मना करने पर भी अपने इकलोते पुत्र के लिए ब्याह लाते हैं। उनका पुत्र उसी वर्ष काल कवलित हो जाता है और विधवा होते ही उसे अनेक यातनाओं और बंधनों का सामना करना पड़ता है। बाहर का जीवन और संसार उसके लिए बंद हो जाता है। हर दिन कोई न कोई प्रतिबंध उसे जकड़ने लगता है। उसे एक खंडहर जैसे विशाल भवन में एकाकी और निरुपाय सा रह जाना पड़ता है। बिना किसी संगी साथी, बिना किसी आमोद- प्रमोद के रहते हुए उसे निरंतर वृदधा होने की साधना में लीन रहना पड़ता है। उन्नीस वर्ष की आयु में ही वह किशोरी से मन और तन से बूढ़ी होते चले जाने के लिए मजबूर थी। कला अक्षर भैंस बराबर अर्थात अनपढ़ होने के कारण भाभी को शिक्षा के संस्कार का सहारा भी न था।

"इतने वर्ष बीत जाने पर भी मेरी स्मृति, अतीत के दिन-प्रतिदिन गाढ़े होने वाले धुंधलेपन में एक-एक रेखा खींचकर उस करुण-कोमल मुख को मेरे सामने अंकित ही नहीं सजीव भी कर देती है।" विधवा 'भाभी' का महादेवी ने ऐसा चित्रण किया है जो हिन्दू समाज की एक रूढ़ि और कुरीति रही है। आज जब ऐसे उदाहरण कम हो रहे हैं फिर भी यह भावना कहीं न कहीं है अवश्य। 'भाभी' के जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरोंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गए बल्कि उसे एकाकी भी छोड़ गए। कोई उसकी करुण कथा सुनने वाला भी न था और बालिका महादेवी ने जब यह देखा कि भाभी रंगीन कपड़ों को चाहकर भी न पहन सकती थी तो उन्हे बहुत बुरा लगा। विधवा होने के कारण भाभी को सुबह से शाम तक घर का सारा काम करना होता था। विधवा का संमयित जीवन बिताने के कारण न वह भर पेट भोजन कर सकती थी और न रंग-बिरंगे कपड़े पहन सकती थी। उसके साथ दुर्व्यवहार की हद थी। उसे शारीरिक यातना भी झेलनी पड़ती थी। परिवार के अत्याचार के साथ ही बाहरवालों की जली-कटी सुनना उसकी दिनचर्या का अंग था। समाज उसे कुलटा, चंचल और मनचली आदि कहता था। अत्याचार सहते सहते भाभी की दशा बहुत खराब हो गयी थी। उसका जीवन जीने के लायक न था। बहुत दिनों के बाद महादेवी ने उसको देखा तो वे देखती ही रह गई। विषाद ने भाभी को जकड़ लिया था और फिर भी वे अपने दुख को दबाये रखना सीख गई थीं। उनके इस व्यवहार को देखकर बालिका महादेवी को भी सारा मामला समझ में आने लगा और वे समझ गईं कि क्यों वे यह अत्याचार चुपचाप सहते चले जाने को विवश हैं।

समाज के उपेक्षित वर्ग तथा नारी समुदाय पर सदा से होते रहे अत्याचार पर प्रहार करते हुए महादेवी ने सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वाशों को भी निशाना बनाया है। उनके विचार प्रगतिशील थे और वे प्राचीनता और नवीनता दोनों को परखकर आगे बढ़ने की सलाह देती हैं। समाज में परिवर्तन लाना उनका लक्ष्य है। यदि हम 'अतीत के चलचित्र' के एक ही रेखाचित्र 'भाभी' पर केन्द्रित होकर अपनी बात कहते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि विधवा के इस रेखाचित्र में करुणा, दया और बेबसी का दारुण दृश्य तो है ही, पाठक के लिए चिंतन के कुछ अबूझ प्रश्न भी हैं। सेठ के पुत्र से ब्याही गई यह किशोरी बाल-विधवा अपना अभिशप्त जीवन बिताने के लिए मजबूर है। इसके जीवन की पीड़ा बालपन से इस रेखाचित्र के लेखन तक भी महादेवी भूल न पाई थीं। उन्होंने एक एक हृदय स्पर्शी घटना का वर्णन इस प्रकार किया है कि आज भी जब हम इस रेखाचित्र को पढ़ते हैं तो मन तिक्त हो जाता है। उदाहरण के लिए एक बार सावन की तीज के अवसर पर वे मेहंदी लगाए, ओढनी पहने उसके पास जाती है और कौतूहलवश ओढनी उस पर डाल देती है। 'वह क्षण भर के लिए अपनी उस स्थिति को भूल गई जिसमें ऐसे रंगीन वस्त्र वर्जित थे और नए खिलौनों से प्रसन्न बालिका के समान बेसुध मन में उसे औढ़े, मेरी ठुड्डी पकड़कर खिलखिला उठी।'

6.4 पाठ की उपलब्धियां

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' पर केंद्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

- महादेवी वर्मा जितनी उच्च कोटि कि कवयित्री हैं, उतनी उत्कृष्ट गद्यकार भी हैं।
- महादेवी वर्मा ने विरह और वेदना से भरे गीतों के अलावा सामाजिक सरोकारों से भरे गद्य का भी लेखन किया है।
- महादेवी वर्मा के गद्य लेखन में यों तो निबंध और आलोचना भी शामिल है, लेकिन उनका अकाल्पनिक गद्य अधिक मार्मिक है।
- महादेवी वर्मा ने अकाल्पनिक गद्य की दो महत्वपूर्ण विधाओं संस्मरण और रेखाचित्र को विशेष रूप से समृद्ध किया।
- बड़ी सीमा तक उनके संस्मरणों में रेखाचित्र के तथा रेखाचित्रों में संस्मरण के गुण भी पाए जाते हैं। इसीलिए इन्हें 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहना उचित है।
- महादेवी वर्मा का रेखाचित्र 'भाभी' बाल विवाह की कुप्रथा पर चोट करता है।

6 .5 शब्द संपदा

1. अभिशप्त = जिसे शाप दिया गया हो, शापित, शापग्रस्त।
2. आभासित = आलोकित, प्रकाशमान।

3. उपेक्षित = तिरस्कृत।

4. कौतूहल = जानने की इच्छा होना, उत्सुकता।

5. क्लांत = मुरझाया हुआ, दुखी, थका हुआ

6. जारज = अवैध, गैर-कानूनी, नाजायज।

7. तिक्त = तीता, चरपरा।

8. दंभ = मिथ्या अभिमान।

9. महीयसी = महिमाशाली स्त्री।

10. विडम्बना = असंगति।

11. विरक्ति = वैराग्य।

6 .6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

6.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. महादेवी वर्मा को 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' किसने कहा था?

A. सूर्य प्रसाद दीक्षित B. महात्मा गांधी

C. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' D.राजा राम मोहन राय

2. महादेवी वर्मा की किस गद्य कृति को 'स्त्री विमर्श की गीता' के रूप में जाना जाता है?

A. स्मृति की रेखाएं B. पथ के साथी

C. अतीत के चलचित्र **D. शृंखला की कड़ियाँ**

3. रेखाचित्र 'भाभी' में भाभी की दिनचर्या की तुलना किससे की गई है?

A. सूखे पत्तों से B. अंधेरी कोठरी से **C. द्रौपदी के चीर से** D. गंगा की धारा से

4. रेखाचित्र में 'भाभी' को 'अनाथिनी' और 'अभागिनी' क्यों कहा गया है?

A. क्योंकि वे मारवाड़ी परिवार से थीं

B. क्योंकि वे बचपन में विधवा हो गई थीं और उनका कोई सहारा नहीं था

C. क्योंकि उनके पास कोई संपत्ति नहीं थी

D. क्योंकि वे अशिक्षित थीं

5. महादेवी वर्मा ने 'भाभी' के ललाट का वर्णन करते समय 'दो काली रूखी लटों' का उल्लेख विशेष रूप से क्यों किया है?

A. फैशन दिखाने के लिए

B. भविष्य में आने वाले तूफान का संकेत देने के लिए

C. उनकी सुंदरता बढ़ाने के लिए

D. सिर्फ शारीरिक बनावट बताने के लिए

6. लेखिका के मन में रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति (नापसंदगी) का मुख्य कारण क्या था?

A. रंगीन कपड़े बहुत महंगे थे

B. रंगीन ओढ़नी के कारण भाभी पर हुई क्रूरता की याद

C. वे सन्यासिन बनना चाहती थीं

D. उन्हें सफेद रंग बहुत पसंद था

7. रेखाचित्र के अनुसार, भाभी के ससुर उन्हें घर से बाहर जाने या किसी से मिलने क्यों नहीं देते थे?

A. क्योंकि वे उन्हें पढ़ाना चाहते थे B. क्योंकि वे बहुत बीमार रहती थीं

C. क्योंकि घर में बहुत काम था **D. उनकी चंचलता और 'निर्लज्जता' के डर से**

8. भाभी और बालिका महादेवी के बीच मित्रता का मुख्य आधार क्या था?

A. भाभी ने लेखिका को पढ़ाना शुरू किया था

B. दोनों की उम्र बराबर थी

C. दोनों को रंगीन कपड़े पहनना मना था

D. भाभी ने लेखिका के गुड़ियों वाले संसार को अपना लिया था

9. रेखाचित्र के तात्विक विवेचन में महादेवी की लेखनी की किस विशेषता का उल्लेख है, जो किसी व्यक्ति को 'यथातथ्य' देखने में मदद करती है?

A. धार्मिक कट्टरता B. अतिशयोक्ति **C. तटस्थता** D. काल्पनिकता

10. भाभी के पैरों की एड़ियों में लगी मिट्टी की रेखा को लेखिका ने किसके समान बताया है?

A. लाल रंग के घाव के समान B. चंदन के लेप के समान

C. काले रंग के समान **D. मटमैले महावर के समान**

खंड (ब)

6.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'भाभी' रेखाचित्र की बालिका की दृष्टि में रंगीन कपड़ों का जीवन में क्या महत्व है?
2. महादेवी वर्मा के गद्य की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. 'भाभी का जीवन संघर्ष और सामाजिक उपेक्षा का आख्यान है।' विवेचना कीजिए ।
4. 'भाभी के अबला जीवन में दुख होने का कारण उनका अपने आपको भाग्य पर छोड़ देना भी है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

खंड (स)

6.2.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' का तात्विक विवेचन कीजिए।
2. भाभी की दयनीय जीवन-चर्या का वर्णन कीजिए।
3. 'उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा।' इस कथन की पृष्ठभूमि का विवरण दीजिए।
4. महादेवी वर्मा के 'भाभी' रेखाचित्र के आधार पर भाभी के व्यक्तित्व की विशेषताएं बताइए।
5. 'भाभी'की करुण-कथा लिखने का उद्देश्य क्या रहा होगा? आज के समय में इसकी सार्थकता पर विचार कीजिए।

6.7 पठनीय पुस्तकें

1. अतीत के चलचित्र. महादेवी वर्मा.
2. महादेवी का गद्य. सूर्य प्रसाद दीक्षित.
3. महादेवी : चिंतन व कला. (सं) इन्द्रनाथ मदान.
4. महादेवी रचना संचयन. (सं) विश्वनाथ प्रसाद तिवारी.

इकाई 7 : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

7.0 प्रस्तावना

7.1 उद्देश्य

7.2 मूल पाठ : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

7.2.1 व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति

7.2.2 व्यंग्य की परिभाषा

7.2.3 व्यंग्य के साधन

7.2.4 व्यंग्य के तत्व एवं उद्देश्य

7.2.5 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा

7.2.6 व्यंग्य भाषा एवं शैली

7.3 पाठ का सार

7.4 पाठ की उपलब्धियाँ

7.5 शब्द संपदा

7.6 परीक्षार्थ प्रश्न

7.7 पठनीय पुस्तकें

7.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आधुनिक हिंदी गद्य के अंतर्गत आप कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं के बारे में जानकारी हासिल कर चुके हैं। गद्य साहित्य की परिधि बहुआयामी है। इसके अंतर्गत कई विधाओं की चर्चा होती है जिनमें व्यंग्य भी एक है। व्यंग्य का लक्ष्य आमतौर पर मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना होता है। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अरुचि प्रकट करने के और भी ढंग हो सकते हैं, किंतु व्यंग्य का स्वर और पद्धति एकदम अलग है। यह साहित्य का वह रूप है जो लोगों या समुदायों की आडंबर-युक्त पतित अवस्था को उजागर करता है, ताकि उनमें सुधार लाने का प्रयास किया जा सके। व्यंग्यकार के पास एक सकारात्मक आदर्श होता है और उसी के संदर्भ में वह गिरी हुई स्थिति पर कटाक्ष करता है। प्रस्तुत इकाई में हम गद्य साहित्य की व्यंग्य विधा का अध्ययन करेंगे।

7.1 उद्देश्य

- व्यंग्य विधा और उसके स्वरूप पर आधारित इस इकाई के अध्ययन से आप -
- व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य की परिभाषाओं से अवगत हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य के साधन, विशेषता एवं उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- व्यंग्य के शास्त्रीय पक्ष को समझते हुए उसके अलग-अलग तत्वों के बारे में जान सकेंगे।

7.2 मूल पाठ : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

व्यंग्य समाज के यथार्थ से जुडा हुआ साहित्य है। वह समाज में व्याप्त अन्याय, आत्याचार, पाखंडीपन, कालबाजारी, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हुए समाज को सही दिशा दिखाता है। साहित्य का मुख्य लक्ष्य है समाज को सही मार्ग दिखाना। लेकिन कई बार कुछ बातों को सीधे शब्दों में अभिव्यक्त करना असंभव लगता है। ऐसे में व्यंग्य का सहारा लेकर अभिव्यक्त किया जाता है, बात चाहे सत्ता की हो या धर्म की। व्यंग्यकार सहजता से अपनी बात कह जाता है जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। धागे को सुईं में जिस नाज़ुक तरीके से पिरोया जाता है, व्यंग्य भी कुछ इसी प्रकार की क्षमता रखता है। समाज रूपी सुईं में व्यंग्य रूपी धागे को पिरोने का काम व्यंग्यकार करते हैं ताकि समाज सुचारु रूप से संचालित हो सके और स्वस्थ समाज का निर्माण हो।

व्यंग्य एक भाषाई कार्य है। भाषा के साथ-साथ व्यंग्य का जन्म हुआ होगा, क्योंकि सामान्य बातचीत में, रोजमर्रा के जीवन में हम अक्सर व्यंग्य का सहारा लेते हैं। इसलिए कह सकते हैं कि बोलचाल की भाषा में व्यंग्य का प्रयोग सामान्य तौर पर होता है। हम अपनी बातचीत में व्यंग्य के लिए 'किया जाता है', 'कसा जाता है', 'व्यंग्य मारा जाता है', 'व्यंग्य बाण चलाया जाता है' जैसे मुहावरों का प्रयोग अक्सर करते हैं। लेकिन साहित्य में एक विधा के रूप में इसका आविर्भाव बहुत बाद में होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि साहित्य सबका साथ चाहता है, किंतु व्यंग्य में सबका साथ होना मुमकिन नहीं है।

व्यंग्य में विरोधाभास होता है। पाखंड पर चोट होती है। ऊपरी तौर पर न दिखने वाले छल-प्रपंच का पर्दाफ़ाश होता है। इसमें कटु सत्य की आलोचना होती है। व्यंग्यकार जीवन और जगत की वास्तविक अनुभूतियों को व्यंग्य का मुलम्मा चढाकर प्रस्तुत करता है। कल्पनिक

जीवन के खोखलेपन से वास्तविक जीवन के कटु सत्य का साक्षात्कार कराता है। इन्हीं कारणों से व्यंग्य को साहित्य में स्थान बहुत बाद मिला।

खैर, आप इस इकाई के अंतर्गत विस्तार से व्यंग्य की व्युत्पत्ति, परिभाषा, साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप तथा आयाम आदि के बारे में जान पाएंगे। तो चलिए, व्यंग्य को जानने-समझने का प्रयास करें।

बोध प्रश्न

- साहित्यकार व्यंग्य का सहारा क्यों लेता है?

7.2.1 व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति

व्यंग्य शब्द मूलत: संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ (पृ.1072) में इसकी निष्पत्ति वि उपसर्ग + अञ्ज धातु + ण्यत प्रत्यय के योग से मानी गया है। हिंदी साहित्य कोश (पृ. 649) में वि + अंग के योग से इस शब्द की व्युत्पत्ति बताई गई है। इसका प्रयोग मूलत: शब्द शक्ति के अंतर्गत किया जाता है। इसलिए हिंदी शब्द सागर तथा नालंदा विशाल शब्द सागर में व्यंग्य का अर्थ इस प्रकार बताया गया है - 1) शब्द का वह गूढ अर्थ जो उसकी व्यंजना-वृत्ति द्वारा प्रकट हो और 2) ताना, बोली, चुटकी। मानक विशाल हिंदी शब्दकोश में व्यंजनावृत्ति द्वारा बोधित अर्थ, संकेत द्वारा भाव या अर्थ व्यक्त करना या गूढार्थ कहा गया है। वर्तमान में इसकी परिधि अधिक विस्तृत और व्यापक दिखाई देती है। इसकी कुछ विशेषताएँ हैं □व्यंग्य का मूल स्रोत विकृति है। अर्थात सामाजिक विद्रूपताओं को उभारना व्यंग्य का प्रमुख कार्य है।

यह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर जाने की प्रक्रिया है। साथ ही व्यंग्य बुद्धिपरक होता है, इसमें विवेक पूर्ण चिंतन होता है, इसीलिए कभी-कभी हास्य का पुट होते हुए भी चिंतन की गहराई रहती है।

अक्सर किसी विषय पर जब खुले आम बात नहीं कही जा सकती है, तब व्यंग्य का प्रयोग किया जाता है।

व्यंग्यकार सामान्य मनुष्य से भी अधिक संवेदनशील होता है। इसीलिए उसके स्वर में आक्रोश होता है, उसकी अभिव्यक्ति में चेतना का स्वर तीव्रता से मुखरित होता है, सुधार एवं न्याय की मांग होती है। मनोवैज्ञानिक तत्वों से परिपूर्ण तथा सुधार की कामना से प्रेरित होता है। यह व्यंजना मूलक अभिव्यक्ति होने के कारण सामान्य रूप में इसके अर्थ की गहराई को समझना कठिन है। इसके लिए उसमें गहरी पैठ लगाना जरूरी है। नैतिकता के निकट और विचारप्रधान होता है।

हिंदी में 'व्यंग्य' को अंग्रेजी के सटायर का पर्याय माना जाता है। पुरातन काल में यह शब्द पर-निंदा के अर्थ में प्रयुक्त होता था। लेकिन आज सटायर शब्द का प्रयोग समाज में छिपी बुराइयों को उजागर करने वाले कथन के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न

- व्यंग्य किसे कहते हैं?
- व्यंग्य की व्युत्पत्ति कैसे बताइए?
- व्यंग्यकार के गुण बताइए।

7.2.2 व्यंग्य की परिभाषा

दशरथ ओझा - "व्यंग्य की युगीन परंपरा अपना एक अलग इतिहास रखती है। हिंदी साहित्य के मंथन से हम इस निष्कर्ष पर पहंचते हैं कि व्यंग्य की प्रहसन परंपरा वैदिक साहित्य से होती हुई संस्कृत साहित्य तक पहुंचती है।"

हरिशंकर परसाई - "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफ़ाश करता है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।"

केशवचंद्र वर्मा - "मानव व्यापार के व्यापक संदर्भ में कथनी और करनी का भेद सहज ही व्यंग्य को जन्म देता रहता है।"

हजारीप्रसाद द्विवेदी - "व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठ से हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहनेवाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना देता हो।"

अंग्रेज़ी विश्वकोश - "व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक रचना है जो हास्यमय हो तथा व्यक्तिगत दोषों, मूर्खताओं, निंदाओं और त्रुटियों को उपहास, मज़ाक, हँसी, ठिठोली, लक्षणा आदि साधनों के द्वारा रोकती है। यह निंदा कभी-कभी सुधार के उद्देश्य से की जाती है।"

परंपरागत रूप से व्यंग्य के दो प्रकार हैं। एक को औपचारिक या प्रत्यक्ष तथा दूसरे को अनौपचारिक या अप्रत्यक्ष व्यंग्य कहा जाता है। प्रत्यक्ष व्यंग्य अपने आप में एक कृति होता है। इसमें प्रायः लेखक 'मैं' शैली का प्रयोग करता है और सीधे पाठक को संबोधित करता है। अप्रत्यक्ष व्यंग्य किसी अन्य कृति में प्रसंगवश आता है। भारतेंदु रचित 'अंधेर नगरी' प्रत्यक्ष व्यंग्य का उदाहरण है, तो प्रेमचंद रचित 'गोदान' में गोबर द्वारा सूदखोर महाजनों पर केन्द्रित

उपरूपक अप्रत्यक्ष व्यंग्य का। साहित्यिक विधा के रूप में व्यंग्य रचनात्मक साहित्य को अधिक आनंदप्रद बनाता है और पाठकीय अनुकूलता प्रदान करता है। चिंतन की रूखी-सूखी अभिव्यक्ति की तुलना में व्यंग्य ज़्यादा सरस लगता है। इसलिए साहित्यकार व्यंग्य की रचना में रुचि लेते हैं।

बोध प्रश्न

- परसाई ने व्यंग्य के बारे में क्या कहा है?
- हजारीप्रसाद द्विवेदी व्यंग्य किसे कहते हैं?

7.2.3 व्यंग्य के साधन

व्यंग्यकार समाज की विकृतियों को उजागर करने के लिए हास (ह्यूमर), परिहास (पैरोडी), उपहास, वाग्वैदग्ध्य, वक्रोक्ति, प्रहसन, उपालंभ जैसे साधनों द्वारा व्यंग्य की अभिव्यक्ति करता है। व्यंग्य के लिए ये सारे साधन अस्त्र का काम करते हैं, फिर भी इनमें महीन अंतर दिखाई देता है। तो चलिए, इनमें से कुछ प्रमुख साधनों और व्यंग्य के संबंध के बारे में विस्तृत जानकारी पा लें -

अ) हास्य और व्यंग्य : पाश्चात्य साहित्य में हास्य का विवेचन कॉमेडी के अर्थ में किया जाता है तथा भारतीय साहित्य में काव्य के नौ रसों के अंतर्गत हास्य रस की विवेचना होती है। हास्य का उद्भव विकृत विचार, विकृत वेश, विकृत आचरण, विकृत वाणी आदि से होता है। इसलिए उसे विकृतियों का वाहक भी कह सकते हैं। इसमें जो विसंगति पाई जाती है, उसी से आनंद, मनोरंजन या मजा उत्पन्न होता है। हास्य के द्वारा मनुष्य अपने जीवन की जटिलताओं को दूर कर शांति का अनुभव करता है।

सामान्य तौर पर व्यंग्य शब्द का प्रयोग हास्य के साथ सहजता से ही कर दिया जाता है। यह भी माना जाता है कि हास्य-व्यंग्य अलग नहीं बल्कि एक ही हैं। जबकि दोनों शब्दों के उद्देश्य को देखा जाय तो दोनों में अंतर की हल्की रेखा दिखाई देगी। हास्य का उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करना, हँसाना या विनोद प्रदान करना होता है और हास्य केवल बाहरी विसंगतियों को पकडता है। जबकि व्यंग्य का प्रयोग गंभीर चिंतन से भरा होता है जिसमें विसंगतियों पर कुठाराघात किया जाता है और व्यंग्य विसंगतियों की तह तक जाता है। दोनों के अंतर को परिणामों के आधार पर स्पष्ट करते हुए गोपाल प्रसाद व्यास ने कहा है- "विनोद कालिंदी की आनंद लहर है और व्यंग्य बरसाती गंगा की उफनती धारा का कालग्रासी भँवर। विनोद साहित्य का कांतासम्मित रस है और व्यंग्य गुलाब के नीचे का काँटा।" हरिशंकर परसाई व्यंग्य के माध्यम से हास्य रस की स्थिति को इस प्रकार प्रकट करते हैं- "हमारी एक पड़ोसिन वृद्धा बीमार पड़ी

थी। हमसे पानी माँगकर पीती थी-उठा नहीं जाता था। सहसा किसी ने आकर कहा कि पड़ोसी डाक्टर साहब की लड़की किसी के साथ भाग गई। बस, चाची एकदम उठीं और काँखते-काँखते दो-चार पड़ोसियों को यह शुभ संवाद अपने व्यक्तिगत कमेण्ट के साथ सुना आई। उस दिन से उनकी हालत सुधरने लगी।" (परसाई रचनावली-3 पृ.30)। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यंग्य मानवीय करुणा को उभारता है, उपहास करता है, साथ ही उसके मूल में आक्रमण का भाव निश्चित रूप से विद्यमान रहता है। विद्वानों के मतों के आधार पर हास्य-व्यंग्य के अंतर को इस तरह देखा जा सकता है-

- हास्य में सहानुभूति होती है, व्यंग्य में घृणा, आक्रोश का भाव होता है।
- हास्य का संबंध हृदय से होता है, व्यंग्य का समाज की विसंगतियों से।
- हास्य का उद्देश्य मनोरंजन करना होता है, व्यंग्य का उद्देश्य वस्तु विशेष का विरोध करना भी होता है।
- हास्य सतह तक ही सीमित रहता है जब कि व्यंग्य गहरा होता है।
- हास्य में व्यंग्य की सृष्टि अवश्य होती है, व्यंग्य में हास्य की सृष्टि हो ही, यह जरूरी नहीं।

इस प्रकार हास्य और व्यंग्य में भिन्नता होने पर भी मान लिया जाता है कि हास्य-व्यंग्य एक दूसरे में समाहित हैं।

आ) उपहास और व्यंग्य : उपहास शब्द में खिल्ली उडाने का भाव झलकता है। इसमें कटुता का भाव है। अंग्रेजी में इसे Sarcasm, भी कहते हैं। Sarcasm की व्याख्या करते हुए उसे 'a sharp and Satirical or ironic utterance designed to cut or give pain' कहा गया है। उपहास में दो प्रमुख तत्व हैं- 1) हास, 2) किसी को उपालंभ देना, तुच्छ मानना। इसमें व्यक्तिगत ईर्ष्या, दुर्भावना की गंध आती है, लेकिन व्यंग्य व्यक्तिगत भूमि से सामाजिक भूमि तक की यात्रा है। व्यष्टि चेतना से निकलकर समष्टि चेतना में समाहित होता है। व्यंग्य में बदले का आग्रह नहीं होता, सुधार की कामना होती है। अत: व्यंग्य का साधन होने पर भी दोनों में अर्थ की दृष्टि से सूक्ष्म अंतर दिखाई देता है।

इ) वक्रोक्ति और व्यंग्य : वक्र (विलक्षण) + उक्ति (कथन) के मेल से वक्रोक्ति शब्द बना है जिसका अर्थ होता है विलक्षण या विपरीत कथन। डॉ. नगेंद्र ने वक्रोक्ति शब्द को IRONY का हिंदी पर्याय माना है। उनका कथन है कि "जब किसी वाक्य को किसी और प्रकार से कहने पर उसका दूसरा अर्थ निकले, वही वक्रोक्ति है। वक्रोक्ति द्वारा व्यंग्य किया जा सकता है, लेकिन हर वक्रोक्ति

व्यंग्य नहीं हो सकती, जब तक उसका स्वरूप सामाजिक न हो।"

ई) परिहास (पैरोडी) और व्यंग्य : 'परिहास' एक प्रकार की साहित्यिक शैली का नाम है। जिसमें किसी भी प्रचलित लोक पंक्ति या रचना की विषय वस्तु को नष्ट करके वर्तमान स्थितियों को उसी शैली या छंद में प्रस्तुत किया जाता है। शब्दों को उलट-पुलट कर व्यंग्य उभारा जाता है। इसलिए पैरोडी व्यंग्य की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, परंतु व्यंग्य का पर्याय नहीं है।

उ) प्रहसन : प्रहसन नाटक का एक रूप है जिसका उद्देश्य हास्य रस की सृष्टि करना होता है। व्यंग्य में नाटकीय तत्व जरूरी नहीं है। व्यंग्य में पैना तथा प्रत्यक्ष रूप से प्रहार किया जाता है, जब कि प्रहसन में हमेशा असाधारण नम्रता होती है।

ऊ) उपालंभ : इसका संबंध शृंगार के वियोग पक्ष से है। इसमें नायक को उलाहना देकर उसको नायिका के मन के अनुकूल किया जाता है। प्रेमी से मिलने की इच्छा तथा विरहाग्नि को दूर करने के लिए किसी सहचर के माध्यम से प्रेमिका उपालंभ देती है। जैसे सूरदास कृत भ्रमरगीत में उद्धव और गोपियों के बीच उपालंभ की स्थिति बनती है। उपालंभ में प्रेम की स्थिति होती है, जब कि व्यंग्य में ऐसा होना जरूरी नहीं है।

बोध प्रश्न

- हास्य को अंग्रेजी में क्या कहते हैं? और हास्य का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
- वक्रोक्ति शब्द कैसे बना है?
- प्रहसन और व्यंग्य में क्या अंतर है?
- व्यंग्य के प्रमुख साधन क्या-क्या है?

7.2.4 व्यंग्य के तत्व एवं उद्देश्य

व्यंग्य के तत्वों को लेकर विद्वानों में मतभेद है। डॉ. वीरेंद्र मेहंदीरत्ता के अनुसार व्यंग्य के तीन तत्व हैं-

1. आलोचना
2. हास्य अथवा बीभत्सता
3. सुधार।

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य के चार तत्व माने हैं। यथा-

1. साहित्य की व्यंजना शक्ति का प्रयोग

2. दूसरों की अथवा अपनी मूर्खता की हँसी उडाना

3. व्यंग्य की सृष्टि के लिए हास्य, वक्रोक्ति, वचन विदग्धता रूपी साधनों का प्रयोग

4. सुधार करने का उद्देश्य।

इनके अतिरिक्त व्यंग्य में निहित संवेदनशीलता, गंभीरता, बौद्धिकता, सांकेतिकता एवं तटस्थ विश्लेषण। सत्य का उद्घाटन व्यंग्य का चरम लक्ष्य है।

व्यंग्य के उद्देश्य -

अब तक आप यह भली प्रकार समझ चुके होंगे कि व्यंग्य के माध्यम से मानव चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा किया जाता है जिन्हें कोई व्यक्ति अपना गुण समझता है। ऐसा करने का प्रमुख उद्देश्य है सुधार करना। व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ-साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है।

व्यंग्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

अ) सत्य का प्रकटन

व्यंग्यकार का कार्य सत्य का उद्घाटन करना होता है। सत्य के उद्घाटन के लिए उसे कठोरता का पालन करना पड़ता है। निष्ठुर होकर उसे प्रहार करना होता है। दिनकर सोनवलकर के अनुसार-"साहित्य की सबसे बडी अदालत व्यंग्य है, जहाँ किसी के बरे में व्यंग्यकार सत्य और न्याय का दो टूक फ़ैसला करता है।" इस प्रकार सत्य का साथ देते हुए सत्य की तह तक पहुंचना भी व्यंग्य का उद्देश्य है।

आ) समाज शुद्धीकरण

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि समाज अच्छा है तो उत्कृष्ट साहित्य का सृजन होगा। यदि समाज कलुषित एवं गंदा है तो साहित्य उस गंदगी को दिखाते हुए उसे साफ करने का कार्य करती है। इस दृष्टि से व्यंग्य रचना समाज से गंदगी को साफ करने का कार्य करता है। अत: एक समाज को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए व्यंग्यकारों तथा व्यंग्यपरक रचनाओं का होना जरूरी है। व्यंग्यकार किसी भी प्रकार की आलोचना से नहीं कतराता। मेरिडिथ का कहना है कि व्यंग्यकार नैतिकता का ठेकेदार है, जिसका कार्य समाज में फैली गंदगी को साफ करना है।"

इ) क्रांति दूत

व्यंग्यकार समाज में क्रांति का कार्य करता है। उसी के जरिए समाज में व्याप्त विद्रूपताओं का पर्दाफ़श होता है, अन्यथा उस पर मखमली मुलम्मा चढा हुआ होता है ।

ई) लज्जित करना

हरिशंकर दुबे लिखते हैं, "व्यंग्य की चोट जिस पर होती है यदि वह व्यंग्य की मार से तिलमिलाता है और अपने आपको लज्जित महसूस करता है तभी व्यंग्य का सुधारात्मक उद्देश्य सफ़ल हो सकता है। जिस बात को कहने का साहस आम आदमी नहीं कर सकता व्यंग्य उसे खुले रूप में कह देता है।" व्यंग्य अपनी करारी चोट से समाज एवं जनता को लज्जित कर देता है।

ऊ) परिवर्तन लाना, चेतना जाग्रत करना

वास्तव में साहित्य का काम समाज को दर्पण दिखाना होता है। व्यंग्य इस उद्देश्य की पूर्ति बखूबी करता है। वह अहितकारी तत्वों का विध्वंस करता है और लोकमंगल की सिद्धि करता है।

ऊ) सुधार भावना

सत्य का उद्घाटन करना व्यंग्य तथा व्यंग्यकार का लक्ष्य होता है। सत्य का उद्घाटन करते हुए पाठक या दर्शक को मनवाने का काम भी व्यंग्य को करना है, तभी व्यंग्य तथा व्यंग्यकार सफल होते हैं। अपने समय के सत्य को स्पष्ट करने के कारण व्यंग्य साहित्य अपने युग का प्रामाणिक दस्तावेज होता है।

इनके अतिरिक्त यथार्थ, आत्मबोध, बौद्धिकता, सांकेतिकता, चिंतन दृष्टि, गंभीरता, संवेदना, विसंगतियों का कथन आदि व्यंग्य के अन्य तत्व हैं।

बोध प्रश्न

- व्यंग्य के प्रमुख उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
- व्यंग्य के तीन प्रमुख तत्वों के बारे में बताइए।

7.3.5 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा

प्रिय छात्रो जैसा कि आपको पहले ही बताया गया है, व्यंग्य का जन्म भाषा के साथ ही हुआ है। संस्कृत साहित्य में वैयक्तिक व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। कालिदास के कुमारसंभव, भवभूति के उत्तररामचरित आदि में इसी प्रकार के व्यंग्य मिलते हैं। अध्ययन की सुविधा हेतु व्यंग्य साहित्य को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

आदिकाल में व्यंग्य

अपभ्रंश साहित्य में जैन, बौद्ध, सिद्ध आदि की रचनाओं में धार्मिक आडंबर के विरोध में, धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य किया गया है। जैन महाकवि स्वयंभू ने पउम चरिउ में सीता की पीड़ा के माध्यम से नारी अवमानना का सुंदर व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। अमीर खुसरो ने अपनी मुकरियों में हास्य-व्यंग्य का प्रयोग किया है। चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में भी व्यंग्य का पुट

मिलता है।

भक्तिकाल तथा रीतिकाल में व्यंग्य

भक्तिकाल का संत साहित्य व्यंग्य का भंडार है, ऐसा कहना गलत नहीं होगा। क्योंकि इस युग के संत कवि जैसे कबीर, रैदास, तुलसीदास आदि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर, धार्मिक कट्टरपन पर, अंधविश्वास पर, जाति-पाँति आदि पर व्यंग्यबाण चलाए हैं। व्यंग्य का जैसा पैनापन कबीर के साहित्य में है, वह अन्यत्र नहीं। कबीर ने दोहों के माध्यम से अपने युग में व्याप्त खोखले कर्मकांड, सामाजिक तथा जातिगत भेद-भावों पर इस प्रकार व्यंग्य किया है कि उन्हें हिंदी का प्रथम व्यंग्यकार भी कह सकते हैं। इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है -"सच पूछा जाए तो आज तक हिंदी में ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उनकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे ही सब कुछ कह देने वाली शैली और अत्यंत सादी किंतु तेज प्रकाशन भंगिमा अनन्यसाधारण है।"

कबीर की तरह मध्ययुग में सूरदास का नाम भी श्रेष्ठ व्यंग्यकारों की सूची में शामिल है। सूरदास ने भ्रमरगीत में सगुण भक्ति की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए निर्गुण भक्ति पर व्यंग्य किया है। उपालंभ तथा वाग्विदग्धता के माध्यम से गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को तथा विरह की वेदना को उद्धव के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उद्धव को ज्ञानी पंडित कहकर उन्हें चिढ़ाती हैं और आयो घोष बड़ो व्यापारी कहकर व्यंग्य करती हैं। तर्क-वितर्क के रूप में बड़ा सुंदर व्यंग्य सूरदास के भ्रमरगीत में मिलता। तुलसीदास सामाजिक व्यंग्य के प्रबल समर्थक हैं। "मनही मन महेसु मुसकाही/हरि के विंग्य वचन नहि जाही"-शिव विवाह के इस प्रसंग में व्यंग्य का दर्शन होता है। परशुराम-लक्ष्मण संवाद, रावण-अंगद संवाद आदि में भी व्यंग्य का दर्शन होता है। रीतिकाल में भी बिहारी, घनानंद, रहीम, वृंद, रसखान आदि कवियों ने व्यंग्यपूर्ण लेखन किया है। केशवदास ने अपनी रामचंद्रिका में व्यंग्य-विनोद का प्रयोग किया है। इस युग में अधिकतर व्यंग्य का प्रयोग वक्रोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति के रूप में हुआ है।

आधुनिक काल में व्यंग्य

आदिकाल से आधुनिक काल तक आते-आते व्यंग्य की पृष्ठभूमि पूरी तरह से निर्मित हो चुकती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के साथ हिंदी साहित्य में आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है। इस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी और बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' प्रसिद्ध हैं। भारतेंदु ने गद्य-पद्य के साथ प्रहसन, नाटक, निबंध, कविता आदि कई विधाओं में व्यंग्य को

जीवंत रखा। अंधेर नगरी प्रहसन में अंग्रेजी शासन प्रणाली पर व्यंग्य किया गया है। प्रतापनारायण मिश्र स्वच्छंद एवं उन्मुक्त व्यंग्यकार थे।

भारतेंदु युग में जिन विधाओं में रचनाएँ हुईं उसका विकसित एवं परिनिष्ठित रूप द्विवेदी युग में दिखाई देता है। इस युग में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' अच्छे व्यंग्यकार थे। सरदार पूर्णसिंह, बाबू गुलाबराय, पद्मसिंह शर्मा और जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि इस युग के प्रसिद्ध रचनाकार एवं व्यंग्यकार थे। लोकरूढ़ि, अंधविश्वास, बाह्य आडंबर, ढकोसले, आर्थिक विषमता, अकाल, महामारी जैसी गंभीर समस्याओं पर लेखनी चलाई गई। शिवपूजन सहाय की रचनाओं में हास्य का समावेश होता है। उनका निबंध 'मैं हज्जाम हूँ' व्यंग्यपरक है।

द्विवेदी युग के बाद शुक्ल युग प्रारंभ होता है। इस युग में हिंदी गद्य विशेष रूप से निबंध प्रगति के मार्ग पर था। इस युग में वैचारिकता तथा मनोवैज्ञानिकता का अधिक समावेश था। आ.रामचंद्र शुक्ल स्वयं बहुत अच्छे निबंधकार थे। चिंतामणि-भाग 1 में उनके निबंध संकलित हैं। व्यंग्य के समावेश से उनके सारे निबंध प्रभावी बन पडे हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बेढब बनारसी आदि इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं। इस युग के बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। काव्य के क्षेत्र में निराला तीखे व्यंग्यकार थे। व्यंग्य की दृष्टि से कुकुरमुत्ता उनकी महत्वपूर्ण रचना है। पांडेय बेचन शर्मा उग्र और भगवतीचरण वर्मा ने भी व्यंग्य का प्रयोग किया है। भगवतीचरण वर्मा की हास्य-व्यंग्यपरक कहानी प्रायश्चित में धार्मिक पाखंड का पर्दाफ़ाश किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य साहित्य में महत्वपूण मोड़ आया। व्यंग्य एक अलग विधा के रूप में स्थान पाने लगा। कविता के माध्यम से भी व्यंग्य का तीव्र स्वर गुंजित हुआ। श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली, विद्यानिवास मिश्र, लक्ष्मीनारयण लाल, हरिशंकर परसाई, यशपाल, शरद जोशी, रवींद्र त्यागी, प्रेम जनमेजय, लतीफ घोंघी आदि व्यंग्य विधा के उन्नायक हैं। ।

बोध प्रश्न

- पउम चरिउ किसकी रचना है?
- भ्रमरगीत में किस पर व्यंग्य कसा गया है?
- कुकुरमुत्ता किसकी रचना है?
- प्रायश्चित किसकी कहानी है?
- आधुनिक काल के प्रमुख व्यंग्यकारों के नाम बताइए।

7.2.6 व्यंग्यभाषा एवं शैली

व्यंग्यभाषा में शब्द और वाक्य, मुहावरे, विशेषणों, सादृश्यों एवं विचलन का अपना शैलीय प्रभाव है। व्यंग्यभाषा आवृत्ति, पर्यायवाची, लक्षणात्मकता, आलंकारिकता, अर्थसामर्थ्य से परिपूर्ण होती है। इन सभी के सही प्रयोग से व्यंग्य रचना अत्यंत प्रभावी बनती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि व्यंग्य की अपनी निजी शैली है।

बोध प्रश्न

- व्यंग्यभाषा को कैसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है?

7.3 पाठ का सार

व्यंग्य साहित्य की एक सशक्त विधा है। वास्तव में साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। व्यंग्य के माध्यम से मानव चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा किया जाता है जिन्हें कोई व्यक्ति अपना गुण समझता है। ऐसा करने का प्रमुख उद्देश्य है सुधार करना। व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ-साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है। तात्पर्य यह कि साहित्य का मूल उद्देश्य समाज का दिशा निर्देश करना होता है। इस दृष्टि से व्यंग्य साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह कुठाराघात भी करता है, सोचने पर विवश भी करता है। लेकिन लचीले पन के साथ तथा हास्य के पुट के साथ। यही कारण है कि व्यंग्य साहित्य दूसरी सभी विधाओं से भिन्न होता है। मनोरंजन प्रधान, तीखा प्रहार करने वाली और विचार प्रधान एक अनूठी साहित्यिक विधा के रूप में 'व्यंग्य' विधा अब पूरी तरह प्रतिष्ठित है। व्यंग्य की चोट जिस पर होती है यदि वह व्यंग्य की मार से तिलमिलाता है और अपने आपको लज्जित महसूस करता है, तभी व्यंग्य का सुधारात्मक उद्देश्य सफल हो सकता है। जिस बात को कहने का साहस आम आदमी नहीं कर सकता व्यंग्यकार उसे खुले रूप में कह देता है। व्यंग्य अपनी करारी चोट से समाज एवं जनता को लज्जित कर देता है। व्यंग्य सत्य का उद्घाटन करते हुए पाठक या दर्शक को मनवाने का काम भी करता है। अपने समय के सत्य को स्पष्ट करने के कारण व्यंग्य साहित्य अपने युग का प्रामाणिक दस्तावेज होता है। यथार्थ, आत्मबोध, बौद्धिकता, सांकेतिकता, चिंतन दृष्टि, गंभीरता, संवेदना, विसंगतियों का कथन आदि भी व्यंग्य के तत्वों में शामिल हैं।

7.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. व्यंग्य एक ऐसी विधा है जो मूलतः सामाजिक परिवर्तन और सुधार के लिए समर्पित है।

2. संस्कृत काव्य शास्त्र में व्यंजना शब्द शक्ति, ध्वनि और वक्रोक्ति व्यंग्य के स्रोत के रूप में स्वीकृत हैं।
3. अंग्रेज़ी में सटायर की परंपरा व्यंग्य को पुष्ट करती है।
4. हिंदी साहित्य में सरहपाद, गोरखनाथ, कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास से लेकर रीतिकालीन कवियों तक के काव्य में व्यंग्यात्मक उक्तियाँ मिलती हैं।
5. आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से ही गद्य और पद्य दोनों में चुटीली व्यंग्यशैली के दर्शन होते हैं।
6. आज़ादी के बाद, क्रमशः व्यंग्य को स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

7.5 शब्द संपदा

1. अभिधा	=	वाच्यार्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति
2. अमर्याद नाटक	=	वह नाटक जो मर्यादा की परिधि से बाहर होता है, अश्लील
3. कुठाराघात	=	प्रहार करना, शब्दों से वार करना
4. मुखरित होना	=	अभिव्यक्त होना
5. मुलम्मा	=	दिखावा करना, पॉलिश
6. लक्षणा	=	सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ देने वाली शब्द शक्ति
7. विद्रूपता	=	कुरीति, बिगड़ी हुई
8. व्यंजना	=	अभिधा और लक्षणा के विरत हो जाने पर संकेत द्वारा अर्थ प्रकट करना

7.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

7.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार 'व्यंग्य' शब्द की व्युत्पत्ति किन तत्वों के मेल से हुई है?

A. वि + अंजन + य
B. व्यं + ग्य
C. वि उपसर्ग + अञ्ज धातु + ण्यत प्रत्यय
D. वि + अंग

2. व्यंग्यकार का मुख्य लक्ष्य क्या होता है?

A. मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष कर उनमें सुधार लाना **B. भाषा को जटिल बनाना**

C. केवल पाठकों का मनोरंजन करना D. व्यक्तिगत दुश्मनी निकालना

3. हास्य और व्यंग्य में प्रमुख अंतर क्या है?

A. व्यंग्य में सहानुभूति होती है, जबकि हास्य में आक्रोश

B. हास्य गहरा होता है और व्यंग्य केवल सतह तक सीमित रहता है

C. दोनों में कोई अंतर नहीं है, ये एक ही विधा के नाम हैं

D. हास्य का उद्देश्य मनोरंजन है, जबकि व्यंग्य का उद्देश्य विसंगतियों पर प्रहार है

4. डॉ. नगेंद्र ने अंग्रेजी के शब्द 'IRONY' का हिंदी पर्याय किसे माना है?

A. वक्रोक्ति B. प्रहसन C. उपालंभ D. उपहास

5. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किसे 'हिंदी का प्रथम जबरदस्त व्यंग्य लेखक' माना है?

A. हरिशंकर परसाई B. भारतेंदु हरिश्चंद्र C. सूरदास **D. कबीरदास**

6. डॉ. वीरेंद्र मेहंदीरत्ता ने व्यंग्य के कौन से तीन तत्व बताए हैं?

A. आलोचना, हास्य अथवा बीभत्सता, सुधार B. सत्य, अहिंसा, न्याय

C. लक्षणा, व्यंजना, अभिधा D. कल्पना, भावना, मनोरंजन

7. व्यंग्य की किस शैली में लेखक 'मैं' शैली का प्रयोग कर सीधे पाठक को संबोधित करता है?

A. उपालंभ B. अप्रत्यक्ष (अनौपचारिक) व्यंग्य

C. प्रत्यक्ष (औपचारिक) व्यंग्य D. पैरोडी

8. निराला की कौन सी रचना तीखे व्यंग्य का उदाहरण मानी जाती है?

A. अंधेर नगरी **B. कुकुरमुत्ता** C. राम की शक्ति पूजा D. सरोज स्मृति

9. मेरीडिथ के अनुसार व्यंग्यकार की क्या भूमिका है?

A. कल्पना लोक का वासी B. सिर्फ एक आलोचक

C. नैतिकता का ठेकेदार D. मनोरंजन का साधन

10. व्यंग्य के संदर्भ में 'परिहास' (पैरोडी) का क्या अर्थ है?

A. केवल हँसने वाली बातें करना

B. किसी का अपमान करना

C. किसी प्रचलित रचना की शैली में वर्तमान स्थितियों को प्रस्तुत करना

D. नायक को नायिका द्वारा उलाहना देना

खंड (ब)

7.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. व्यंग्य को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है? अर्थ स्पष्ट करें।
2. किन्हीं दो भारतीय विद्वानों के अनुसार व्यंग्य परिभाषा लिखिए।
3. व्यंग्य के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
4. भक्तिकाल में व्यंग्य के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
5. परिहास और उपालंभ के अर्थ को स्पष्ट करें।

खंड (स)

7.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. व्यंग्य के बारे में आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. हास्य और व्यंग्य के अत:संबंध पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी में व्यंग्य की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
4. सफ़ल व्यंग्य के साधन कौन-कौन से हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।
5. व्यंग्य की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए सटायर शब्द के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

7.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य. बालेंदुशेखर तिवारी.
2. आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य. वीरेंद्र मेहंदीरत्ता.
3. साहित्य में हास्य एवं व्यंग्य. प्रेमनारायण टंडन.

इकाई 8 : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

8.0 प्रस्तावना

8.1 उद्देश्य

8.2 मूल पाठ : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

8.2.1 हरिशंकर परसाई : जीवन और रचनायात्रा

8.2.2 'सदाचार का ताबीज़' : कथावस्तु

8.2.3 'सदाचार का ताबीज़' में प्रयुक्त व्यंग्य के साधन

8.2.4 'सदाचार का ताबीज़' में व्यंग्य : तात्विक विश्लेषण

8.2.5 'सदाचार का ताबीज़' भाषा एवं शैली

8.3 पाठ सार

8.4 पाठ की उपलब्धियाँ

8.5 शब्द संपदा

8.6 परीक्षार्थ प्रश्न

8.7 पठनीय पुस्तकें

8.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! पिछली इकाई में आप व्यंग्य लेखन या व्यंग्य विधा के सैद्धांतिक स्वरूप की जानकारी हासिल कर चुके हैं। आप जान चुके हैं कि व्यंग्य के माध्यम से लेखक मानव-चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा करता है जिन्हें कोई व्यक्ति या समुदाय अपना गुण समझता है। लेकिन इस तरह खुलासा करने का उद्देश्य 'सुधार' करना होता है। अभिप्राय यह है कि व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा को ऊँचाई पर पहुँचानेवाले लेखकों में हरिशंकर परसाई का नाम अग्रगण्य है। प्रस्तुत इकाई में आप हरिशंकर परसाई के एक व्यंग्य निबंध 'सदाचार का ताबीज़' का अध्ययन करेंगे।

8.1 उद्देश्य

इस इकाई में आप हरिशंकर परिसाई द्वारा लिखे गए व्यंग्य 'सदाचार का ताबीज़' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- हरिशंकर परसाई का जीवन और साहित्यिक परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- परसाई की रचनाओं के उद्देश्य और सामाजिक परिवर्तन में इनकी भूमिका का विवेचन कर सकेंगे।
- 'सदाचार का ताबीज़' की कथावस्तु और इस व्यंगता के प्रयोजन को समझ पाएंगे।
- व्यंग्य लेखन के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उनके आधार पर 'सदाचार का ताबीज़' को परख सकेंगे।
- विवेच्य व्यंग्य की सामाजिक उपादेयता को समझ सकेंगे।

8.2 मूल पाठ : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

प्रिय छात्रो ! 'सदाचार का ताबीज़' एक व्यंग्यात्मक निबंध है। पहले ही बता दिया गया है कि हरिशंकर परसाई ने इस निबंध में भ्रष्टाचार की व्याप्ति की चर्चा की है। उन्होंने न केवल भ्रष्टाचार की चर्चा की है बल्कि उसके उन्मूलन के उपाय पर भी विचार किया है। इसके साथ-साथ सामान्य जनता की रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति में आने वाली कठिनाइयों को व्यंग्य शैली में अंकित किया है। तो चलिए, पाठ को विस्तार से पढ़ लें और समझने का प्रयास करें कि परसाई ने इस रचना में भ्रष्टाचार जैसे गंभीर विषय को किस प्रकार रोचक शैली में प्रस्तुत किया है। यह भी जान लें कि समाज में इसके दुष्प्रभाव एवं समाधान को उन्होंने इस रचना में किस तरह इंगित किया है। तो चलिए, पहले का परिचय प्राप्त कर लें।

8.2.1 हरिशंकर परसाई : जीवन और रचनायात्रा

अ) जीवन परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित जामनी गाँव में 8 अगस्त, 1924 को हुआ था। परसाई की बाल्यावस्था के दौरान ही उनकी माता चंपाबाई का प्लेग के कारण देहांत हो गया था। परसाई के पिता का नाम झुमकलाल था जो कोयले की छोटी-छोटी ठेकेदारी करते थे। लेकिन कुछ असह्य बीमारी के कारण उनकी भी मृत्यु जल्दी हो गई थी। परिवार में पांच भाई-बहन थे। सबसे बड़े परसाई थे।

माता-पिता की मृत्यु के बाद परिवार का बोझ परसाई पर पड़ा। इसलिए उन्होंने विवाह भी नहीं किया। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बावजूद इसके, परसाई निरंतर अध्ययन करते थे। पढ़ाई उन्होंने नहीं छोड़ी। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया। 18 वर्ष की आयु में ही उन्होंने जंगल विभाग, नाकू (इटारसी के पास) में नौकरी शुरू कर दी। उन्होंने 1941 से 1943 तक जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कॉलेज में प्रशिक्षण लिया। बाद में 1943 में मॉडल हाईस्कूल, जबलपुर में अध्यापक हुए। कुछ विवाद के कारण उन्होंने 1952 में इस पद से

त्यागपत्र दे दिया। 1953 में वह किसी प्राइवेट स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे। लेकिन बाद में 1957 में वहाँ भी त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद परसाई हमेशा के लिए स्वतंत्र लेखन की ओर अग्रसर हो गए और साहित्य सृजन करते रहे।

बोध प्रश्न

- हरिशंकर परसाई का बचपन कैसे गुज़रा?
- परसाई ने कहाँ से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की?

आ) साहित्यिक परिचय

साहित्य सृजन के लिए परसाई ने व्यंग्य को अस्त्र के रूप में चुना। उनके व्यंग्य सृजन का विषय प्राय: प्रशासन, शासन, भ्रष्टाचार, राजनीति, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास, पाखंड़, शैक्षिक मूल्य विघटन आदि रहा है। व्यंग्य के माध्यम से इन सभी क्षेत्रों पर परसाई ने प्रहार किया है। विषय-क्षेत्र के चयन के बारे में वे स्वयं कहते हैं -"जीवन में जो घटनाएँ घटती हैं उन्हें देखता हूँ, विश्लेषित करता हूँ, विषयवस्तु का चुनाव विराट जन-जीवन से करता हूँ। अपने अध्ययन और अनुभव को रचनात्मक चेतना का अंग बना कर लिखता हूँ।" उनके इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि रचनाकार अपने आस-पास के परिवेश से प्रभावित होकर सृजन करता है।

परसाई जी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाकार थे। इसलिए आम आदमी के जीवन की विसंगतियों को उन्होंने पूरी संवेदना के साथ स्वर दिया है। वे अपने साहित्य में सहज रूप से साम्यवाद को ले आते हैं। मुक्तिबोध का मानना है कि परसाई के साहित्यिक सामर्थ्य का श्रेय मार्क्सवाद को जाता है - "परसाई जी का सबसे बडा सामार्थ्य संवेदनात्मक रूप से यथार्थ का आकलन है, चाहे वह राजनीतिक प्रश्न हो या चरित्रगत। हमारे यहाँ की साहित्यिक संस्कृति ने सच्चाई के प्रकटीकरण पर जो हदबंदी करके रखी है, उसे देखते हुए परसाई की कला सहज ही वामपंथी हो जाती है।"

परसाई की प्रथम रचना, 'पैसे का खेल' 23 नवंबर, 1947 को प्रहरी में छपी। 1955 तक प्रहरी में उनकी रचनाएँ छपती रही। 'कल्पना' और 'नई कहानियाँ' में नियमित रूप से परसाई जी के लेख छपते रहे। सारिका में कबिरा खडा बाजार में, परिवर्तन में अरस्तू की चिट्ठी, करंट में देख कबीरा रोया तथा माटी कहे कुम्हार से आदि कॉलम भी लिखे। प्रहरी, वसुधा और परिवर्तन नामक पत्रिकाओं में भी वे नियमित लिखते रहे। वसुधा पत्रिका की संपादकीय जिम्मेदारी भी

कुछ वर्षों तक निभाई। जनयुग में ये माजरा क्या है, साप्ताहिक लेख माला आदम नाम से तथा नयी दुनिया में सुनो भाई साधो साप्ताहिक लेख माला कबीर के नाम से लिखी।

उनकी समस्त कृतियाँ 'परसाई रचनावली' के छह खंडों में संकलित हैं। उनकी प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ इस प्रकार हैं- हँसते हैं रोते हैं (1951), तट की खोज (1955), तब की बात और थी (1956), भूत के पाँव पीछे (1961), रानी नागफनी की कहानी (व्यंग्य उपन्यास 1962), सदाचार का ताबीज़ (1967), निठल्ले की डायरी (1968), वैष्णव की फिसलन (1976) के अतिरिक्त जैसे उनके दिन फिरे, बेईमानी की परत, सुनो भाई साधो, पगडंडियों का जमाना, उल्टी सीधी, और अंत में, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, अपनी-अपनी बीमारी, तिरछी रेखाएँ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, एक लड़की पाँच दीवाने, विकलांग श्रद्धा का दौर, पाखंड़ का अध्यात्म, नाक वाले लोग, काग भगोड़ा, प्रतिनिधि व्यंग्य, तुलसीदास चंदन घिसै, कहत कबीर आदि महत्वपूर्ण व्यंग्य रचनाएँ हैं।

बोध प्रश्न

- परसाई किस वाद से प्रभावित थे?
- परसाई की पहली रचना किस पत्रिका में प्रकाशित हुई?
- परसाई की का नाम बताइए।

इ) सम्मान एवं पुरस्कार

परसाई को उनके महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए सन 1943 में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई। वे प्रगतिवादी लेखक संघ के अध्यक्ष भी रहे। 1982 में उन्हें साहित्य सेवा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1984 में मध्यप्रदेश सरकार का शिखर सम्मान प्राप्त हुआ। उस समय इनके पैर में गंभीर चोट थी और वे चल-फिर नहीं सकते थे। अत: उन्हें शिखर सम्मान से पुरस्कृत करने के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं उनके घर गए थे। मुंबई के सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्थान द्वारा चकल्लस पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उन्होंने 1962 में विश्व शांति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंड़ल के सदस्य के रूप में सोवियत संघ की यात्रा भी की।

बोध प्रश्न

- परसाई को चकल्लस पुरस्कार किस संस्थान के द्वारा प्राप्त हुआ?
- उन्हें डी.लिट. की उपाधि कौन से विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई?

ई) परसाई का व्यक्तित्व और व्यंग्य लेखन

परसाई के व्यक्तित्व एवं उनके जीवन के गर्दिश के दिन उन्हें कटु व्यंग्यकार बनाते हैं। उनके बारे में जानने के लिए स्वयं लेखक के आत्मकथ्य सहायक सिद्ध होते हैं। वे अपने बारे में सीधे शब्दों में बताते हैं कि वे एक ऐसे आदमी हैं, जो हँसता है, जिसमें मस्ती है, जो बेहद तीखा और कटु भी है। इसका कारण उनकी अपनी जिंदगी है - एक निहायत कटु, निर्मम और धोबी पछाड़ आदमी की ज़िंदगी।

बचपन में ही प्लेग से माँ की मृत्यु हो गई थी जिससे घर के हालात बिगड़ गए थे। परसाई के अनुसार वे काली रातें थीं - 1936-37 की वो काली रातें जब पूरे गांव पर प्लेग का कब्जा था। सब लोग गाँव छोड़कर चले गए थे। कुत्ते तक बस्ती छोड़ चले गए थे। जब खुद की आवाज़ें ही ड़रा देती थीं। जब मरणासन्न माँ के सामने सब लोग आरती गाते। ओम जय जगदीश हरे गाते-गाते पिता सिसकने लगते और माँ बिलखकर बच्चों को हृदय से चिपटा लेतीं और सब दुख में डूब जाते। माँ की मृत्यु के बाद पिता जिए तो, लेकिन लगातार बीमार, हताश, निष्क्रिय और अपने से ही ड़रते हुए। पाँचों भाई बहनों में मृत्यु का अर्थ समझने की स्थिति सिर्फ़ परसाई की थी। धंधा सब ठप्प। जमा पूंजी खायी जाने लगी। ऐसे में बहन का विवाह करके बोझ कम किया था। परसाई खुद लिखते हैं कि मुझे चूहों ने ही नहीं मनुष्य नुमा बिच्छुओं और सांपों ने भी बहुत काटा है और जब भी ऐसा होता है तब किसी भी व्यक्तित्व में एक धार आ जाती है। एक तीव्र प्रतिक्रिया प्रतिपल होती रहती है। यथार्थ की टक्करों से ऐसा बोध पैदा हो जाता है जिसमें उस समाज को बदल डालने की विकट इच्छा का होना लाज़िमी होता है। बशर्ते सोच की दिशा सकारात्मक हो।

परसाई कभी झूठ और पाखंड़ बर्दाश्त नहीं करते थे। दिखावे और सहानुभूति से उन्हें सख्त नफरत थी। वे लिखते हैं - "अभी भी दिखाऊ सहानुभूति वाले को चाँटा मार देने की इच्छा होती है। ज़ब्त कर जाता हूँ वरना कई शुभचिंतक पिट जाते।" उनके व्यक्तित्व को जानने के लिए ऐसे वाक्य सहायक हैं और साथ ही हमें यह भी पता चलता है कि तीखे व्यंग्य को रचना का आधार बनाने में परसाई जी का जीवन क्रम और उसमें निहित सकारात्मकता मुख्य कारण हैं। अपने जीवन की लाचारी से उन्होंने तीन विद्याएं सीखी थी - गरीबी पर बात करना और गरीबी में जीना, उधार माँगने की विद्या, बिल्कुल नि:संकोच और तीसरी बेफ़िक्री। अर्थात जो होना होगा, होगा, और क्या होगा? ठीक ही होगा। इस प्रकार की चेतना से परसाई के व्यक्तित्व निर्माण हुआ है जो उनकी लेखन में बकायदा प्रतिफलित होती रही है। बचपन से लेकर युवावस्था तक के गर्दिश के दिन उनकी मानसिकता और व्यक्तित्व निर्माण का अहम हिस्सा हैं। इसके विपरीत उनके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष यह भी है कि वे बहुत भावुक, संवेदनशील और बेचैन तबियत के आदमी थे।

उनकी प्रकृति पलायनवादी नहीं थी। वे हालात से कतराकर भागते नहीं थे, बल्कि संघर्ष करते थे और अपने आप को समझाते - "परसाई ड़रो मत किसी से। ड़रे कि मरे।" इसका मतलब यह नहीं कि वे घमंडी या उद्दंड़ थे। वे संघर्ष से लड़ने के लिए समष्टि से मिल जाना उचित मानते थे। इसके लिए वे व्यंग्य को हथियार बानाना चाहते थे। लेकिन व्यंग्य का सहारा लेना और लिखना क्या आसान था? इसके लिए उन्होंने इतिहास, समाज राजनीति और संस्कृति का गहरा अध्ययन किया।

परसाई बुनियादी तौर पर शिक्षक थे और मानते थे कि कोई भी सच्चा व्यंग्य लेखक मनुष्य को नीचा नहीं दिखाना चाहता। क्योंकि व्यंग्य तो मानव सहानुभूति से पैदा होता है जो मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना चाहता है। अर्थात व्यंग्य उससे कहता है-तू अधिक सच्चा, न्यायी और मानवीय बन! यदि सवाल उठे कि अच्छे व्यंग्य की पहचान क्या है? तो उनका जवाब होगा - "अच्छे व्यंग्य की पहचान यह है कि उसमें करुणा की अंतर्धारा होती है।"

बोध प्रश्न

- परसाई की माँ की मृत्यु किस बीमारी से हुई?
- क्या परसाई जी पलायनवादी प्रकृति के थे?
- अच्छे व्यंग्य की पहचान क्या है?

8.2.2 'सदाचार का ताबीज़' : कथावस्तु

प्रस्तुत पाठ 'सदाचार का ताबीज़' एक व्यंग्यपरक रचना है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कुठाराघात किया है। इसकी रचना संवाद शैली में हुई है। इसका प्रारंभ राजदरबार के दृश्य से होता है। यह एक ऐसे राज्य का दृश्य है जहाँ पर भ्रष्टाचार बडे पैमाने पर फ़ैला हुआ है जिसके कारण उस राज्य के राजा चिंताकुल हैं। रचना की शुरूआत इन पंक्तियों से होती है - एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। राजा अपने दरबारियों से कहते हैं कि प्रजा भ्रष्टाचार के फैलने की बात को लेकर बहुत हल्ला मचा रही है, लेकिन मुझे आज तक वह नहीं दिखा। कोई दिखे तो मुझे भी दिखाओ। रचना के आरंभ ही में ही उस देश और वहाँ के शासक की दशा का पता चल जाता है। जब राजा को भ्रष्टाचार नहीं दिखाई देता है तो दरबारियों को कैसे दिखाई देगा? राज दरबार में ऐसे लोग रहते हैं जो वास्तव में भ्रष्टाचार से जुड़े हैं, भ्रष्टाचार को पनपाते हैं और ऊपर से यह ढोंग रचते हैं कि भ्रष्टाचार आँखों से दिखनी वाली चीज़ नहीं है। इसकी जड़ें कहाँ तक और किस प्रकार फ़ैली हुई हैं, ये कहना कठिन है। फिर विशेषज्ञों को बुलाया जाता है। विशेषज्ञ कहते हैं -

“हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।” विशेषज्ञों की बातें सुनकर राजा कहता है कि ये गुण तो ईश्वर के हैं, तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है? तो जवाब मिलता है कि अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।

फिर भ्रष्टाचार मिटाने की योजना बनाई जाती है। भ्रष्टाचार की जड़ों को मिटाना बहुत जोखिम भरा कार्य था। विशेषज्ञों द्वारा दी गई रिपोर्ट पर सोच-सोचकर राजा बीमार पड़ जाते हैं। उनकी रातों की नींद हराम हो जाती है। दरबारी एक साधु की शरण में जाते हैं। लेखक के शब्दों में – एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा- "महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इस महान साधक को हम ले आये हैं । इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।" साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया।

साधु ने राजा को सदाचार का ताबीज़ देते हुए कहा कि - “महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा से होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फ़िट कर देता है, और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं जिन्हें आत्मा की पुकार कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार आदमी काम करता है। जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी चिंता में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का ताबीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बंधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। इस ताबीज़ से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है तब इस ताबीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को ताबीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।”

ताबीज़ के इस विशेष गुण के बारे में सुनकर राजा दरबारियों से सलाह मशविरा करने के पश्चात यह निश्चय करते हैं कि अपने राज्य से भ्रष्टाचार को पूरी तरह से मिटानेके लिए साधु को सदाचार का ताबीज बनाने का ठेका दिया जाय। राज्यों के अखबारों में खबरें छपीं - सदाचार के ताबीज़ की खोज! ताबीज़ बनाने का कारखाना खुला!

कुछ दिनों के पश्चात परीक्षा लेने के उद्देश्य से राजा वेष बदलकर कार्यालय गए। उस दिन 2 तारीख थी, एक दिन पहले तन्ख्वाह मिली थी। एक कर्मचारी को जब राजा ने पाँच का नोट दिया तो उसने उन्हें डाँटकर भगा दिया। महीने के आखिरी दिन राजा उसी व्यक्ति के पास

जाते हैं और पाँच का नोट दिखाते हैं, वह चुपचाप ले लेता है। राजा असमंजस में पड़ जाते हैं। जब ताबीज़ पर कान लगाकर सुनते हैं तो तावीज से स्वर निकल रहा था - अरे, आज तो इकतीस है, आज तो ले ले? सदाचारी या दुराचारी बनना हालात के अनुकूल तय होता है।

बोध प्रश्न

- राजा ने दरबारियों से क्या कहा?
- राजा ने भ्रष्टाचार को ईश्वर क्यों कहा?

8.2.3 'सदाचार का ताबीज़' में प्रयुक्त व्यंग्य के साधन

हरिशंकर परसाई ने 'सदाचार का ताबीज़' में व्यंग्य के साधनों का भरपूर प्रयोग किया है। छात्रो! लेखक ने बडे ही रोचक ढंग से भ्रष्टाचार और सदाचार के अंतर को बारीकी से स्पष्ट किया है। ध्यान से पढने पर इसमें निहित हास्य, वक्रोक्ति, उपहास या परिहास को हम समझ सकते हैं। इसमें निहित व्यंग्य को समझने के लिए बारीकी से इस पाठ को पढ़ना जरूरी है क्योंकि इसमें भ्रष्टाचार का वर्णन है जो स्वयं बारीक और सूक्ष्म होता है।

इसमें निहित हास-परिहास की बात यह है कि एक ओर भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए ठेका और ठेकेदारों को मिटाने की बात होती है, वहीं पर दूसरी ओर एक साधु को सदाचार का ताबीज़ बनाने का ठेका दिया जाता है। पाठ में विशेषज्ञों द्वारा जो सुझाव दिया जाता है उससे यह बात स्पष्ट होती है- "भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिटा दिया जाए तो उसकी घूस मिट जाए।"

आगे चलकर ऐसी परिस्थिति बनती है जब राज्य में सदाचार का ताबीज़ बनाने के कारखाने खोलने की बात होती है। तब एक मंत्री कहते हैं - "महाराज, राज्य क्यों झंझट में पडे? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाय। वे अपनी मंड़ली से ताबीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।"

एक स्थान पर साधु कहता है - "मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह ताबीज़ गले में बाँध लेने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता।" इस कथन के माध्यम से लेखक ने बहुत गंभीर बात को हास्य के पुट के साथ प्रस्तुत किया है। व्यंग्य के आधार पर परसाई इस बात की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं कि भ्रष्टाचार निवारण के नाम पर भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जाता है।

प्रस्तुत पाठ से हास-परिहास या उपहास और वक्रोक्ति के उदाहरण स्वरूप कुछ वाक्य प्रस्तुत हैं -

"हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।" - महाराज के इस कथन पर हँसी भी आती है और दया भी। जब महाराज ही भ्रष्टाचार को देख नहीं पाते, तो दूसरे कैसे देख सकते हैं? यह सोचने वाली बात है और शासन तंत्र पर कठोर व्यंग्य है। महाराज के संवादो में शासन करने वालों का अज्ञान नजर आता है। जैसे कि इस वाक्य में - "कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी तो देखें कि कैसा होता है।"

"अगर मिल जाय तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।"

"सिंहासन में है?" कहकर राजा साहब उछलकर दूर खडे हो गए।"

"हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था; हमें वह भी नहीं आता।"-राजा के इन शब्दों से अंधविश्वास को प्रश्रय मिलता है। राजतंत्र से जुडे हुए व्यक्ति किस प्रकार चापलूसी करके अपना उल्लू सीधा करते हैं, इस पर यह वाक्य प्रकाश डालता है- "हुजूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, कि बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गयी हैं कि हमें बारीक चीज़ नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी सूरत बसी हुई है।"

इसी क्रम में वक्रोक्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

"हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।"

"ये तो गुण ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?"

"हाँ, महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।"

"वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराजा के सिंहासन में है।"

"आधा पैसा बीचवाले खा गए।"

8.2.4 'सदाचार का ताबीज़' में व्यंग्य : तात्विक विश्लेषण

अध्येय व्यंग्य पाठ का मूल उद्देश्य है भ्रष्टाचार पर हमारा ध्यान आकृष्ट करना और भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु शासन तंत्र से जुडे लोग कैसे कदम उठाते हैं जिससे कि उन्मूलन के बहाने पुन: भ्रष्टाचार का प्रसार हो। भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए ठोस कदम उठाए तो जाते हैं लेकिन आखिरकार यह निर्णय कर लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने के लिए शासन व्यवस्था में ठोस बदलाव करना होगा जो कि संभव नहीं है। अत: बीच का रास्ता अपनाया जाता है। प्रस्तुत वाक्यों से आप इसे स्पष्टत: समझ सकते हैं-

विशेषज्ञ : "भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे।"

दरबारी : "महाराज, वह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट-फ़ेर करने पड़ेंगे! कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट-पुलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कहानियाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए जिससे बिना कुछ उलट-फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।"

राजा : "मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था, हमें वह भी नहीं आता।"

राजा के इन शब्दों से बीच का रास्ता निकालने का अर्थ बोधित होता है अर्थात कोई ऐसा रास्ता जिससे भ्रष्टाचार भी नष्ट हो और व्यवस्था भी यथारूप बनी रहे। साथ ही अंधविश्वास को भी पनपने में राजा योगदान देते हैं। देश की वास्तविक स्थिति पर यह कुठाराघात है।

बोध प्रश्न

- 'सदाचार का ताबीज़' का मूल उद्देश्य बताइये।

विवेच्य पाठ के माध्यम से इस कटु सत्य का उद्घाटन किया गया है कि कर्मचारियों को उचित वेतन नहीं मिलता जिससे वे अपना पेट भर सकें और लाचार होकर इधर-उधर रुपये के लिए न भटकें और भ्रष्टाचारी न बनें। महीने के पहले सप्ताह में कर्मचारी का पाँच रुपये को ठुकराना और उसी कर्मचारी का महीने की आखिरी तारीख को पाँच रुपये का नोट लेने के लिए मजबूर होना इस बात का साक्षी है। आदमी पेट के लिए गलत काम करता है। पेट और लालच आदमी की हैवानियत को बाहर लाने का काम करते हैं। अच्छे हालात में अच्छा बनना कोई बड़ी बात नहीं है किंतु विपरीत परिस्थितियों में भी यदि कोई अच्छा काम करता है तो वही सच्चा काम होता है। अत: एक ओर परिस्थिति आदमी को सदाचारी या दुराचारी बनाती है तो दूसरी ओर राजनीति के इस खेल में जहाँ ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जाता है, भ्रष्टाचार के मिटने का सवाल ही नहीं उठता। गांधारी की आँखों पर बंधी पट्टी की तरह सदाचार का ताबीज़ बाँध लेने मात्र से क्या भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा? यह गंभीर चिंतन का विषय है।

बोध प्रश्न

- भ्रष्टाचार के कोई दो कारण बताइए।

भ्रष्टाचार को मिटाने की योजना बनाई जाती है, इसके माध्यम से परसाई समाज के शुद्धीकरण की बात करते हैं। विशेषज्ञ सुझाव तो देते हैं, परंतु उस पर चलना या न चलना शासक के हाथ में है।

इस व्यंग्य के माध्यम से परसाई जी इस सत्य का उद्घाटन करते हैं कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा से सदाचार की पुकार उठे। जो कि कठिन है। किंतु उस राह पर चलने का प्रयास अवश्य किया जा सकता है।

परसाई जी का मानना है कि "सुधरने के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखता हूँ। चाहता हूँ। याने कोशिश करता हूँ-चेतना में हलचल हो जाये, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाये इतना काफ़ी है। सुधरने वाले खुद अपनी चेतना से सुधरते हैं।"

'सदाचार का ताबीज़' में सुधारवादी संकेत नहीं है। इतना है कि ताबीज़ बांधकर आदमी को ईमानदार बनाने की कोशिश की जा रही है। पहले जो कर्मचारी घूस को मना करता है, वही महीने की आखिरी तारीख को घूस लेने के लिए मजबूर होता है। ताबीज़ तो बंधा है लेकिन जेब खाली है।

इसके माध्यम से परसाई जी यह कहना चाहते हैं कि "बिना व्यवस्था में परिवर्तन किए, भ्रष्टाचार के मौके को खत्म किए और कर्मचारियों को बिना आर्थिक सुरक्षा दिए भाषणों, सर्कुलरों, उपदेशों, सदाचार समितियों, निगरानी आयोगों द्वारा कर्मचारी सदाचारी नहीं होगा।"

बोध प्रश्न

- भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए क्या करना चाहिए?

8.2.5 'सदाचार का ताबीज़' : भाषा एवं शैली

विवेच्य व्यंग्य की रचना सामान्य बोलचाल की भाषा में हुई है। संवाद शैली में कथा के रूप में इसका वर्णन किया गया है। छोटे-छोटे वाक्यों से जादू उत्पन्न किया गया है। भाषा सपाट है जैसे - एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। इसमें देशज, उर्दू, संस्कृत के शब्दों का भी यथारूप प्रयोग किया गया है।

उर्दू के शब्द : हुज़ूर, दरबारी, नाज़ुक, हाजिर, ताबीज़, आदि।

संस्कृत के शब्द : विराट, अंजन, विशेषज्ञ, निवेदन, स्थूल, सूक्ष्म, अगोचर, सर्वत्र, व्याप्त, भवन, प्रपितामह, सदाचार आदि।

विदेशी शब्द : बिल, रिपोर्ट, सप्लाई आदि।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ : हल्ला मचाना, आग के हवाले कर देना, कान खडे हो जाना, उलट-फेर करना आदि।

रचना के प्रस्तुतीकरण में नाटकीय शैली पाठक को विशेष प्रभावित करती है।

बोध प्रश्न

- 'सदाचार का ताबीज़' की भाषा शैली कैसी थी?

8.3 पाठ सार

हिंदी व्यंग्य लेखन में हरिशंकर परसाई का स्थान इसलिए महत्वपूर्ण है कि वे हिंदी के ऐसे पहले रचनाकार हैं जिन्होंने 'व्यंग्य' को 'विधा' का दर्जा दिलाया। उन्होंने व्यंग्य को हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से निकालकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ पाठक के मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि उसे उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती हैं, जिनसे घिरा होते हुए भी वह आम तौर से बचकर निकाल जाता है। मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवनमूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए वे हमेशा विवेक और विज्ञान-सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य 'सदाचार का ताबीज़' समाज-समीक्षा की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। इस व्यंग्य-रचना के माध्यम से लेखक ने राजा की मूर्खता, कपटी प्रजा और साधु के माध्यम से भ्रष्टाचार का खुलासा किया है। साथ ही अंधविश्वास के बढ़ने के कारण को भी इंगित किया है। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सदाचार बाह्य वस्तु नहीं है। वह प्रत्येक व्यक्ति के अंदर आत्मा की पुकार बनकर व्याप्त है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए परिस्थिति भी अनुकूल हो और व्यक्ति के मन में सदाचारी भाव निहित हो, यह आवश्यक है। अन्यथा ऊपरी तौर पर केवल सदाचार के ताबीज़ बांधने से जड़ तो क्या भ्रष्टाचार की शाखाओं को भी तोड़ा नहीं जा सकता। सदाचार का तावीज बाँधकर भी अंदर से सदाचारी होना यही जीवन की कठोर आवश्यक है।

8.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

1. हरिशंकर परसाई को व्यंग्यकार बनाने में उनके जीवन की कठिन परिस्थितियों का बड़ा योगदान है।
2. हरिशंकर परसाई ने आज़ादी के बाद के भारत में वर्तमान विसंगतियों को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है।
3. परसाई व्यंग्य लेखन में कथातत्व और नाटकीयता का भरपूर इस्तेमाल करते हैं।

4. परसाई ने व्यंग्य लेखन केवल पाठक को हँसाने के लिए नहीं बल्कि सामाजिक विकृतियों का बोध कराने के लिए किया है।
5. परसाई अपने व्यंग्य में समस्याओं का समाधान नहीं देते बल्कि उनका खुलासा करके पाठक की चेतना पर चोट करते हैं।

7.5 शब्द संपदा

1. उन्मूलन	=	मिटाना, निर्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना
2. जटिल	=	कठिन, मुश्किल
3. प्रपितामह	=	परदादा
4. भर्त्सना	=	निंदा, दोषारोपण
5. मरणासन्न	=	जिसकी मृत्यु निकट हो
6. मूल्य विघटन	=	मूल्यों का ह्रास, मूल्य नष्ट होना
7. यथार्थ परिदृश्य	=	वास्तविक चित्रण, हकीकत
8. विसंगति	=	बेमेल स्थितियाँ

8.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

8.6.1 सही विकल्प चुनिए

1. हरिशंकर परसाई का जन्म किस राज्य में हुआ था?

A. उत्तर प्रदेश **B. मध्य प्रदेश** C. बिहार D. राजस्थान

2. परसाई की माता का देहांत किस बीमारी के कारण हुआ था?

A. हैजा B. चेचक C. तपेदिक (TB) **D. प्लेग**

3. हरिशंकर परसाई किस राजनीतिक विचारधारा से गहराई से प्रभावित थे?

A. पूंजीवाद B. गांधीवाद C. अस्तित्ववाद **D. साम्यवाद (मार्क्सवाद)**

4. परसाई के अनुसार 'सच्चे व्यंग्य' की प्रमुख पहचान क्या है?

A. दूसरों को नीचा दिखाना B. केवल मनोरंजन करना

C. करुणा की अंतर्धारा होना D. झूठ का सहारा लेना

5. कहानी 'सदाचार का ताबीज़' में विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार की तुलना किससे की है?

A. ईश्वर से B. जहर से C. भूत-प्रेत से D. हवा से

6. साधु के अनुसार, ताबीज़ भ्रष्टाचार को कैसे रोकता है?

A. राजा को सूचना देकर B. धन का लालच खत्म करके

C. भ्रष्टाचारी को दंड देकर **D. आत्मा की बेईमानी के स्वर को दबाकर**

7. राजा ने जब वेश बदलकर कर्मचारी को 31 तारीख को पैसे दिए, तो क्या हुआ?

A. कर्मचारी ने उसे डाँटकर भगा दिया B. कर्मचारी ने राजा को पहचान लिया

C. कर्मचारी ने चुपचाप पैसे ले लिए D. ताबीज़ टूट कर गिर गया

8. परसाई को 1982 में किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

A. पद्म श्री B. भारत रत्न **C. साहित्य अकादमी पुरस्कार** D. ज्ञानपीठ पुरस्कार

9. लेखक के अनुसार, भ्रष्टाचार मिटाने का वास्तविक उपाय क्या है?

A. कठोर जेल की सजा देना B. अधिक से अधिक ताबीज़ बाँधना

C. व्यवस्था में परिवर्तन और आर्थिक सुरक्षा D. भ्रष्टाचार के बारे में भाषण देना

10. परसाई ने स्वतंत्र लेखन कब से शुरू किया?

A. 1957 में B. 1962 में C. 1982 में D. 1947 में

खंड (ब)

8.6.2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'सदाचार का ताबीज़' में अभिव्यक्त हास्य व्यंग्य पर अपने शब्दों में लिखिए।
2. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार का विश्लेषण किस प्रकार किया?
3. हरिशंकर परसाई की रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

8.6.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए।
2. व्यंग्य लेखन में परसाई के योगदान पर प्रकाश डालिए।
3. 'सदाचार का ताबीज़' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
4. व्यंग्य के तत्वों के आधार पर 'सदाचार का ताबीज़' का विश्लेषण कीजिए।

8.7 पठनीय पुस्तकें

1. सदाचार का ताबीज़. संकलित: गद्य गाथा. (सं) वीणा अग्रवाल

2. परसाई रचनावली. छह खंड. (सं) कमला प्रसाद.

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

Programme: BA Hindi ILH-1

Title and Paper Code: आधुनिक हिन्दी की विधाएँ (BNHN301AET)

SEMESTER : 3rd

Time: 2 hours Marks: 35

यह प्रश्नपत्र तीन भागों में विभाजित है- भाग 1 भाग 2 और भाग 3। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग-1

1. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए- 1x5=5

i. निराला की कौन सी रचना तीखे व्यंग्य का उदाहरण मानी जाती है?

A. अंधेर नगरी B. कुकुरमुत्ता C. राम की शक्ति पूजा D. सरोज स्मृति

ii. मेरीडिथ के अनुसार व्यंग्यकार की क्या भूमिका है?

A. कल्पना लोक का वासी B. सिर्फ एक आलोचक

C. नैतिकता का ठेकेदार D. मनोरंजन का साधन

iii. . डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को समझाने के लिए चित्रकला के किन दो रूपों का उदाहरण दिया है?

A. पोर्ट्रेट और लैंडस्केप B. स्केच और छायाचित्र

C. ऑयल पेंटिंग और वाटर कलर D. स्टिल लाइफ और सामान्य दृश्यालेख

iv. डॉ. गोपाल राय के अनुसार 'कहानी' शब्द मूलतः किस भाषाई स्रोत से हिंदी में आया है?

A. अंग्रेजी (Short Story का अनुवाद) B. अवधी और भोजपुरी C. संस्कृत D. फारस

v. प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत किस नाम से की थी?

A. गुलाबराय B. धनपतराय C. नवाबराय D. कलम का सिपाही

भाग-2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है। 5x4 = 20

2. महादेवी वर्मा के गद्य की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. रेखाचित्र विधा का विकास पर प्रकाश डालिए।
4. प्रेमचंद का परिचय दीजिए।
5. 'पंच परमेश्वर' कहानी से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. 'भोर का तारा' में निहित सांस्कृतिक बोध पर चर्चा कीजिए।
7. साहित्यिक विधा के रूप में रेखाचित्र की विशेषताएं बताइए।
8. व्यंग्य साहित्य का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
9. एकांकी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाग-3

निम्न लिखित दो प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है। 1x10 = 10

11. हिंदी में संस्मरण विधा के विकास पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
13. कहानी के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु